ॐ

जुड़ने और जोड़ने के लिए

कान्यकुब्ज वाणी

2015

नेत्रदान-महादान

एक व्यक्ति के नेत्रदान से
दो ज्योतिहीन व्यक्तियों के जीवन में
ज्योति आ सकती है।

खण्ड काव्य ''शिल्पी'' का विमोचन

अध्यक्ष जी द्वारा मुख्य अतिथि को सम्मान

विमल शुक्ल को 'कान्यकुब्ज रत्न' सम्मान

वै० काली शंकर शुक्ला को 'कान्यकुब्ज रत्न' सम्मान

सांस्कृतिक कार्यक्रम

महासचिव की रिपोर्ट

पुरस्कृत छात्राएं

हाउसफुल

या कुन्देन्दु तुषाहार धवला या शुभ्रवस्त्रावृता।
या वीणावरदंडमडिंत करा या श्वेत पद्मासना।।
या ब्रह्माच्युत शंकरप्रभितिभिः देवै सदा वन्दिता।
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेष्य जाड्यापहा।।

न्यायमूर्ति दिनेश कुमार त्रिवेदी (अ.प्र.)
६/१६६ विनीत खन्ड, गोमती नगर
लखनऊ-२२६०१०

दिनांक १२ दिसम्बर २०१४

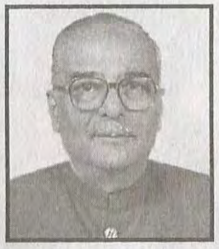

न्यायमूर्ति डी०के० त्रिवेदी
(अ०प्रा०)

सन्देश

आप सभी को होली की शुभ कामनाएँ।

जैसा कि आप सभी को मालूम है यह ब्राह्मणों की सबसे पुरानी संस्था है। अब यह संस्था कान्यकुब्ज के अलावा सभी ब्राह्मणों को सभी तरीके कीं सहायता देकर उनको मुख्य धारा से जोड़ना ही इसका मुख्य उद्देश्य है। संस्था की सदस्यता रु० ५००/- हो गई है। संस्था आजीवन सदस्यता द्वारा प्राप्त राशि के एफ डी के ब्याज एवं कार्यकारिणी के सदस्यों द्वारा दिये अनुदान से सारे कार्यक्रम संपादित करती है। इसके अलावा संस्था के पास कोई ठोस फंड नहीं है, जिसके आधार पर कार्य सुचारु रूप से चल सके।

होली मिलन उत्सव पर हम गरीब ब्राह्मण बच्चियों को साइकिल तथा वजीफा आदि देते आ रहे हैं जिसके कारण हमारे समाज की बच्चियाँ आगे चल कर मुख्य धारा से जुड़ रहीं हैं। परंतु अब बढ़ती मंहगाई से फंड के अभाव में संस्था का चलाना गड़बड़ा रहा है। यदि संस्था ही नहीं चल पायेगी तो उपरोक्त उद्देश्य की पूर्ति होना मुश्किल हो जाएगा। हम कोशिश करके वार्षिक पत्रिका भी छापते हैं जो होली समारोह में सभी को निःशुल्क दी जाती है व सभी आजीवन सदस्यों को रजिस्र्ड-पोस्ट द्वारा उनके पते पर भेजी जाती है। पत्रिका के आजीवन सदस्य बनने के लिए रु० ११००/- देते हैं।

सौहार्दपूर्ण वातावरण तथा उद्देश्य पूर्ति के लिए अब यह आवश्यक हो गया है कि इस पुरानी संस्था को आर्थिक मदद करके कार्यान्वित रखें ताकि हमारे समाज के वह लोग जो मुख्य धारा से पीछे रह गए हैं वह आगे आ सकें।

शुभकामनाओं सहित

डी०के० त्रिवेदी

Shri Ram Chandra Mission®

Registered Office : Shahjahanpur (U.P.)
President : Pujyashri P. Rajagopalachari

U.S. Bajpai
IPS (Retd.) Secretary

'Ashirvad', 68/11, Indraprastha, Stanley Road,
Allahabad (U.P.) - 211002
+ 91 93350 44440, 91 532 2250050
usbajpai@srcm.org

Dated : 18-09-2014

My dear and respected brother Dr. Shukla ji,

I am grateful to you and through you to all the office bearers and members of Kanyakubja Sabha for inviting me and thus offering me an opportunity to participate in the annual ceremonial function for the year 2014 organised in Rai Uma Bali Auditorium.

It is a matter of great effort and credit on the part of Kanyakubja Sabha and specially to you to co-ordinate and motivate the members of Kanyakubja society in bringing them together through such ceremonies and also for their awareness by publishing the annual periodical for the welfare of society.

AS desired, I am enclosing an article on **" SAHAJ MARG"** for publication in the annual magazine scheduled to be published by you.

With fond regards,

Yours Affectionately
U.S. Bajpai

◉ ◉ ◉

संपादकीय निवेदन

डा० डी० एस० शुक्ला
चिकित्सक, सर्जन

कान्यकुब्ज वाणी का षष्टम् अंक पाठकों को समर्पित है। इन ६ वर्षों में वाणी ने अपने ध्येय 'जुड़ने और जोड़ने के लिये' को काफी हद तक पूरा करने का प्रयास किया है। होली-मिलन के बाद भी 'वाणी' एक दूसरे की याद को ताज़ा रखती है तथा अगले वर्ष फिर कार्यक्रम में आने को प्रेरित करती है। इस पत्रिका का एलेक्ट्रोनिक अंक जो वेब-साइट पर उपलब्ध रहता है, ने अन्य प्रदेशों में निवसित कान्यकुब्जों को 'वाणी' तथा कान्यकुब्ज 'सभा' से जुड़ने को प्रोत्साहित किया। इसी निरंतरता में सुदूर दक्षिणी गोलार्ध स्थित देश आस्ट्रेलिया से भी वाणी व सभा के सदस्य बन चुके हैं। kanykubj.org वेबसाइट अन्य प्रान्तों के ब्राह्मण संगठनों की वेब-साइट से इंटर्लिंक्ड है। इस प्रकार पत्रिका और वेब-साइट के द्वारा सभा ने संवत् २०७२ या वर्ष २०१५ में वैश्विक स्तर प्राप्त कर लिया। इसके लिये सभा और वाणी के सभी सम्माननीय सदस्यों का सहयोग वंदनीय है।

३० अप्रैल को ऐन चुनाव के दिन हमारे 'वाणी-पुत्र' डा यू०डी० शुक्ल मतदान देने के तुरंत बाद ही मत-दान स्थल पर ही कुर्सी पर बैठे-बैठे 'ऋषि-दुर्लभ' मृत्यु को प्राप्त हुए। हम उनको 'स्मरण सुमन' अर्पित करते हैं।

'कान्यकुब्जवाणी' का मुख्य-पृष्ठ मात्र एक 'चित्र-दृश्य' न होकर एक संदेश होता है। इस वर्ष संदेश है 'नेत्र-दान'! हम अपने सदस्यों से अपेक्षा करते हैं कि वह इसे आत्मसात करें और इसके प्रसार-प्रचार में सहयोग दें।

इस वर्ष हम गांधी जी की दक्षिणी अफ्रीका से स्वदेश वापसी, अवधी के लोकप्रिय कवि 'रमई काका' की जन्म शताब्दी मना रहें हैं। मंगल यान के सफल प्रेषण तथा देश में एक नवीन राजनैतिक सक्रियता से उत्साहित हैं वहीं चक्रवात हुदहुद से नुकसान, ISIS का उदय, पेशावर, असम तथा पेरिस में आतंकी हमलों ने हमें दुःखी भी किया। इस अंक में हमने इनमें से कुछ घटनाओं पर जानकारी देने का प्रयास किया है।

यह पहला अवसर है कि 'वाणी' का अंक संवत्सर और बसन्तीय नवरात्रि के पहले दिन आपके हाथों में होगा। अतः होली और नव-वर्ष कि शुभकामनाओं के साथ भारतीय नव-वर्ष पर 'संपादक मण्डल' व सभा के सभी सदस्य शुभकामनायें देते हुए ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि आने वाले वर्ष-

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे संतु निरामया, सर्वे भद्राणि पश्यंतु, मा कश्चित दुःख भग्भवेत्

आपके फीड-बैक कि अभिलाषा में।

मो० ९४१५४६९५६१
१८/३७८ इन्दिरा नगर, लखनऊ
e-mail: dsumeshdp@rediffmail.com

◈ ◈ ◈

आवरण कथा

नेत्रदान महादान

डा० वी० के० मिश्रा

अपने नेत्रों को जीवित रहने दें, नेत्रदान कीजिए, ताकि आपकी आंखों से कोई देख सके। हमारे देश में लगभग एक प्रतिशत अन्धता कार्निया खराब हो जाने के कारण होती है, जो मृत शरीर से प्राप्त आंख की कार्निया के प्रत्यारोपण से दूर की जा सकती है।

कार्निया आंख की पुतली के ऊपर शीशे की तरह की एक परत होती है, यह आंख का बिम्ब बनाने वाला मुख्य अंग है, यदि कार्निया में धुंधलापन आता है अथवा खरोंचें पड़ जाती है तो नजर काफी कम या बिल्कुल खराब हो जाती है। कार्निया प्रायः चोट लगने, कुपोषण, संक्रमण, रसायनों से जल जाने अथवा जन्मजात विकारों से धुंधली, क्षतिग्रस्त अथवा सफेद हो जाती है।

सौभाग्य से कार्निया के क्षतिग्रस्त अथवा धुंधले या सफेद होने से जिस व्यक्ति की दृष्टि गयी है कार्नियल प्रत्यारोपण के चिकित्सीय चमत्कार के माध्यम से उसकी दृष्टि लौटाना सम्भव है। अब तक संतोषजनक सफल कार्निया का कोई कृत्रिम विकल्प नहीं है। किसी भी उम्र का कोई भी व्यक्ति चाहे वह स्त्री है या पुरुष, नेत्रदान कर सकता है। नज़र का चश्मा पहनने वाले मधुमेह, उच्च रक्तचाप और अन्य शारीरिक बीमारी जैसे- सांस का फूलना, क्षयरोग, हृदयरोग, गुर्दारोग आदि के रोगी भी नेत्रदान कर सकते है।

जिन रोगियों के मोतियाबिन्द, ग्लूकोमा अथवा आँख के अन्य कई आपरेशन हो चुके है, वह भी नेत्रदान कर सकते है तथा सभी अपने नेत्रदान की शपथ कर सकते हैं।

नेत्रदान करने वाले व्यक्ति के परिवार से कोई शुल्क नही लिया जाता है, नेत्रदाता की मृत्यु हो जाने पर नेत्र संग्रह केन्द्र उसके घर कार्निया प्राप्त करने हेतु एक टीम भेजता है। यह सुविधा जनहित में निःशुल्क है।

घर पर ही अथवा किसी ऐसे स्थान पर जहां मृतक का शव रखा है, नेत्रदान किया जा सकता है।

नेत्रदान कार्नियली रूप से अंधे दो अथवा इससे अधिक व्यक्तियों को दृष्टि दान प्रदान करता है। कभी भी किसी जीवित व्यक्ति की आंख दान हेतु नहीं निकाली जाती है। मृत्यु के पश्चात चार से छः घण्टे के बीच मृत व्यक्ति की कार्निया निकाल ली जानी चाहिए। अतः इस मामले में अपने नज़दीकी नेत्र बैंक कार्मिक को सूचना देने में ज़रा भी समय नष्ट नहीं करना चाहिए।

नेत्रदान हासिल कराने में आप महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते है, यदि आपके परिवार में किसी व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है, तो आप नज़दीक के नेत्र बैंक कर्मियों को सूचना देना न भूलें तथा व्यक्तिगत स्तर पर अथवा दूरभाष पर सम्पर्क करें। नेत्रदान हेतु यह आवश्यक नहीं है कि मृत व्यक्ति ने पूर्व में कोई नेत्रदान हेतु वचनबद्धता दी है अथवा नेत्रदान प्रतिज्ञा का कोई फार्म भरा है। बिना वचनबद्धता अथवा नेत्रदान प्रतिज्ञा फार्म के भी नेत्रदान किया जा सकता है, अपने पारिवारिक डाक्टर अथवा किसी डाक्टर से मृत्यु प्रमाण-पत्र अवश्य लें।

पंखों को बन्द कर दें। ए०सी० यदि है, तो चलने दें। बन्द पलकों के ऊपर गीली रूई अथवा कपड़ा रखे, इससे आंख की पुतली को नमीयुक्त बनाये रखने में सहायता मिलेगी। सिर के नीचे तकिया रख दें।

यदि आपके निकट सम्बन्धी या मित्रों के दायरे में किसी की मृत्यु हो जाती है, ऐसी स्थिति में परिवार को मृत व्यक्ति की आंख दान करने के लिये प्रेरित करने का प्रयास करना चाहिए।

नेत्र बैंक की टीम द्वारा चेहरे को बिगाड़े बिना बड़ी सावधानी से आंखों से केवल कार्निया ही निकाली जाती है तथा उसके स्थान पर कृत्रिम प्रोस्थेसिस रख दी जाती है, जिससे आंख या चेहरे में कोई परिवर्तन नज़र नहीं आता। दानदाता के शरीर से परीक्षण हेतु १० मिली० रक्त नमूने के रूप में लिया जाता है। कार्निया को सावधानीपूर्वक एम०के०मीडिया में रखकर आईस बाक्स में रखते हुए नेत्र बैंक तक पहुंचाया जाता है। कार्निया का परीक्षण नेत्रकर्मियों द्वारा किया जाता है, जिसे आवश्यक व्यक्तियों को कार्निया शल्य-चिकित्सा द्वारा प्रत्यारोपित कर दी जाती है। कार्निया प्रत्यारोपण हेतु सूचीबद्ध रोगियों को क्रमवार बुलाया जाता है।

आंखे पैसे से नहीं खरीदी जा सकती, यह तो एक ऐसा अनमोल उपहार है, जो केवल आप ही दे सकते हैं, दृष्टिदान का उपहार। आंख खरीदना व बेचना कानूनी अपराध है।

यदि रोगी को एड्स, हैपेटाइटिस बी-सी, रैबीज, सैप्टीसीमिया या कोई अन्य संक्रमण रोग है तो ऐसे रोगी के कार्निया का प्रत्यारोपण नही किया जा सकता।

अतः अनुरोध है कि नेत्रदान महादान यज्ञ में आप भी सहयोगी बनें। नेत्रदान के लिये लखनऊ में स्थित विभिन्न नेत्र बैंको से सम्पर्क कर सकते हैं :-

नेत्रशल्यक, पूर्व निदेशक एवं
राज्य कार्यक्रम अधिकारी पीसीबी)

महानगर नेत्र बैंक, *0522–2332525, 2335122* केजीएमयू नेत्र बैंक *0522–2258827* अथवा *1053, 1919* तथा *9450771991* पर सम्पर्क कर सकते हैं।

ड्राइंग रूम वार्ता

डा० डी० एस० शुक्ला

सत्तर और अस्सी के दशक तक राय बरेली शहर बहुत छोटा था पर आपसी सम्पर्क ज्यादा था। मेरे ड्राइंगरूम की गोष्ठियों की चर्चा मेरे खुद के परिवार के कई लोग जब एकत्र होते थे तो पिछली गोष्ठियों में आई बातों का रि-पोस्ट मार्टम या पुनर्विश्लेषण भी हुआ करता था। एक बार जब शाम को मैं अपने सुरजूपुर स्थित मूल पैत्रक निवास गया तो बातों ही बातों में ड्राइंग रूम में हुई चर्चाओं का ज़िक्र आया। मेरी छोटी बहन रोली भी बड़े ध्यान से सुन रही थी। (हमारे परिवार की बेटियाँ भी मनीषी हैं और साहित्यिक रूचि रखती है। उन्हें ऐसी गोष्ठियों में अपनी बात रखने और प्रश्न करने की पूरी स्वतंत्रता है।)

रोली ने कहा दादा मेरे मन में भी कुछ प्रश्न हैं। क्या मैं भी कुछ प्रश्न रख सकती हूँ। मेरे चाचा जी ने उसका उत्साह बढ़ाते हुए कहा "हाँ हाँ क्यों नहीं। तुम्हारे प्रश्न का उत्तर और तुम्हारी शंका का समाधान तो तुम्हारा दादा ही कर देगा।" रोली बोली कि दादा यह प्रश्न बहुत दिनों से मेर दिल में है पर किससे पूँछू यह सोच कर रह जाती थी। मैंने रोली को आश्वस्त करते कहा कि तुम बगैर संकोच पूछो।

रोली.... "हमारे यहाँ प्रातः स्मरणीय पंच कन्यायें हैं। मेरा प्रश्न उन्हीं से सम्बन्धित है।"

चाचा बोले अरे उन पंच कन्याओं के नाम तो बताओ।

रोली "यह कन्यायें है सीता, तारा, मन्दोदरी, अहिल्या और कुन्ती"

मैंने आने वाले प्रश्न का मन ही मन अनुमान लगाते हुए पूछा "तो तुम्हारा प्रश्न क्या है ?"

रोली " पहली बात इनमें से कोई कन्या ही नहीं है। और बात नम्बर दो कौन परिवार चाहेगा कि उसकी घर की पुत्रियाँ इनमें से किसी भी एक की तरह अपना जीवन व्यतीत करें।"

मैंने जिज्ञासा की "रोली यह प्रश्न कहीं तुमने पढ़ा है या स्वयं तुम्हारे दिमाग की उपज है?"

रोली.... "पंच कन्याओं का नाम तो मैंने किसी सदाचार की पुस्तक में देखा है और तभी से यह प्रश्न मेरे दिल में है। आज पापा की अनुमति से आप से

पूँछ रही हूँ। परन्तु आपने यह क्यों पूछा ? क्या मेरा प्रश्न उचित नहीं है ?" उसके स्वर में रोष था।

मैंने उसे समझाते हुए कहा नहीं तुम्हारा प्रश्न सर्वथा उचित है और सामयिक भी। सदियों से चली आ रही परम्पराओं को संस्कार मान कर, आँख मूँद कर अनुकरण करने से वह रूढ़ियाँ बन जाती हैं। इसलिये उन पर विचार करके और उनमें निहित शिक्षाओं को समझ कर अनुपालन किया जाना ही उचित है। तुम्हारे प्रश्न से मेरा ध्यान सन् १६६० की गर्मियों में "धर्मयुग" पत्रिका में छपे जैनेन्द्र कुमार जी के "समझ झरोखे बैठ के जग का मुजरा देख" के धारावाहिक श्रंखला की ओर चला गया था। वह प्रगतिशील समय माना जाता था। अपने धर्म की रीतियों और पौराणिक कथाओं को उछालना व उनका उपहास करने का चलन था। इस धारावाहिक में एक निन्नी नाम की लड़की जैनेन्द्र जी से प्रश्न करती थी और जैनेन्द्र जी "प्रगतिशील" तरीके से उनकी आलोचना करते हुए समाधान करते थे। एक अंक में निन्नी का भी यही प्रश्न था जो आज तुमने पूछा। सोचा शायद तुम वही लेख पढ़ कर यह प्रश्न कर रही हो।

रोली ने हँसते हुए कहा दादा सन् ६० तो पापा की शादी भी नही हुई थी। मैं कहाँ से पैदा होकर लेख पढ़ने और समझने योग्य हो सकती हूँ।

सभी हँसने लगे।

रोली ने पूछा क्या उस लेख में मेरी समस्या का समाधान बताया गया था।

मैं..." नहीं उसमें कोई समाधान न बात कर इसे हाइपोकेसी कह कर मज़ाक उड़ाया गया था। हांलाकि मैं न तब न ही आज तक उस चर्चा से सहमत नही हो पाया। इस प्रश्न का निराकरण कोई विवेकी विद्वान व्यक्ति ही कर सकता है। हाँ यह मैं अवश्य बता सकता हूँ कि कन्या का मतलब पवित्रता से लगाया जाता है न कि अविवाहित होना"

कुछ दिनों के बाद मैं जब श्री तिलक शुल्क से मिला तो मैंने उनसे भी यही प्रश्न किया। उन्होंने कहा कि यह प्रश्न सुन्दर है और अगली गोष्टी में इस पर चर्चा करेंगे। अगली गोष्ठी के लिये मैंने केवल तिलक जी को ही आमन्त्रित किया। सुरजूपुर में रोली को भी सूचित कर दिया।

नियत दिन चाचाजी सपरिवार रोली के साथ मेरे यहाँ आ गये। तिलक जी के आने पर चाचा ने रोली से कहा कि यह गोष्ठी तुम्हारे कारण हो रही है इसलिये आज का चाय और नाश्ता तुम्हारी भाभी नहीं बनायेगी। तुम्हें बनाना होगा। तभी तुम्हारे प्रश्न का उत्तर दिया जायेगा। सभी हँसने लगे। रोली किचन

में चली गई। तिलक जी ने चाचा से कहा कि बिटिया का प्रश्न इतना सरल भी नहीं है। स्वयं मनन कर तथा अपने कुछ मित्रों से विमर्श करके मैं निष्कर्ष निकाल पाया हूँ। यह कितना उचित है इसका निर्णय बड़े होने के नाते आपको ही करना है। चाचा ने कहा ठीक है रोली आये तो चर्चा आरम्भ की जाय।

रोली से उन्मुख होकर तिलक जी ने कहा कि बेटी यह पाँचों कन्यायें महान सती भी कही गई हैं। रोली ने कहा कि हाँ मैं जानती हूँ इसीलिये दिन में यह प्रश्न उठा।

तिलक..." और सती किसे कहते हैं ?

रोली "जो पत्नियाँ अपने पति की मृत्यु पर पति के साथ उसी चिता पर बैठकर आत्माहुति देती हैं उन्हें ही सती कहते हैं।"

तिलक जी "देवी पार्वती के पहले भगवान शंकर की पत्नी का नाम सती था। वह दक्ष प्रजापति के पुत्री थी। शिव जी के देवी सती से विमुख होने की तथा उस ग्लानि और शिव की अवमानना से त्रसित होकर उनकी अग्नि में अपने प्राण त्याग देने की कथा तो "रामचति मानस" तुमने पढ़ी ही होगी। उसी के बाद से देवी सती पतिव्रता की पराकाष्ठा एवं पर्याय बन गई। तब से किसी भी विवाहिता के लिये "सती संज्ञा" न होकर विशेषण बन गई।

पौराणिक काल में जनसंख्या कम होने की वजह से नारी का "जननी रूप" वन्दनीय माना जाने लगा। वन्ध्या य निपूती होना नारीत्व का सबसे बड़ा अभिशाप माना जाता था। वंश चलाने के लिये उत्तराधिकारी तथा तर्पण द्वारा पिता को मोक्ष दिलाने के लिये पुत्र उपलब्ध कराने में केवल नारी ही सक्षम थी। इसीलिये वह पूज्यनीय भी थी।

रोली ने कुछ हताश स्वर में टोका "परन्तु तिलक जी इस वृतांत का मेरा प्रश्न से क्या ताल्लुक। मेरा प्रश्न अभी भी वहीं का वहीं है।"

तिलक जी ने मुस्कराते हुये कहने लगे"बिटिया यह प्रश्न अगर डाक्टर साहब या चाचा जी ने किया होता तो मुझे उत्तर देने में बहुत आसानी होती। परन्तु तुम्हें समझाने के लिये शब्दों का चयन बहुत सोच समझ के करना पड़ रहा है।"

चाचा जी ने भी रोली के धीरज रखने की हिदायत दी।

कुछ देर बाद तिलक जी सोचते हुए बोले "राजा पांडु ऐसे कुछ व्यक्ति जो संतान पैदा करने में अक्षम थे ऐसे लोगों की पत्नियों को पर-पुरूष से नियोग द्वारा संतानोत्पत्ति का प्रावधान किया गया। स्त्रियों को यह विधान केवल पुत्र

प्राप्ति की ही अनुमति देता था। अन्य सुख की कल्पना भी वर्जित थी। यह एक कठिन तपस्या थी। कुन्ती इस कसौटी पर खरी उतरी। इसलिये वह प्रातः स्मरणीय है।

अहिल्या वलात् दूषित हुई थी। उनका उस कृत्य में कोई दोष नहीं था। त्यक्त होने के बाद भी मन से पवित्र थीं और इतने अपमान के बाद भी पति को सपर्तित रहीं और इसीलिये वह वन्द्य मानी गई। श्रीराम ने भी यही व्यवस्था की।

रोली ने सहमत होते हुए दूसरा प्रश्न किया "परन्तु तारा और मन्दोदरी का क्या। उन्होंने तो राज भोग की लालस में अपने पति के हत्यारों के साथ ब्याह रचा लिया।"

तिलक जी "तुमने सुना होगा कि वर्तमान भविष्य को बदलने की क्षमता रखता है परन्तु भूत (जो बीत गया) को कोई प्रभावित नहीं कर सकता"

रोली ने स्वीकृति में सिर हिलाया।

तिलक "परन्तु तुम्हारे इस कथन से मुझे लगता है कि वर्तमान भी भूत को प्रभावित करता है। बेटा, तुम आज की मान्यताओं पर हज़ारों वर्ष पुरानी घटना को तोल रही हो। यह अन्याय है। उन घटनाओं का परीक्षण उसी समय की मान्यताओं के अनुरूप करो। उस समय किष्किन्धा और लंका में विजय पूर्ण तब ही मानी जाती थी जब विजेता पटरानी का वरण कर ले। शायद उन सभ्यताओं में पटरानी ही राज्य स्वामिनी होती थी और राजा मात्र राज्य का रक्षक होता था। इसीलिये इन दोनों नारियों को अपने पति-हंता का वरण करना पड़ा। परन्तु इन दोनों ने वरण के बाद अपने दूसरे पति के साथ भी पत्नी धर्म पूरी निष्ठा से निभाया। गीता में भी कहा गया है। कि कर्तव्य कर्म चाहे कैसा भी हो, करने में पाप नहीं होता।"

..... और अंत में देवी सीता..... रोली बीच में ही बोल पड़ी तिलक जी सीता के बारे में कुछ मत कहिये वह आज भी एक आदर्श का कीर्तिमान हैं। हालांकि उन जैसा कंटकमय जीवन कोई भी पिता अपनी पुत्री के लिये नहीं चाहेगा, परन्तु कंटकीर्ण पथ पर अविचलित चलने वाले ही लोग महान कहलाते हैं। मेरा संशय दूर करने के लिये आपका बहुत बहुत धन्यवाद, यह कर रोली ने तिलक जी ले श्रद्धापूर्वक प्रणाम किया।

तिलक जी हँसते हुए बोले "चलो सीता मइया के बारे में तुम्हारी इतनी श्रद्धा हाओ। मुझे प्रसन्नता हुई। पर मैं बताना चाहूँगा कि सीता का नाम पाँच-कन्याओं में नहीं हैं। पाँचवी कन्या है 'द्रौपदी'। किन राजनीतिक

परिस्थितियों या विवशताओं में उसे पाँच पतियों का वरन करना पड़ा, उन पर मैं नहीं जाऊंगा। पर यह ध्रुव सत्य है कि वह दी हुई अवधि में मात्र एक पांडव की पत्नी बन कर रहती थी। उसने इस मर्यादा का उलंघन जीवन पर्यंत, यहाँ तक कि स्वप्न में भी नहीं किया। यह भी एक बड़ी तपस्या है। अतः द्रौपदी भी प्रातः स्मरणीय कहलाई।"

यह कह कर तिलक जी आशीर्वाद देकर चलने के लिए उठ खड़े हुए। हम सब उन्हें विदा करने को उठे।

चाचा ने अंत में कहा "आज की वार्ता में एक संदेश है कि इन कथाओं का विश्लेषण करने के लिए समुचित अध्ययन और ज्ञान की आवश्यकता है। अज्ञानी तो केवल आलोचना ही कर सकता है।".....ॐ.....

मेरे बाप का घर है

निदेशालय की पोस्टिंग के दौरान सरकारी मुकदमे की पैरवी के सिलसिले में मुझे इलाहाबाद उच्च न्यायालय जाना पड़ा। जुलाई का महीना गर्मी पूरी शिद्दत से पड़ रही थी। मेरे साथ इलाहाबाद के सहायक निदेशक मलेरिया डा० यू०डी० शुक्ल जोकि मेरे चाचा भी हैं, मेरे साथ थे। हम दोनों को बहुत प्यास लग रही थी। एक सहायक रजिस्ट्रार के आफिस में हम लोग इस आशा से घुसे कि पानी कुछ व्यवस्था हो। अर्दली को अपना परिचय दिया उसने साहेब के फ्रिज से पानी दिया। हम लोग पानी पी ही रहे थे कि सहायक रजिस्ट्रार साहेब आ गये। हम लोग बड़े संकोच में पड़ गये। फिर भी उन्हें अपना परिचय दिया और अनाधिकार आफिस में बैठने के लिए क्षमा मांगी। मेरे चाचा जी का नाम सुन कर उन्होंने पूछा कि क्या आप लखनऊ बेंच में रजिस्ट्रार रहे यू० डी० शुक्ल साहब के रिश्तेदार हैं? (मेरे पिता श्री यू डी शुक्ला जो १९८८ में दिवंगत हो चुके थे) चाचा जी से हम लोगों का नया परिचय जानने के बाद वह मुझसे मुखातिब होकर बोले" डाक्टर साहब एक शेर है-

"वक़्ते कयामत जन्नत में बेखौफ घुसेंगे,
आदम वहाँ से आए थे मेरे बाप का घर है"

आपके पिता को मैं भली भांति जानता हूँ। वह भी रजिस्ट्रार रह चुके हैं। यह चैंबर आपके लिए भी वैसे ही "बाप का घर" है जैसे जन्नत आदम के लिए। आपको यहाँ बैठने के लिए या पानी पीने के लिए किसी की इजाज़त की ज़रूरत नहीं है"।

प्रोफेशनल रिश्तों में ऐसी गर्मजोशी बहुत कम पायी जाती है। हम लोग उनके कायल हो चुके थे। मैंने उन्हें चलते समय धन्यवाद देते हुए कहा कि सर आपकी आत्मीयता और इतनी गर्मी मे ठंडा पानी मिलने के बाद वाकई में आपका आफिस मुझे जन्नत ही महसूस हो रहा है। उन्होनें मोस्ट वेल्कम कहा। हम लोग उनकी सदाशयता को दिल में बसाये वापस आ गये।

शंकर गेस्ट हाउस

एसी. एवं नान ए.सी. कमरे उपलब्ध हैं

प्लाट नं० 5, सरस्वती पुरम, निकट पी.जी. आई.
रायबरेली रोड, लखनऊ

सुशील दीक्षित
योगेश कुमार
पंकज

सोने की बिल्ली

Felicide

तिलक शुक्ल
रायबरेली

शहर के बड़े अस्पताल के सर्जन की पत्नी को पहला बेटा? होने को था। पर बेटा ही क्यों बेटी क्यों नहीं? डॉ० साहब नियमित रूप से पूरी चैत्र और शारदीय नव-रात्रि भर दुर्गा पाठ करते थे। १२वें अध्याय में देवी का आश्वासन है "सर्व बाधा विनिर्मुक्तो धन-धान्य सुतान्वितः, मनुष्यो मत्प्रासदेन भविष्यति नहिं संशयः"- इस पर डॉ० साहब का पूरा विश्वास था कि सुत ही होगा।

शहर में कई बड़े सरकारी अस्पताल थे। पर प्राइवेट अस्पताल का ग्लैमर ही और होता है। अतः डॉ० साहब ने एक नामचीन लेडी डॉ० के यहाँ डिलिवरी कराने का निश्चय किया। पर सभी चीजें वैसी नहीं हो पाती जैसा हम चाहते हैं। ऐसा ही सर्जन साहब के साथ हुआ। डिलिवरी के संभावित तिथि के पहले ही ट्रीटिंग लेडी डॉ० का इंतकाल हो गया, डॉ० साहेब का भी तबादला उसी शहर में दूसरे अस्पताल में हो गया। दूसरा अस्पताल रेफेरल अस्पताल (सारे प्रांत के बीमा अस्पतालों से केस उसी अस्पताल में रिफर होते थे) था, इसलिए डॉ० साहब अपने काम में व्यस्त हो गए, और शिफ्टिंग की सारी जिम्मेदारी बिचारी उनकी गर्भवती पत्नी पर आन पड़ी। इस कार्य में पत्नी के मायके वाले बहुत काम आए। यह अस्पताल मेडिकल कालेज के पास था। इसी कालेज से डा साहब भी पढ़े थे, काफी जान पहचान थी अतः डिलिवरी वहीं कराने का निर्णय किया। गाइनी विभाग में पहुँच कर तो डॉ० साहब का दिल गार्डेन-गार्डेन हो गया। उनकी पढ़ाई स्टूडेंट्स हाउस सर्जन थीं, जिन डाक्टरों को उन्होंने चाकू पकड़ना सिखाया, घाव सिलना सिखाया- आज सीनियर डाक्टर हो चुकी थीं और कंसल्टेंट की निगरानी में उन्हीं को डिलीवेरी करानी थी। इतने नमस्कार, कि पत्नी भी खुश हो गई। हाँ, नमस्कार के साथ लेडी डाक्टरों की मुस्कुराहट पत्नी को उतनी अच्छी नहीं लगी।

प्राइमरी चेक-अप हो गया। एक्स्पेक्टेड डेट के पहले ही वी०आई०पी० 'दीपिका' वार्ड भी एलाट हो गया। इसकी चाभी परमानेंटली लेबर रूम में रख दी गई। जिससे ज़रूरत पड़ने पर शीघ्र उपलब्ध हो सके। खैर लेबर पेन्स शुरू हुए। पत्नी सीधे लेबर-रूम पहुंचा दी गई। डाक्टरनियां मुस्तैदी से देख भाल करने लगीं। डाक्टर साहब दीपिका वार्ड में सामान रखवाने पहुंचे। वार्ड खोला गया।

पहले से ही साफ-सुथरा कर रखा गया था। पर यह क्या...? लाइट जलते एक बड़ी काली बिल्ली बिजली की फुर्ती से खिड़की के बाहर भाग गई। डॉ० साहब का दिल धक्क से हुआ। विचलित हो कर उन्होंने सास जी से कहा "यह तो अच्छा नहीं हुआ।"

सास खुले दिमाग की थीं। वह अंधविश्वास पर यकीन नहीं करतीं थीं, बोलीं "भईया यह जीव-जन्तु अस्पताल में मरीजों के दिये खाने पर ही पलते हैं। बंद कमरे में तो बिल्ली आसरा ले ही लेती है। आप काली बिल्ली का वहम मत पालिए।"

डा० साहब सास से तो कुछ नहीं बोले पर वह वार्ड में बिल्ली मिलने से हिल गए थे......

जनाने अस्पताल में साफ-सफाई के लिए काफी स्टाफ तैनात रहता है। खास कर लेबर-रूम में। रक्त से सने कपड़े, रुई व प्लैसेन्टा (खेड़ी, नारा-झोरा या एक मांस का आवरण जिसमें गर्भस्थ शिशु सुरक्षित रहता है, और प्रसव में बच्चे के साथ बाहर आ जाता है) आदि जिसको कायदे से जमीन में गाड़ दिया जाना चाहिए कर्मचारी लापरवाही से इधर-उधर डाल देते हैं। अस्पताल में बेटोक घूमती बिल्लियाँ इन्हें खा कर तगड़ी तो हो ही जाती हैं साथ ही 'लागुन' हो जाती हैं। नवजात शिशु के शरीर से भी प्लैसेन्टा की खुशबू आती रहती है। कभी कभी अकेले शिशु को पाकर उसे प्लैसेन्टा समझ कर शिशु पर भी अटैक कर देतीं हैं। पिछले महीने ही कई नवजात इसी तरह बिल्ली द्वारा घायल किए जा चुके थे।

बच्चे के होने के पहले इलाजकत्री लेडी डाक्टर की मृत्यु, ट्रान्सफर और अब बिल्ली के आतंक के बीच काली बिल्ली का कमरे में आवास...! डाक्टर साहब का परेशान होना उचित भी था। डॉ० साहब की परेशानियों का अंत नहीं था। एक कनिष्क लेडी डाक्टर ने आकर बताया कि ओ० टी० (आपरेशन के कमरे) में आक्सीजन नहीं है। आपरेशन की स्थिति में आक्सीजन की ज़रूरत तो पड़ेगी ही। डॉ० साहब के ताल्लुकात काम आए, दिल वाले अस्पताल से ऑक्सीजन मिल गई।

जच्चा-बच्चा अस्पताल में आपको लगभग साहित्य में वर्णित सभी रस दिख जाएँगे, जैसे - जब मरीज़ अस्पताल पहुंचता है तो सभी के दिल में

उत्सुकता और उत्साह होता है। प्रसव पीड़ा के साथ यह चिंता से उत्पन्न भक्ति और करुणा का रूप ले लेता है जो, प्रसव उपरान्त वात्सल्य और शांत रस में परिवर्तित हो जाता है। माँ के शरीर से एक और नहीं जान दुनियाँ में आना कम विस्मयकारी नहीं है। कभी कर्मचारियों या स्टाफ की कड़ुवी जबान की वजह से वीर अथवा रौद्र रस प्रकट होता है तो कभी अत्यधिक मरीजों की संख्या से अथवा सफाई की कमी से दुर्गंध, गंदगी की वजह से वीभत्स वातावरण भी परिलक्षित हो जाता है।

डा० साहब के केस में करुण और भक्ति रस की स्टेज चल रही थी, कि लेबर रूम से उनकी पत्नी का बुलावा आया। जब वह ड्यूटी पर होते और उन्हें विशेषज्ञ के रूप में प्रसूति-गृह में काल किया जाता था तब वह बेझिझक लेबर रूम में चले जाते थे, परंतु आज वह चिकित्सक कि हैसियत से अलग स्थिति में होने की वजह से पहले अन्य मरीजाओं की पर्दे की व्यवस्था के बाद ही लेबर रूम में गए। पत्नी ने आँखों में आँसू भर कर कहा, "बहुत पीड़ा है। ज़रा डाक्टरों से बात करो, मेरे बाद आई महिलाओं की डिलिवरी यह लोग निपटाती जा रहीं हैं केवल मेरे केस में देर लगा रहीं हैं।"

पास ही खड़ी डाक्टर हँसते हुए बोली "भाभी जी उन सभी महिलाओं का बच्चे पैदा करने के अनुभव आपसे बहुत ज़्यादा है। कोई चौथा और कोई पाँचवाँ बच्चा जन रही है। आप भी भगवान न करे चौथा बच्चे के लिए आओगी तो आपकी भी ऐसी ही क्विक सर्विस होगी।"

करुण रस का वातावरण हास्य के पुट से हल्का गया।

डा० की स्थिति बड़ी अजीब होती है। सभी लोग पहले से ही कह रहे थे की वी०आई०पी० होने से बेवजह आपरेशन होने की संभावना ज़्यादा होती है। घर वालों ने भी कह रखा था, "भईया देखना कहीं ऐसे ही सर्जरी न हो जाऐं", आदि।

बहरहाल हुआ वही जिसका डर था। बच्चा दुनियाँ में आने को तैयार नहीं था। नीचे आने के बजाय बार बार ऊपर लौट जाता था। डाक्टरों ने कहा हो सकता है (तब अल्ट्रासाउंड की सुविधा नहीं थी) बच्चे के गले में नाल का फंदा पड़ा हो इसलिए नीचे नहीं आ पा रहा है। डाक्टरों का अनुभव-जन्य अनुमान ठीक निकला। आपरेशन करना पड़ा। डा० साहब की एक सहयोगी बेहोशी की

डाक्टर थी और इस संभावना के पूर्वानुमान कर वह लेबर रूम में पहले से ही मौजूद थी। आपरेशन हुआ। पुत्र-रत्न की प्राप्ति हुई। सब प्रसन्न थे। सिवा पिता के। सब ने डा० से उनकी अन्यमनस्कता का कारण पूछा। कुछ मित्रों ने मसखरी करी- बच्चे की सूरत पिता से नहीं मिलती इसलिए डा० साहब का दिल बैठ गया। कुछ देर शांत रहने के बाद उन्होंने बात शेयर की, और बिल्ली के आतंक के बारे में सबको अवगत कराने के बाद वह बोले "अब तो बच्चे को वार्ड में ले जाना होगा, जहां आतंकी बिल्ली पहले से ही डेरा डाले है। इस समय कोई और वार्ड खाली नहीं है। मजबूरी है।"

डा० साहब की सास व पत्नी की बड़ी बहन ने आश्वासन दिलाया कि वह बच्चे का रातो-दिन ध्यान रखेंगी। भगवान का चाहा सब ठीक होगा। डा० साहब कृतज्ञता से भर गए।

तब प्राइवेट वार्ड में भी कूलर या ए०सी० नहीं होते थे। जून की उमस भरी गर्मी, कमरे में दो पलंग। एक पर प्रसूता व दूसरे ढाई फिट के पलंग पर बच्चे की नानी और मौसी बच्चे को बीच में रख कर बारी-बारी से सोती जागती रहती थीं। डा० साहब को पत्नी के पूर्व निर्देश थे कि आपको मेरे साथ ही रहना होगा। पति के रहने से पत्नी ज़्यादा आश्वस्त रहती है। पर रात में डा० साहब लेटें कहाँ? डाक्टर भईया क्या जमीन में सोएँगे? सभी चिंतित थे। इस प्रश्न के आते ही पत्नी करवट लेकर सो गई या सोने का नाटक करने लगी। प्रश्न वहीं का वहीं रहा। तभी लेडी-डाक्टरों का झुंड नाइट राउंड पर आया। सभी एक स्वर से बोलीं "अरे इनको सोने की क्या ज़रूरत है। हम लोग यहीं बरामदे में बैठ कर ड्यूटी करेंगे, गप्प लगाएंगे, चाय-पानी करेंगे, जब काल आएगी तो जाकर देख आएंगे। ड्यूटी चाहे यहाँ बैठ कर करें या ड्यूटी-रूम में लेट कर। रात बात करते कट जाएगी। क्यों डाक्टर साहब अभी कुछ साल पहले तक हमलोग इसी तरह तो ड्यूटी पर रात गुज़ार देते थे हैं ना...?"

यह प्रस्ताव कान में पड़ते ही पत्नी कुनमुनाई...। डाक्टर साहब को मजबूरी में हाँ कहना पड़ा- बहुत दिनों के बाद एक बार फिर रात की ड्यूटी हंसी ठहाकों में कब बीत गई पता ही नहीं चला।

पर अगले दिन सुबह भयानक गर्मी से भी ज़्यादा श्रीमती जी का पारा गरम था। एक तो सद्य-प्रसूता पत्नी, वह भी जिसने बेटा जना हो और मायके वाले साथ हों- कितना **fatal combination** (घातक-संयोग) ! डा० साहब नित्य

क्रिया का बहाना करके ही अपने को बचा पाये।

अगली रात डा० साहब ने खुद ही फर्श पर चटाई बिछा कर लेटना तय किया और डाक्टरों के नाइट राउंड के पहले लेट कर सोने का नाटक करने लगे। डाक्टरनियाँ आईं। डा० साहब को नीचे लेटा देख कर बोलीं "च्च-च्च-च्च डा० साहब कैसे जमीन पर लेटे हैं"

दूसरी ने कहा "कल हम लोगों ने रात भर इनको सोने नहीं दिया इस कारण आज बिचारे को ज़मीन पर ही नींद आ गई।"

तीसरी "अरे तो घर ही चले जाते।"

कमरे से बाहर निकलते चौथी डाक्टर जो शादी-शुदा होने के वजह से *experienced* या अनुभवी थी, की आवाज सुनाई दी "अरे बड़े-बड़े शादी के बाद जोरू के गुला......." और जोर की हंसी।

डा० साहब ने ज़मीन पर लेटे लेटे इतनी जोर से आँखें मींचीं कि आगे के शब्द दिमाग तक नहीं पहुँच सके।

डा० साहब ने अगले दिन चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारियों से बिल्ली मरवाने की बात की। सबने कहा कोई बिल्ली मारने को तैयार नहीं होगा। कहते हैं बिल्ली मारने से बड़ा पाप लगता है। प्रायश्चित में बिल्ली के वजन के बराबर सोने की बिल्ली दान देनी पड़ती है। इतना सोना कहाँ से आए?

अथारिटीज से बिल्ली आतंक या **cat menace** की बात की। वहाँ पता चला कि नगरपालिका ने कहा कि उनके यहाँ कुत्ता पकड़ने का दस्ता तो है, पर बिल्ली पकड़ने की कोई व्यवस्था नहीं है। वहाँ भी शायद 'सोने की बिल्ली दान' ही अड़चन रही होगी।

मरता क्या न करता। मौसी और नानी बीच लेटे शिशु की बारी-बारी से जाग कर पहरेदारी करती रहीं, डा० साहब ज़मीन पर बिस्तरनशीन रहे, लेडी डाक्टर च्च-च्च-च्च करती रहीं। जच्चा और बच्चा दोनों ही सकुशल घर आ गए।

घर पर पुत्रोत्सव के धमाल के बाद जब डा० साहब बेटे को टीका-करण के लिए अस्पताल ले गए तो विशेष कर बिल्ली के आतंक के बारे में जानने हेतु महिला विंग गए। उन्होंने पूछा की अब उस बिल्ली का आतंक कैसा है? सिस्टर व डाक्टरों ने बताया की वह तो आपके जाने के एक हफ्ते के अंदर ही मार दी गई।

डा० साहब को सुखद आश्चर्य हुआ।

उन्होंने अपनी समझ से बड़ा अच्छा मजाक किया "अरे तो सोने की बिल्ली के दान का क्या हुआ ? मुझे क्यों नहीं बुलाया, मुझसे अच्छा पंडित आपको कहाँ मिलता?"

सिस्टर "एक मरीज जिसको १४ साल के इंतजार के बाद बच्चा हुआ था, के रिश्तेदार ने बिल्ली को मारने हेतु रु० २००=०० के इनाम की घोषणा की (उस समय यह बहुत बड़ी रकम मानी जाती थी। एक डा० की शुरुआती सैलरी ३००=०० होती थी)। इनाम की रकम सुन कर दो घंटे के अंदर ही सभी कर्मचारियो ने घेर कर बिल्ली को मार दिया।"

डा० साहब "वाह क्या नायाब तरीका निकाला ! इनाम किस कर्मचारी को मिला?"

सिस्टर "सभी कर्मचारी आपस में लड़ने लगे कि बिल्ली को मैंने मारा। नौबत मारपीट तक पहुँच गई। जब तक वह फैसला हो कि बिल्ली को किसने मारा तब तक मरीज मय बच्चे के अस्पताल से जा चुका था।

इस प्रकार बिल्ली का आतंक बगैर इनाम या बगैर 'सोने की बिल्ली' दान के ही समाप्त हो गया।

खुश रहो

छोटी सी जिंदगी है, हर बात में खुश रहो।
जो पास में न हो, उनकी आवाज में खुश रहो।
कोई रूठा हो तुमसे, उसके इस अंदाज में खुश रहो।
जो लौट के न आने वाले हैं, उन लम्हों की याद में खुश रहो।
कल किसने देखा है, अपने आज में खुश रहो।
खुशियों का इंजर किस लिए, दूसरों की मुस्कान में खुश रहो।
क्यों तड़पते हो हर पल, किसी के साथ को,
कभी तो अपने आप में खुश रहो।
छोटी सी जिंदगी है, हर हाल में खुश रहो।

शुभकामनाओं सहित :

आयुर्वेद : आयु यानि जीवन, वेद यानि ज्ञान

ममता आयुर्वेदिक एजेन्सीज

एस 6/132, आजाद मार्केट, एच.ए.एल. गेट के सामने, इन्दिरा नगर, लखनऊ फोन 0522-2344328

उच्च कोटि की आयुर्वेदिक एवम यूनानी औषधियों हेतु पधारें।

वैद्यों के नुस्खे बनाने की सुविधा उपलब्ध है।

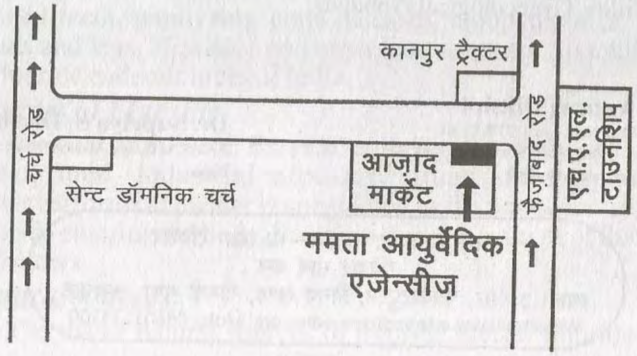

आयुर्वेदिक रेमिडीज

क्लीनिक एवं पंचकर्म सेन्टर

Specialties: Keraleeya Panchakarma, Marma Therapy, Therapeutic Yoga, Leech therapy, Acupuncture, Laser Acupuncture, Moxabusation, TENS Therapy, Acupressure, Ear Acupressure, Ear Acupuncture, Cupping.

Major Ailments Treated: IBS, Slip Disc, Paralysis,Asthma, Diabetes, Leukemia, Cancer Palliative Care, Hepatitis, Uterine Fibroid & Cyst, Cancer, HIV/AIDS, Kidney Stones, Geriatric (OA, Parkinson etc), Childhood Diseases (ADHD Etc), Female & Male Infertility, Gynecological Problems.

Dr. Anurag Dikshit
Bsc, BAMS, M.D. Ayu, CCYP, CCKP, PGDHA, QMHC, PhD (Sch), C.ACU.-MOXI., Consultant Sahara Hospital

Dr. Supriya S. Dikshit
BAMS, M.D. Ayu, Medical Officer, Unnao

समयः 5–8 सायं एवं 9–12 प्रातः रविवार
रविवार सायं बन्द
स्थानः 3/97, पत्रकारपुरम, विनय खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ
Website: www.ayurvedicremedies.org Mob.: 08601124100

Fluoride Pollution A severe Threat to Mankind

Dr. Sandeep Bajpai

Water, the most precious natural resource that exixts on the planet, is under constantly increasing intimidation from abundant contaminants. Therefore, inadequate access to safe drinking water has become the most challenging environmental problem for all forms of life on earth. Groundwater constitutes 97% of global freshwater and in many regions, groundwater sources are the single largest supply for serving drinking water. It is estimated that in India, 80% of domestic needs in rural areas and 50% in urban areas are met by ground water which is under threat from problems due to excess fluoride, arsenic, iron, nitrate and salinity. Most of the critical quality-related problems of ground water in India are cited as 'geogenic' largely due to major inorganic pollutants like fluoride and arsenic. While arsenic problem prevails only in 3136 habitations, fluoride is endemic in 36, 988 habitations, depicting its dominance. The intensity of natural fluoride in groundwater ranges from 0.5 to 48 ppm or even more.

Presence of even low levels of fluoride in groundwater coupled with malnutrition turns disastrous, especially for children in rural and semi urban areas of the country. Over the past seven decades, the prevalence and severity of fluoresis has increased quite radically in India, reaching almost epidemic proportions. At present, 20 out of 35 states and Union Territories are under fluoride attack, while more affected areas continue to come to light. Since fluoride in drinking water does not change its colour, smell or taste, normally there is no way to detect it unless tested. People with stained teeth, paralyzing bone diseases, stooped backs, crooked hands and legs, blindness and other handicaps are a common sight in fluoride endemic areas of India.

Sources of Fluoride

Various sources of fluoride entering the body are drinking water, food, industrial exposure, drugs and cosmetics etc. However, drinking water is considered as the major contribution to fluoride entering the body. Based on this, the sources of fluoride are as follows:

Natural sources:

The major natural sources of fluoride are the fluoride bearing

rocks from which it gets leached out and contaminates the water. fluorides occur in three forms, fluorospar or calcium fluoride (CaF_2), Apatite or rock phosphate [$Ca_3F(PO_4)_3$] and cryolite (Na_3AlF_6) Concentration of fluorides is five times higher in granite than in basal rock areas. Volcanoes are the second major natural source through the release of gases with hydrogen fluoride (HF) into the atmosphere.

Anthropogenic sources:

Various industries involving the manufacture of phosphate fertilizers, aluminum extraction, fluorinated hydrocarbons (refrigerants, aerosol propellants etc.), fluorinated plastics (polytetrafluoroethylene etc.), petroleum refining and hydrogen fluoride manufacturing units are mainly responsible for airborne fluoride. Effluents from electroplating operations during steel production contain fluoride, attributable to pickling of stainless steel with hydrofluoric acid. Wet scrubbing of emission from furnace in which aluminum is separated from bauxite ore in the presence of fluoride bearing minerals. Cryolite results in the fluoride discharge in the waste stream in the removal of phosphate from fluorophosphates and fluoroapatitie during the production of fertilizers. Besides these sources, glass, brick and ceramic manufacture, glue and adhesive production also produce fluoride rich effluents. Wide use of fluoride containing pesticides as well as fluoridation of drinking water supplies increase in level of fluoride locally.

Other sources:

Fluoride is entering human food and beverage chain in increasing amounts through the consumption of tea, wheat, spinach, cabbage, carrots and other India foods. The fluoride in these items presumably results from the use of soil or fertilizer-borne fluoridated water for food and beverage processing. The other foods that have high fluoride concentration include fish.

Types of Fluorosis :

Dental Fluorosis :

Dental fluorosis mainly involves enamel but severe intoxifications may effect dentine as well as pulp. The natural shine or luster of the teeth disappears. Mottling of teeth is one of the earliest and most recognizable features of dental fluorosis. Pitting and chipping are other marks of fluorosis. Brown or Black pigments get deposited on defected enamel and once established tend to remain permanently.

Skeletal Fluorosis:

Skeletal fluorosis affects the bones and skeleton of the body. The joints which are normally affected by skeletal fluorosis are neck, hip, shoulder and knee that makes it difficult to walk and movements are painful. Skeletal fluorosis also include restriction of the spine movements. The stiffness increases steadily until the entire spine becomes one continuous column of bone manifesting a condition referred to as 'poker back'.

Non-skeletal/Viscreral Fluorosis:

Non-Skeletal fluorosis referred as the fluorosis of soft tissues, such as liver, kidney, muscles, gonads and other soft tissues.

Global Scenario:

Fluorosis is endemic in many parts of the world particularly in mid-latitude regions and its severe form, skeletal fluorosis have been reported world wide. As per the latest status, fluorosis is an endemic public health problem in at least 25 nations around globe. Ground water with high fluoride occurs in large parts of Africa, China, the Middle East southern Asia (India and Sri Lanka). One of the best known high fluoride belts on land extends along the East African Rift from Eritrea to Malawi. There is another belt from Turkey through Iraq, Iran, Afgahanistan, India, northern Thailand and China.

The Indian Scenario:

India possesses about 16% of the world's population but with just 4% of its water resources. Though the surface water in India is scarce and groundwater is deep and difficult to reach, almost 90% of the drinking water needs are met from groundwater only. Even in urban areas, only 70% of people have access to basic sanitation services and 63% have tapped water within premises. Thus, the provision of reliable and potable water supply is still a challenge for most of the cities and towns in India, constituting a serious public health risk. The technological advances made in irrigation and drinking water sector developed almost simultaneously in India. While the technology has allowed drinking water to be pumped from the ground through bore wells and hand pumps, it also provided irrigation sector the means for unfettered pumping of ground water through millions of irrigation bore wells, leading to imbalance in natural ecological system resulting scarcity and pollution of ground water. This unregulated ground water tapping intensified the failure of drinking water sources and mainly paved the way for geogenic pollutants like fluoride in ground water. In addition, geological processes, weathering of fluoride bearing minerals in soil under different hydro-geological settings also contributed to higher groundwater fluoride levels in endemic areas.

Thus the scarcity of groundwater and presence of excess fluoride can be treated as the two most crucial, critical and core issues in the Indian system of sustainable drinking water supply. In early 1930s fluorosis was reported only in 4 states of India, in 1986 it was 13, 1992 it was 15, in 2002 it was 17 and now it is 20, indicating that endemic fluorosis has emerged as one of the most alarming public health problem of the country. Among the affected states, Rajasthan, Andhra Pradesh and Gujarat are most endemic.

Department of Zoology, B.V.B.G. Degree College,
Vineet Khand, Gomti Nagar, Lucknow

✦✦✦

Paraprosdokians (Winston Churchill loved them) are figures of speech in which the latter part of a sentence or phrase is surprising or unexpected and is frequently humorous. वाक्य के किसी शब्द का अतिरिक्त मतलब निकाल कर कर वाक्य को हास्य या व्यंग्य में परिवर्तित करने वाले छंदालंकार को अंग्रेज़ी में **paraprosdokian** कहते हैं 'चर्चिल' इस विधा में प्रवीण थे।

- Where there's a will-I want to be in it. (यहाँ will का मतलब इच्छा के बजाय वसीयत किया गया है।)
- The last thing I want to do is hurt you, but it's still on my list.
- Since light travels faster than sound, some people appear bright until you hear them speak.
- If I agreed with you, we'd both be wrong.
- We never really grow up, we only learn.
- War does not determine who is right only who is left.
- Knowledge is knowing a tomato is a fruit. Wisdom is not putting it in a fruit salad.
- To steal ideas from one person is plagiarism. To steal from many is research.
- I didn't say it was your fault, I said I was blaming you.
- In filling out an application, where it says, " In case of emergency notify. " I answered " a doctor".
- You do not need a parachute to skydive, You only need a parachute to skydive twice.
- I used to be indecisive, but now I'm not so sure.
- To be sure of hitting the target, shoot first and call whatever you hit the target.
- Going to church doesn't make you a Christian, any more than standing in a garage makes you a car.
- You're never too old to learn something stupid.
- I'm supposed to respect my elders, but it's getting harder and harder for me to find one now.

'अ'

सम्पादक

वर्ण 'अ' अद्भुत है। यह वर्णमाला का और 'माहेश्वर सूत्र' का प्रथमाक्षर है। उपसर्ग (आ), कृत् (अ,अङ) तथा तद्धित (अञ) प्रत्यय पहला शब्द, आकार (साकार) और ओंकार (निराकार) का तथा प्रथम अक्षर होने से वाणी या लिपि का 'प्रथमेश' भी कहलाता है। अनंत का आदि शब्द होने से इस वर्ण के अर्थ भी अनेक हैं।

किसी भी व्यंजन से प्रारम्भ हुए शब्द के पहले लगाने से तथा स्वर से प्रारम्भ होने वाले शब्दों में (ऋ को छोड़) अन आने से उस शब्द का निषेधात्मक अर्थ हो जाता है - सुंदर+ अ= असुंदर, अंग+अन= अनंग

तत्साद्दश्यमभावश्च तदन्यत्वं तदल्पता।
अप्राशस्त्यम विरोधश्च नञर्थाः षट प्रकीर्तताः।।

इसके छः समानार्थक शब्द बताए गए हैं। यथा-

सादृश्य= समानता, समरूपता- अब्राह्मणः = ब्राह्मण के समान जनेऊ-धारी पर ब्राह्मण न हो कर क्षत्रिय, वैश्य आदि।

अभाव= निषेध, अविद्यमानता यथा -अज्ञानता= ज्ञान का न होना।

भिन्नता= अंतर या भेद- अपटः= कपड़े से भिन्न कोई अन्य वस्तु ।

अल्पता= न्यूनता- अनुदरा= पतली कमर

अप्राशस्त्य= बुराई, अयोग्यता या लघुकरण अकार्यम= न करने योग्य, अकाल= गलत समय।

विरोध= वैपरीत्य- अनीति, असित

कहीं-कहीं 'अ' उत्तरपद को प्रभावित नहीं करता जैसे- अमूल्य, अनुत्तम

संस्कृत मे 'अ' लगने पर भूत-काल का शब्द बन जाता है। जैसे अगच्छत

पाणिनीय व्याकरण में 'अत' केवल 'अ', 'आत' केवल 'आ' वहीं केवल 'अ' सभी ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत, नासिक, अननुनासिक, आदि 18 प्रकार के 'अ' का बोध कराता है।

ओम के (अ, उ, म) तीन अक्षरों के प्रतीक त्रिदेवों में 'अ' विष्णु को प्रकट करता है।

अखिल भारतीय श्री कान्यकुब्ज प्रतिनिधि सभा को नव वर्ष की शुभकामनाओं सहित

अजय दीक्षित
सभासद
राजाजीपुरम, लखनऊ

मंगलयान मिशन, भारत के गौरव का प्रतीक

वै० काली शंकर शुक्ला

24 सितम्बर 2014 का दिन भारत के लिए एक महान उपलब्धि का दिन था जब भारत का मंगल ग्रह मिशन 'मंगलयान' (मार्स आरबिटर मिशन) सुबह 7 बजकर 53 मिनट पर मंगलग्रह की कक्षा में प्रवेश कर गया।

भारत का मंगलयान मिशन 5 नवम्बर 2013 को भारत के सतीश धवन अन्तरिक्ष केन्द्र, शारसे पीएसएलवी राकेट 2014 को यह सुबह 7 बजकर 53 मिनट पर मंगल ग्रह की कक्षा में प्रवेश कर गया। पृथ्वी से प्रमोचन के बाद मंगलयान ने लगभग एक महीने का समय पृथ्वी की कक्षा में बिताया जहाँ पर इसकी कक्षा की गई। इन 7 मनूवरों के बाद 30 नवम्बर 2013 को इसने मंगल ग्रह जाने वाले पथ का अनुकरण किया। यह भारत का प्रथम अन्तराग्रहीय मिशन है तथा इस मिशन के माध्यम से भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) मंगल ग्रह पहुँचने वाली विश्व की चौथी अन्तरिक्ष संस्था (रूस, अमेरिका और योरपीय अन्तरिक्ष संस्था के बाद) बन गयी। इसके साथ ही साथ एक विशिष्ट बात यह भी है कि मंगलयान मिशन भारत का प्रथम ग्रहीय मिशन था जो पहली बार में ही सफल सिद्ध हुआ। इस मिशन का पृथ्वी से मानीटरन बंगलौर स्थित इसरो दूरमिति एवं कमान्ड नेटवर्क, बेंगलूर तथा भारतीय डीप स्पेस नेटवर्क ब्यालालू (बंगलौर के समीप) से किया गया तथा किया जा रहा है।

24 सितम्बर 2014 को मंगलयान को मंगलग्रह की कक्षा में प्रवेश कराने के लिए मंगलयान की 440 न्यूटन क्षमता वाली द्रव अप मूवर्द्धक मोटर तथा 8 लघु प्रणोदकों का प्रज्वलन किया गया। यह आपरेशन 07:17:32 बजे प्रारंभ हुआ तथा 13:88:67 सेकन्ड तक चला जिसने मंगलयान की गति को 22.1 कि०मी० प्रति सेकन्ड से 4.4 कि०मी० प्रति सेकन्ड कर दिया। इस आपरेशन के बाद मंगलयान मंगलग्रह के चारों ओर एक दीर्घवृत्तीय कक्षा में प्रवेश कर गया।

इस महान अवसर पर भारत के प्रधान मंत्री आदणीय श्री नरेन्द्र मोदी जी इसरो के आइस्ट्रैक केन्द्र में मौजूद थे। उनके साथ कर्नाटक के राज्यपाल, केन्द्रीय मंत्री आदरणीय डी वी सदानन्द गौड़ा और अन्य गणमान्य अतिथि गण मौजूद

थे। प्रधान मंत्री ने इस अवसर पर कहा, "मंगल का मॉम (मार्स आरबिटर मिशन) से मिलन हो गया। मैं तभी समझ गया था कि 'माम' हमें (बेटों को) निराश नहीं करेंगी। " प्रधान मंत्री ने इसरो के वैज्ञानिकों को बधाई दी और कहा, "हमने अपने यान को ऐसे मार्ग पर आगे बढ़ाया जिसके बारे में बहुत कम जानकारी है। मैं वैज्ञानिकों व देश वासियों को इस अवसर पर बधाई देता हूँ।"

मंगलयान की मंगल ग्रह यात्रा के विभिन्न चरण

5 नवम्बर 2013 को पी एस वी-सी 25 उड़ान के द्वारा मंगलयान का प्रमोचन इसरो के सतीश धवन अन्तरिक्ष केन्द्र से किया गया। 7 नवम्बर 2013 से 16 नवम्बर 2013 के बीच मंगलयान के 5 कक्षीय उत्थान मनूवर किये गये तथा इसरो मंगलयान की पृथ्वी से न्यूनतम दूरी 192874 कि०मी० हो गई।

11 दिसम्बर 2013 से मंगलयान को मंगल ग्रह पथ पर रखने के प्रयास प्रारंभ हुए। इसे तकनीकी भाषा में 'ट्रान्स मार्स इंजेक्शन' कहते हैं। इस आपरेशन के फलस्वरूप मंगलयान की पृथ्वी से दूरी 29 लाख कि०मी० हो गई। 11 फरवरी 2014 को मंगलयान के अन्तरिक्ष में 100 दिन पूरे हो गये। 9 अप्रैल 2014 को मंगलयान ने अपनी यात्रा का आधा भाग पूरा कर लिया। 22 सितम्बर 2014 को मंगलयान के प्रमुख द्रव इंजन की टेस्ट फायरिंग की गई जो सफल रही। 24 सितम्बर 2014 को मध्यम लब्धिएन्अेना पर संचार प्रक्रिया को डाल दिया गया। मुख्य द्रव इंजन के प्रज्वलन की पुष्टि हुई तथा मंगलयान सफलतापूर्वक मंगल ग्रह की कक्षा में प्रवेश कर गया।

मंगलयान से सम्बन्धित कुछ विशिष्ट आंकड़े

मंगलयान में 5 वैज्ञानिक उपकरण लगे हैं जिनका कुल भार 15 कि०ग्रा० है तथा ये उपकरण हैं- लाइमन अल्फा फोटोमीटर, मीथेन संवेदक, संरचना विश्लेषक, 'मेंका', तापीय इन्फ्रारेड प्रतिविम्बन स्पेक्ट्रोमीटर (टी आई एस) तथा मार्स कलर कैमरा (एम सी सी)। मंगलयान का कुल भार (प्रमोचन के समय) 1337 कि०ग्रा० था। मंगलयान ने मंगलग्रह कक्षा तक पहुँचने में 321 दिन के अन्दर 66.6 करोड़ कि०मी० की दूरी तय की। मंगल ग्रह की कक्षा में पहुँचने के 12 घन्टे के अन्दर मंगलयान ने काम करना शुरू कर दिया तथा पृथ्वी को मंगल ग्रह की 5 तस्वीरें और डाटा भेजा। यह मंगल ग्रह की 372 कि०मी० X 80000

कि०मी० कक्षा में चक्कर लगा रहा है तथा एक चक्कर का समय 72 घन्टा का है। भारत के चन्द्रयान-1 मिशन नं० 4 लाख कि०मी० की दूरी तय की थी तथा मंगलयान मिशन ने 66.6 करोड़ कि०मी० की दूरी तय की। मंगलयान के द्वारा मंगल ग्रह की पहली फोटो 25 सितम्बर 2014 को 7300 कि०मी० की ऊँचाई से ली गई।

मंगलयान मंगल ग्रह के वातावरण का अध्ययन करेगा। इस मिशन से प्राप्त आंकड़े भावी मानवयुक्त मंगल ग्रह मिशन के लिए उपयोगी होंगे। इस मिशन के द्वारा ग्रह की सतह और उसमें मौजूद खनिजों का पता लगाया जा सकेगा। इसके द्वारा मंगल ग्रह में पानी और मीथेन की सम्भावनाओं का पता लगाया जा सकेगा।

आज की तिथि तक मंगल ग्रह के लिए 55 मिशन भेजे गये इनमें 26 सफल थे, 2 में आंशिक सफलता मिली, 9 मिशन प्रमोचन के समय असफल रहे, 9 रास्ते में असफल रहे तथा 9 मिशन मंगल ग्रह की कक्षा में पहुँचकर या तो उसकी परिक्रमा नही कर सके या उसमें लैन्ड नही कर सके। इस प्रकार 51% मंगल ग्रह मिशन सफल रहे। मंगलयान 6 महीने तक कार्य करेगा तथा मंगल ग्रह की विभिन्न जानकारी पृथ्वी को भेजेगा।

मंगल ग्रह की कक्षा में पहुँचने वाला हालिया मिशन 'मैवेन'

भारत के मंगलयान मिशन के 2 दिन पहले अमरीकी मंगल ग्रह मिशन मैवेन (मार्स एटमास्फीयर एण्ड वोलैटाइल इवोल्यूशन मिशन) 22 सितम्बर 2014 को मंगल ग्रह की कक्षा में प्रवेश कर गया। इसका प्रमोचन 18 नवम्बर 2013 को केप केनेवेरल से किया गया। एक ओर जहाँ मंगलयान मंगल ग्रह में मीथेन गैस का पता लगायेगा तो दूसरी ओर मैवेन मंगल ग्रह में कार्बन डाई आक्साईड का पता लगाएगा। वर्तमान में 7 मंगल ग्रह मिशन कार्यशील हैं जिनमें दो बग्घियाँ- आपरच्यूनिटी और क्यूरियासिटी हैं तथा पाँच आरबिटर-मार्स ओडीसी, मार्स एक्सप्रेस, मार्स खोजी आरबिटर, मंगलयान (मार्स आरबिटर मिशन) और मैवेन हैं।

सेवा निवृत्त वरिष्ठ वैज्ञानिक

◆ ◆ ◆

C.V. NETRALAYA

Viram Khand-2, Gomti Nagar,
Lucknow.

Centre of Comprehensive Eye Care

Eye Surgeon
Dr. V. K. Mishra

क्षय रोग और आपकी जीवन शैली

डा० सतीश चन्द्र पंत

स्वास्थ्य ही जीवन की अमूल्य धरोहर है। स्वस्थ व्यक्ति ही समाज निर्माण में सहायक होता है। रोगी व्यक्ति जीवन का पूर्ण आनन्द नही उठा पाता है या यह कह सकते हैं वह समाज में कोई योगदान नही दे सकता है।

संक्रमित रोगों की कड़ी में क्षय रोग का महत्वपूर्ण स्थान है। इस को 'तपेदिक' के नाम से भी जाना जाता है। क्षय रोगी स्वयं तो बीमार रहता है साथ में समाज के लोगों को भी यह बीमारी दे सकता है। इसका अनुमान इससे ही लगाया जा सकता है कि एक क्षय रोगी जिसके बलगम में जीवाणु हैं वह एक वर्ष में 10 से 15 लोगों को रोगी बना सकता है (यह उस व्यक्ति की प्रतिरोधक क्षमता पर निर्भर करता है) रोगी द्वारा ज़ोरदार तेज़ खाँसी- (**Forceful Cough**) द्वारा लगभग 40,000 जीवाणु थूक के छीटे (**Droplets**) द्वारा आसपास वातावरण में फेल सकते हैं।

हमारे देश में अन्य रोगों की अपेक्षा तपेदिक द्वारा ज़्यादा मरते है। यह रोग गरीब, अमीर, पुरूष, महिलाओं बच्चों यहाँ तक जानवरों जैसे गाय, भैंस अन्य में एवं पक्षियों कबूतर, तोता, मैना इत्यादि में भी पाया जाता है। पुरूष वर्ग में ३५ वर्ष से ज्यादा आयु में ज्यादा अनुमान है। लगातार कम अन्तराल में महिलाओं द्वारा गये गर्भ धारण से उनकी प्रतिरोधक क्षमता कम होने से रोग ग्रसित होने का खतरा ज्यादा हो सकता है। गरीबों में उचित खान-पान न होने से, सीलन युक्त घर, जहां सूर्य का प्रकाश नही जा पाता, ज्यादा मादक पदार्थ प्रयोग से रोग का खतरा बना रहता है। आजकल उच्च समाज में महिलाओं द्वारा नशे का प्रयोग जो आजकल ज्यादा प्रचलित हैं उन पर भी इस रोग का खतरा बना रहता है।

रोग का पूर्व इतिहासः-

(1) पुराने समय में इजिप्टीयन मम्मीज़ (**Egyptian Mummies**) में सबसे पहले रीढ़ की हड्डी में (**Pott's Spine**) यह बिमारी देखी गई।

(2) ऋग वेद में भी इसका विवरण राजयक्षमा बीमारी का राजा (**King of Disease**) के रूप में मिलता है, इसमें शरीर का क्षय (हानि) धीरे-धीरे होता हैं इसको क्षय रोग भी कहा जाता है, जो आज भी प्रचलित है।

(3) हिप्पोक्रेट (Hippocrates) 375 Bc के अनुसार यह एक लम्बी अवधि की बिमारी जिसमें बलगम, बुखार, बलगम में खून, शरीर कमजोर होना, दस्त आना फिर इन सबसे मृत्यु हो जाने के कारण इसको विशेष बीमारी के रूप में पहचाना जाता था।

(4) राबर्ट कोक ने (Robert Koch) 1882 में सबसे पहले इस जीवाणु का पता लगाया इसको उन्होंने टयूबर कुलीन बैक्टीरिया (Tuber Bacteria) का नाम दिया इसको उनके नाम से (Koch's Disease) कोक्स डीसीज़ भी कहा जाता है। उन्होंने इस जीवाणु को स्वस्थ जानवर में लगाया (Inoculate) यह देखा गया कुछ समय बाद वह जानवर भी वैसे ही ग्रसित हो गया।

(5) फ्राँस (France) के वैज्ञानिकों ने (1902–1921) तक निरन्तर प्रयास के बाद इस रोग से बचाव हेतु टीके की खोज की अतः उनके नाम से B.C.G. का टीका (Bacille Calmette Guerin) प्रचलित हुआ इस टीके से लाखों बच्चों को विश्व भर में बचाया गया

(6) इस रोग का पता लगाने के लिए 'रोगजन' (Roentgen) ने रश्मि किरणों (X-Ray) का अविष्कार किया। 1930 में एक अच्छा सीने का (Chest X-Ray) लिया गया जो रोग का पता लगाने में बहुत ही सहायक सिद्ध हुआ।

जब इस रोग के निदान के लिए कोई ओषधियाँ नही थी तो रोगी की ऊर्जा, शरीर की क्षमता बनाये रखने के लिए उपयुक्त स्वच्छ जलवायु, प्रदूषण रहित वातावरण में रखने की राय दी जाती थी उस समय सेनेटोरियम (Sanitariums) का चलन हुआ। हमारे देश में सबसे पहले 'अजमेर' में इसकी शुरूआत हुई। हमारे प्रदेश में 'भवाली सेन्टोरियम', उत्तराखण्ड में भवाली टी वी सेनेटोरियम एन गठीया सेन्टोरिय का चलन हुआ। पूर्व में यह उत्तर प्रदेश में आते थे। एवं 'गठीया सेन्टोरियम' जिला नैनीताल (अब यह उत्तराखण्ड) का विकल्प आया। सेनेटोरियम का उद्देश्य यह था कि रोगी स्वच्छ ताजी हवा, प्रदूषण रहित वातावरण में रहने से उसकी प्रतिरोधक क्षमता में सुधार होता है एवं रोगी घर से दूर रहने से परिवार तथा अन्य पर रोग खतरा भी कम हो जाता है।

निरन्तर प्रयास के कारण इस रोग के निदान हेतु उपयुक्त ओषधियों की वजह से सेन्टोरियम इलाज पद्धति हट गई है। रोग की चिकित्सा अवधि भी कम

हो गई है। निरन्तर शोध के कारण अब इस रोग पर बहुत हद तक विजय पा लिया है।

1962 में हमारे देश में राष्ट्रीय क्षय रोग रोकथाम प्रोग्राम (National T.B. Control Programme) का श्री गणेश हुआ। यह हर जिले में जिला क्षय रोग अधिकारी की देख रेख में चलता है। उसके साथ उपकेन्द्र, स्कूल हेल्थ प्रोग्राम, ग्राम पंचायतों, Voluntry Organization की सहभागिता भी होती है। हर जिले की सूचना राज्य को, सभी राज्यों की सूचना केन्द्र तक जाती है। जिससे तपेदिक रोग का आकलन किया जाता है, प्रोग्राम में कमी होने पर सुधारा जाता है।

क्षय रोग के प्रति जागरूकता का कारणः–

विश्व की आबादी का 1/3 हिस्सा इस रोग से ग्रसित हैं प्रगतिशील देशों में (Developing Countries) यह रोग ज्यादा होता है। हमारे देश में आबादी का जिनके बलगम में जीवाणु (Sputum) पाये जाते हैं 0.4% (3.5 मिलियन) हैं।

राष्ट्रीय क्षय रोग प्रोग्राम (N.T.P.) के अन्तर्गत लगभग 1.5 मिलियन रोगियों का प्रतिवर्षपता लगाया जाता हैं और उनका इलाज किया जाता है। लगभग प्रतिवर्ष 0.5 मिलियन इस रोग से मर जाते है।

क्षय रोग क्या हैः–

यह रोग सूक्ष्म जीवाणु द्वारा जो साधारण आँख से नही देखा जा सकता है इसको 'माइक्रो बेक्टीरिया टयूबरकुली' के नाम से जाना जाता है के द्वारा रोगी में फेलता है। प्रयोगशाला में इसको माइक्रोस्कोप द्वारा देखा जा सकता है।

क्षय रोग कैसे फैलता हैः–

- रोग मुख्यतः रोगी द्वारा खांसने से, छीकने से या तेज़ खांसने से थूक द्वारा आसपास कोई कमजोर व्यक्ति को जिसकी प्रतिरोधक क्षमता (रोग से लड़ने की क्षमता) कम होगी तो वह ग्रसित हो सकता है। अतः खांसते समय मुँह में कपड़ा अवश्य रखें।
- रोगी द्वारा बच्चे को दुलारने से, गोद में लेकर चूमने से या चाटने से थूक द्वारा यह रोग फेलता है।
- भोजन द्वारा कमी एक ही थाली में रोगी के साथ भोजन करने से, एक ही गिलास में पानी पीने से, छोटे बच्चों को रोगी द्वारा जूठा भोजन खिलाने से।
- आजकल भोजनालयों (Restaurant) में खाने का प्रचलन, सफाई व्यवस्था

ठीन न होने पर, बर्तनों की प्रयाप्त सफाई न होने से, रोग ग्रसित बावर्ची (Cooks) या रोग ग्रसित खाना देने वानले से (Waiter/ Servant) इस रोग का अन्देशा बना रहता है।

- जानवर जैसे (गाय, भैंस, बकरी या अन्य जो बीमार होते हैं (Bovine Tubscaltion) अगर उनका दूध बिना उबाले पीने से यह बीमारी हो सकती है इसलिए आजकल दूध की उचित तापमान में उबालकर शुद्ध किया जाता है। (Pasteurised Milk) पक्षियों में भी यह रोग होता हैं। (Avian Tuibculing)
- संक्रमित रोगी द्वारा योन क्रिया से।

क्षय रोग कहाँ – कहाँ होता है:-

- मुख्यतः फेफड़े का क्षय रोग सबसे ज्यादा होता है। उसके अलावा शरीर के अन्य भागों में भी यह रोग होता है। फेफड़ों के क्षय रोग को Pulmonary Tuberculosis कहा जाता हैं। फेफड़े को छोड़कर शरीर के अन्य भाग में इसको Extra Pulmonary Tuberculosis नाम दिया गया हैं।
- गाँठ की टी०बी०
- आतों की टी०बी०
- हड्डियों की टी०बी० -T.B. Spine, कुल्हे की टी०बी०, घुटने की टी०बी०, कलाई की हड्डी की टी०बी० अन्य
- दिमाग की टी०बी० - मैननिजाइटिस / T.B.M.
- खाल की टी०बी०
- आँखों की टी०बी०
- जनन अंगों की टी०बी०

शरीर के सभी अंगों को यह ग्रसित करता है।

क्षय रोग के लक्षण:-

- 2–3 हफ्ते से ज्यादा की खांसी, साथ में बलगम, लम्बी अवधि की खांसी में बलगम के साथ खून का आना।
- सीने में दर्द।
- ज्वर।
- भूख का न लगना।

- वजन में गिरावट।
- कमज़ोरी, चिड़चिड़पन।
- साँस फूलना।
- मानसिक उत्तेजना।
- पेट में दर्द कर्मा, दस्तो कर्मा, कब्जीयत

Extra Pulmory

उसके लक्षण रोग ग्रसित अंगों के अनुसार होते हैं।

रोगी की जाँच:-

- टयूबर कुलीन जाँच- इसमें खाल में दवा (Inject I/D) की जाती हैं फिर नतीजा 24–48 घंटे में देखा जाता हैं।
- बलगम की जाँच।
- खून की जाँच।
- **X-Ray Chest**
- फेफड़े के पानी या अन्य की जाँच।
- कल्वर एवं सेन्सटीविटी इससे यह पता चलता है कि जीवाणु में किस दवा का असर होगा।
- उतक जाँच (Biopsy)
- अल्ट्रासाउंड (Ultrasound) आतों की जाँच या अन्य पेट की रोग का पता लगाना।
- **C.T, M.R.T.**
- **I.G.R.A. Test.**
- **P.C.R. Test.**

रोग का निदान:-

सरकार द्वारा Dot Programme चलाया जा रहा है। इसमें प्रशिक्षित टी०बी० के सदस्य (चिकित्सक, टीम लीडर अन्य) द्वारा उनकी देखरेख में जाँच, एवं दवाईयाँ खिलाई जाती है यह सरकार द्वारा प्रदान की जाती है। अगर विशेषज्ञ की देखरेख में, दवा की उचित मात्रा, उचित समय, समय-समय पर जाँच करने पर, दवा में लापरवाही (Default) न हो तो इस रोग का निदान

संभव है। यहां यह ध्यान देना आवश्यक हैं दवा नियमित सही मात्रा में न लेने पर मरीज पर दवा का असर नही रहता है (Drug Resistance) हो जाता है।

क्षय रोग निवारण में निम्न औषधियाँ कारगर हैं:-

- आइसोनेक्स (INH)
- इथमबूटोल
- स्फिामाईसिन
- पिराजिनामाइड
- स्ट्रेप्टो माइसिन
- केनामाइसिन, साइक्लोसेरिन, P.A.S., औफ्लोक्स, अन्य

कुछ मरीज़ों में शल्य क्रिया भी की जाती है जैसे फेफड़ों से पानी, मवाद या खून निकलना (Aspiration, ICD) Inter Costal Drainage किया जाता है। कभी ज़्यादा ग्रसित फेफड़ों का हिस्सा अलग किया जाता है जिसे Lobectomy कहा जाता है।

रोगी के इलाज से पूर्व निम्न जानकारी आवश्यक है:-

- रोगी को यह लक्ष्ण कब से हैं।
- इस रोग का इलाज पहले हो चुका है कहाँ हुआ कितने अवधि तक, क्या इलाज बीच में तो नही छोड़ा।
- परिवार में कोई सदस्य इस रोग से ग्रसित था उसका रोगी से सम्बन्ध।
- रोगी का व्यक्तिगत जीवन शैली- क्या नशा, धूम्रपान, तम्बाकू अन्य का उपयोगी, कितनी मात्रा में, कितने समय से क्या उसने कभी नशा उन्मूलन केन्द्र में इलाज कराया या नही।
- रोगी का रोजगार-जैसे ईट, भट्टा, कोयला की खदान, गैस चिमनी, कपड़ा मिल, रूई के कारखाने में कार्यरत है।
- सामाजिक स्थित-छोटे छोटे मकान जहाँ सीलन गंदगी, गंदे नालों के किनारे तंग मकान जहाँ ज़्यादा सदस्य रहते है, खान-पान का भी असर होता है।
- अगर रोगी HIV, AIDS से ग्रसित हैं मधुमेह नियमित न होने पर इस रोग का खतरा बड़ जाता है।
- प्रतिरोधक रोधक क्षमता अच्छी होने पर व्यक्ति की बिमारी से मुकाबला करने में सहायता मिलती है। यह प्रतिरोधक क्षमता गिरने पर रोग का

खतरा बना रहता है। निम्न कारणों से यह क्षमता गिर सकती है:-

बच्चों में:- सूखा रोग, खसरा, रिकेटस, बेरबैरी, काली खासी, लगातार दस्त आना।

अन्य में:- मधुमेह, इन्फूलइन्ज़ा।

ओद्योगिक प्रदूषण, कोयले के खदान में कार्यरत ईट भट्टा में कार्यरत, सिलिका कार्यरत, कपड़ा, रूई के कारखानों में।

ओषधियाँ- बिना चिकित्सक लम्बे समय तक दवा लेना जैसे स्टेराइड ज़्यादा X-Ray

मादक पदार्थ- बीडी, सिगरेट सुर्ती तम्बाकू पाउच।

यहाँ मैं बताना चाहूँगा कि स्वच्छ जीवन, स्वस्थ जीवन, व्यायाम, उचित खान-पान, समय समय पर चिकित्सक से परामर्श करने से शारीरिक क्षमता बड़ जाती है।

***Health Education*:**

तपेदिक रोकथाम में यह एक अहम मानक है।

- ✓ समय-समय पर जाँच करना, स्कूल हेल्थ कार्यक्रम में टीके एवं आवश्यक जाँच।
- ✓ रोग के निदान हेतु गोष्ठियाँ करना, Poster द्वारा जागरूक करना।
- ✓ जो नियमित दवा नही ले रहे हैं उनको समय-समय पर दवा के लिए प्रेरित करना।
- ✓ भोजनालयों में धोबी, बावर्ची, ग्राम पंचायतों में नियमित जाँच (Screening)
- ✓ जानवरों के डाक्टरों द्वारा जानवरों की जांच जिससे बीमार जानवर का गोश्त न बेचा जाय।
- ✓ मादक पदार्थ लेने वालों को नशा उन्मूलन केन्द्र के लिए प्रेरित करना।
- ✓ हम सबका यह दायित्व है कि रोगी को प्रताणित नही करना है उसको समाज से जोड़कर रखना है, जिससे वह समाज का अंग बन सके।

◉◉◉

नवसंवत्सर एवं होली पर्व की हार्दिक शुभकामनाएँ

उचित मूल्य पर विश्वसनीय
दवाओं हेतु पधारें

भारत
मेडिसिन कम्पनी

शहर का एक प्रतिष्ठित प्रतिष्ठान

निकट बलरामपुर अस्पताल,
गोलागंज, लखनऊ

विशेषता :
जो दवाएँ शहर की अन्य दुकानों पर
उपलब्ध न हों उनके लिए भी पधारें।

दूरभाष : 9336666322, 0522-6568011

पंडित जी (तिवारी जी) का अंग्रेजी दवाखाना

गोपालपुर

डा० यू०डी० शुक्ल (स्व०)

काँपते हाथों और पैरों से फतेहपुर के जिला कलेक्टर, जो कि एक अंग्रेज़ था, के सामने उस क्षेत्र मे गंगा के तट के एक गाँव गोपालपुर से दो वर्षों से लगान वसूली न होने का कारण स्पष्ट कर रहा था। "साहब! इस गाँव के काश्तकार श्री शम्भूनाथ अवस्थी थे। दस वर्ष पूर्व उनकी मौत हो गई और तबसे ६ वर्षों तक उसके दामाद छंगालाल द्वारा अपने पुत्र शिवादीन की देखरेख मे बड़ी कुशलता से व्यवस्था होती रहती थी और चार वर्ष पहले अवस्थी जी की पुत्री अन्नपूर्णा देवी की मौत हो गई। इसके पूर्व उसका बेटा सारी व्यवस्था करके अपनी माँ के हवाले कर देता था और उससे एक दाना अन्न का इस्तेमाल नहीं करता था। वह और उसके पिता छंगालाल शुक्ल घर के बाहर एक झोपड़ी में रहते थे और पुरोहिती करके अपना पेट पाल रहे थे। अवस्थी जी की संपत्ति का प्रयोग वह ठीक नहीं समझते थे। छंगालाल जी भी अपने श्वसुर की मृत्यु के दो वर्ष बाद सिधार गए। जीवन भर वह श्वसुराल में रहते हुए उसकी संपत्ति पर निर्भर नहीं रहे। उनके और उनके पुत्र दोनों ही पुरोहिती में और अपने धार्मिक ज्ञान और वेद पुराणों के अध्ययन मे रहते थे। अपनी माँ की मृत्यु के बाद समस्त बचा अन्न का प्रयोग लगान ही देने और और उनके कर्मकांड में ही लगाया। और चार वर्ष से खेती नहीं करा रहा है। गाँव में अनाज पास के गाँव असनी से आता है। तो वह खेती क्यों नहीं कराता है? इसका कारण उसने बताने से मना किया। मैंने कहा "कलेक्टर साहब डंडे से पिटवाएंगे।"

"भारी इजलास में तो कुछ भी नहीं बताऊंगा। वह चाहे तो मुझे मार भी डालें, मैं नहीं बताऊंगा। अगर एकांत में इज़्ज़त और प्रतिष्ठा से पूछेंगे तभी बताऊंगा और उनसे विनती करूंगा इसकी काश्तकारी किसी और को दे दें।"

लगान संग्राहक डरते हुए बोला "साहब यह अधिकार तो केवल आपको ही है। लेकिन आप उससे पहले काश्तकारी मंजूर कराके उसी को कराने की कोशिश करें, क्योंकि उसकी पुरोहिती के कारण उसका सभी सम्मान करते हैं और उससे अच्छी व्यवस्था कोई दूसरा नहीं कर सकता है। लेकिन हुजूर वह

बहुत जिद्दी और अपनी इज़्ज़त पर मर मिटने वाला है। इस कारण से उससे अकेले ही बात करें।"

कलेक्टर साहब ने कहा, "अच्छा ठीक है, जब अकेले मे ही बात करना है तो सुबह ६ बजे ही उसे मेरे रेजीडेंस पर आओ। आफिस मे पंखा कुली को भी हटाना पड़ेगा और हम यहाँ की गर्मी को टालरेट नहीं कर सकता है, हम सुबह अपने लान मे उसकी बात का आनर करते हुए बात करेगा।

दूसरे दिन प्रातःकाल ६ बजे सूर्यदेव के दर्शनों के उपरांत उषाकाल चल रहा था, शीतल मंद सुगंध के बीच कलेक्टर आवास मे जूही, रातरानी और गुलाब के फूल अपनी महक बटोर रहे थे। कलेक्टर आवास मे ही बैठे काफी पी रहे थे और मन ही मन आगंतुक शिवादीन को काश्तकारी स्वीकार करने के लिए दाम, दंड, भेद सभी कुछ कैसे किया जाय सोच रहे थे, क्योंकि उसकी देखरेख मे लगभग १० वर्षों से सुचारु रूप से लगान वसूली चल रही थी। उसके खेती न करने पर भी लगान दो साल तक अदा किया गया। लार्ड कार्नवालिस साहब के सख्त आदेश थे और अधिक से अधिक संसाधन जुटाने के लिए स्थानीय गवर्नर बहुत सख्त थे।

चौकीदार ने शिवादीन शुक्ल की गोपालपुर से लगान संग्राहक के साथ आने की सूचना दी। साहब ने सामने एक कुर्सी रखवाई और शिवादीन शुक्ल को अकेले लाकर खुद उसे दूर गेट के पास खड़े होने के हिदायत दी। कुछ ही मिनटों मे लगभग २० गज दूर प्रवेश द्वार से अंदर आते शिवादीन शुक्ल को आते देखा जो आत्म-विश्वास और प्रतिभा जैसे चेहरे पर टपक रही थी। विशाल मस्तक पर लाल त्रिपुण्ड, पीछे लटकती चोटी, श्वेत धोती, गेरुए रंग के सूती दुशाले से झाँकता यज्ञोपवीत एक गरिमामय, तेजोमय भक्ति प्रदर्शित करता था। लगभग २० वर्षीय युवक के व्यक्तित्व को देख कर एक कठोर हृदय मंत्रमुग्ध हो गया जो उसके अकारण एक त्याग से पहले ही अभिभूत था। "यंग मन सीट डाउन, बैठ जाएँ।" शुक्ल जी कलेक्टर को और उसकी वरिष्ठता को प्रणाम करके खड़े ही रहे।

"अरे भाई जब तुम बैठेगा तभी तो हम तुम्हारी बात सुन पाएगा। खड़े-खड़े आवाज़ दूर तक जाएगी और हम तुम्हारी शर्त हम पूरी नहीं कर पाएगा।"

"साहब हमारे यहाँ बुजुर्गों का सम्मान करते हैं। की बात है बड़े लाट साहब (गवर्नर जनरल लार्ड कार्नवालिस) के सीधे लगान वसूली के आदेश को आपकी जगह जो कलेक्टर थे उनको मेरे नाना देवी दत्त अवस्थी उर्दू और भारतीय धर्म के रीति-रिवाजों के बारे मे बताने आते थे। नाना जी आप लोगों के साथ अछी अँग्रेजी में भी बात कर लेते थे। लाट साहब की सीधी लगान वसूली के प्रोग्राम में कई गाँवों की काश्तकारी की जा रही थी। कलेक्टर साहब ने मेरे नाना श्री अवस्थी जी से खुश होकर उनको गंगा तट पर बहुत ही उपजाऊ भूमि गोपालपुर की काश्तकारी सौंप दी नाना के कोई संतान नहीं थी और लगभग ५० वर्ष की आयु हो चली थी और अब संतान की उम्मीद भी छोड़ दी थी। काश्तकारी मिलने पर धन-धान्य की कमी न रही और तभी मेरी माँ का जन्म भया। माँ चूंकि धन-वैभव के साथ पैदा हुई थी तो उसका नाम अन्नपूर्णा रक्खा। वे माँ को बेहद चाहते थे। १५ वर्ष की उम्र में उनकी शादी की चिंता हुई पर वह पुत्री को नहीं छोड़ना चाहते थे। उसी समय वह मेरे बाबा जो कानपुर के गाँव मे रहते थे पुरोहिती और ज्योतिष का कार्य करते थे, और मेरे नाना अवस्थी जी के मित्र थे। वह अपनी पुत्री का भविष्य किसी घर जमाई सुयोग्य, कुलीन वर की तलाश मे कानपुर गए थे। मेरे पिता के दो भाई रामदीन और कृष्ण दत्त के क्रमशः एक बेटे और एक बेटी थे। मेरे पिता छंगालाल सबसे छोटे थे और मेरी दादी दिवंगत हो चुकी थीं। मेरे बाबा ने अवस्थी जी की पुत्री अन्नपूर्णा का जन्म पत्र विचारा और स्वभाव में उग्र और मध्यम आयु का होना बताया मेरे बाबा ने अवस्थी जी की लड़की के लिए जमाई की व्यवस्था के लिए कई संभ्रांत युवकों को बुलाया और सम्पन्न अवस्थी जी के घर पर सम्पदा का आनंद लेने की बात कही परंतु इसी प्रलोभन मे कहीं पिता और कहीं उनके पुत्र नहीं आए और विवाह से इंकार करते गए। इसी बीच मेरी माँ गर्भवती थीं और उनको प्रसव हुआ और मेरा जन्म हुआ। मेरे प्रसव के उपरांत उनकी मृत्यु हो गई। मेरे बाबा और पिता अधिक निराश थे। बाबा ने नाना से कहा यहाँ कानपुर मे गंगा के तट पर एक वैद्य की दवाओं को अपनी दोनों बहुओं को दिया और उनके संतान नहीं हुई। इस तीसरी को भी मैं एक संतान के बाद दवा दिला कर अन्य प्रसव के खतरे से बचने का प्रयास करने की योजना थी। मेरी यह बहू बहुत ही सुशील, अपनी जेठानियों का सम्मान करने वाली थी। अवस्थी जी इसकी मृत्यु के बाद अब आप हमारे यहाँ अन्न-जल भी नहीं ग्रहण करेगे। इसके कारण से सूतक के १३ दिनों

के उपरांत आये। मैं आपकी भरपूर मदद करूंगा।

अवस्थी जी गोपालपुर लौट आए।

अवस्थी जी घर लौट रहे थे। साथ ही एक योजना भी उनके मस्तिष्क में चल रही थी। उन्होंने देखा की प्रसवोपरांत स्त्री के जिंदगी का कोई भरोसा नहीं है। और एक वंश चलाने वाला तो होना ही चाहिए। उन्होंने एक नज़र जो मुझे देखा था वह छवि वह भूल नहीं पा रहे थे। १५ दिनों के बाद वह खूब धन-धाय गाड़ियों पर लाद कर गए और मेरे बाबा के पैर पकड़ लिए। रोते-रोते उन्होंने अपनी कन्या के लिए मेरे पिता से विवाह के उपरांत वैद्य जी की दवा का प्रयोग करते हुए अपनी पुत्री की जीवन रक्षा और मेरे पिता और मुझको दान स्वरूप मांगने तथा अपनी पुत्री से मेरे पिता विवाह का अनुरोध करते रहे। मेरे बाबा अपने को इसके लिए तैयार नहीं कर पा रहे थे, परंतु अवस्थी जी की दीन दशा पर उनकी सहायता करने से भी मुंह नहीं मोड़ पा रहे थे। उन्होंने राजा दशरथ की भांति किसी के भले के लिए इस त्याग को स्वीकार किया और मेरे पिता को यह निर्णय सुनाया। पिता का विरोध करने की तो उस समय गुंजायश ही नहीं होती थी, उन्हें घर जमाई बन कर आनंद भोगना भी स्वीकार नहीं था। इस कारण अपने पिता से उनके निर्णय पर कोई संशोधन न करने के आश्वासन के साथ ही अवस्थी जी से अपना एक निश्चय दृढ़ता से सुनाया। मैं सदैव आपके आवास पर नहीं रहूँगा। घर से लगी एक झोपड़ी में रहकर मैं ब्राह्मणोचित कार्यों का संचालन करते हुए अपने पिता की भांति पुरोहित बनकर अपनी जीविका चलाऊँगा। नाना जी ने भरे गले से यह निर्णय माना। लेकिन मुझे अपने पूर्ण रूप से नाती के रूप में स्वीकारने और किसी को भी यह खबर न हो कि मैं उनकी बेटी का जन्मा पुत्र नहीं हूँ। इस कारण विवाह के उपरांत दो वर्षों तक आपके यहाँ रहेगी और उसका पूरा खर्चा मैं स्वयं वहाँ करूंगा। उसके बाद एक पुत्र की माता के रूप में मेरे यहाँ आ जाएगी। मेरे बाबा के यहाँ सुशील और सभ्य मेरी माँ के स्थान पर एक सम्पन्न और एकलौती लाडिली पुत्री को दो वर्ष तक झेलना भी शायद एक कठिन कार्य था, परंतु अवस्थी जी ने अपनी पुत्री को एक उचित वधू की भांति ही रहने का आश्वासन देकर सबको आश्वस्त किया। अवस्थी जी ने अंत में कह दिया की माँ बेटे का संबंध तो उसकी यशोदा माँ के व्यवहार से ही होगा।

वादे के अनुसार मेरे पिता का विवाह हो गया। विवाहोपरांत मेरी माँ लगभग डेढ़ वर्षों तक अपनी ससुराल में रहीं। हर माह मेरे नाना खूब धनधान्य लेकर आते और गाँव में ही एक कोठरी में रह कर वापस हो जाते। उनके प्रायः आने का कारण पुत्री का मोह और उसके लाडलेपन से किसी के प्रति उचित व्यवहार न होने की आशंका से पीड़ित रहते। बाद में दोनों पक्षों की सहमति से एक वर्ष सात माह में ही विदा कराकर ले आए, और पूर्व निर्धारित योजना से बाहर कुटिया डाल कर रहते। अवस्थी जी की लाडली कभी-कभी पतिधर्म निभाने और पत्नी सुख देने के लिए उनकी कुटिया में आ जाती और चली जातीं। मेरी माँ ने मेरा शिशु रूप में पूरा वात्सल्य उड़ेला जिससे लोगों को जन्मदात्री माँ न होने का भान ही नहीं हुआ। धीरे-धीरे समय बीतता रहा। सर, आप ही बतावें जब वह मेरी जन्मदात्री माँ थी ही नहीं तो मैं कानूनी तौर पर और नैतिक तौर पर मैं कैसे उस प्रापर्टी को स्वीकार कर सकता हूँ?

कलेक्टर साहब को शायद यह भान था कि इससे अच्छा गोपालपुर का व्यवस्थापक नहीं मिलेगा। दूसरा ट्राई करने में गैबिल ही होगा। वह बहुत ज़ोर से बिगड़े "तुम एकदम आलसी हो गया है और काम नहीं करना चाहता। मैं अगेन प्रापर्टी अवस्थी के स्थान पर तुम्हें एलाट कर देगा और रही मारल की बात जिसे तुमने नैतिकता कहा तो तुम्हारी माँ ने तो योअर लार्ड कृष्ण की तरह उनका पालन करने वाली माँ की तरह पाला तो तुम्हारी मारल ड्यूटी हो जाती है। और हाँ, जब किसी को यह बात नहीं मालूम तो तुमको कैसे पता चला? यह स्टोरी तुमने कहाँ सुनी?"

"साहब मैं पूरी बात बता कर अपनी माँ की किसी भावावेश में कही गई गलती को नहीं बताना चाहता हूँ, लेकिन अब बताना ही पड़ेगा।

मेरी माँ अपने पिता की लाड़ली पुत्री थीं, अतः वह स्वभाव से कभी-कभी उग्र भी हो जातीं थीं और ताना देने से नहीं चूकती थीं। जब मैं ६ वर्ष का था, मेरी माँ हमेशा साज-श्रृंगार में रहती थीं। मैंने एक दिन काठ की एक रंग-बिरंगी गेंद से उसका प्रिय दर्पण तोड़ दिया। उसी समय मेरी माँ ने क्रोध में आकर मुझे उनका पुत्र न होनें और मुझे एक समृद्धिशाली जीवन देने का उलाहना दिया। इतने अधिक क्रोध में उसे कुछ भी भान नहीं रहा। मेरे बालमन पर एक बड़ा आघात लगा, और मैंने अपने पिता से इसके बारे मे पूछा। मेरे पिता ने सारी बाते

नाना जी को सुनाई तो उन्हे भी बड़ा दुख हुआ। नाना जी ने अपनी बेटी को खूब लताड़ा और गुस्से में अपनी बेटी को शारीरिक दंड भी दिया। हम दोनों से उन्होंने उक्त रहस्य को कहीं और व्यक्त न करने का आश्वासन लिया। मेरे पिता ने आवश्यक परिस्थितियों को छोड़ कर, जब विवशता ही न हो, करने का आश्वासन दिया, और अपना अंतिम संस्कार मेरे द्वारा करवाने का आश्वासन लिया। जिससे हम लोगों का भी अपने परिवार को त्याग कर मेरे यहाँ आने का औचित्य पूर्ण हो सके। मेरे नाना पहले से ही अस्वस्थ रहते थे और दो वर्ष पश्चात् उनकी मृत्यु हो गई। निश्चित रूप से उस घटना का उनपर असर रहा होगा। मेरी माँ को भी अपनी करनी पर पश्चाताप हुआ और वह भी दो वर्षों के बाद परलोक सिधार गईं। दोनों ने अंतिम संस्कार करने का आश्वासन लिया था। परंतु मेरे पिता ने और मैंने इस अवस्थी की संपत्ति का उपभोग किसी भी प्रकार से न करने का संकल्प लिया है, जिसे हर दशा मे मुझे पूर्ण करना है", यह कहते हुए शिवादीन शुक्ल का चेहरा लाल हो गया और आँखों मे अश्रु आ गए। कलेक्टर ने उनके दृढ़ निश्चय को देख पुनः उससे कहना उचित नहीं समझा और कहा "पंडित ! हम तुम्हारी तरह तो कोई एडमिनिस्ट्रेटर पा नहीं सकता। कंपनी सरकार रेवेन्यू के लिए बहुत जोर डाल रहा है तो यहाँ के रेवेन्यू की भरपाई हम कैसे करें? अभी दो साल का नुकसान हो चुका।"

"साहब छोटे मुंह बड़ी बात आप हुकुम करें तो मैं कुछ बताऊँ। साहब यह जो लगन वसूलने वाला पटवारी मेरे साथ आया है, इसी की मदद से आप खुद खेती कराएं और पहले से ज़्यादा तीन चौथाई उपज का लगान देकर एक चौथाई आप गाँव के लोगों बाँट दें। मुफ्त में अनाज पाकर गाँव वाले भी खुश और अधिक लगान से कंपनी सरकार भी खुश। और मेरी इस बात की एवज में मेरी बकाया लगन भी अदा हो जाएगी। मैं इस काम में गाँव में आपकी मदद करता रहूँगा लेकिन एवज में कुछ भी नहीं लूँगा।

"पंडित तुम बहुत होशियार हो। जैसे लोग कहते हैं कि पोंगा-पंडित वह तुम नहीं हो"

दोनों साथ- साथ हंसने लगे।

* * *

कार्यकारिणी अखिल भारतीय श्री कान्यकुब्ज प्रतिनिधि सभा

अध्यक्ष

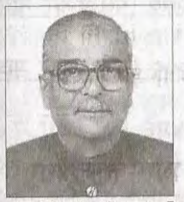

न्यायमूर्ति डी०के० त्रिवेदी

महासचिव

उपेन्द्र मिश्र
एडवोकेट

कोषाध्यक्ष

ए० के० त्रिपाठी
एडवोकेट

उपाध्यक्ष

जे० के० त्रिपाठी
संस्कृत मातृ भाषी

उपाध्यक्ष

पी०एन० मिश्रा
एडवोकेट

उपाध्यक्ष

डा० आर०के०मिश्रा
आर्थो सर्जन

उप मंत्री

के० एस० दीक्षित
आडीटर

सदस्य

जी० एस० मिश्र
स्थायी अधिवक्ता

सचिव महिला प्रकोष्ठ

कु० प्रेम प्रकाशिनी मिश्रा
एडवोकेट

सदस्य

हरेन्द्र कुमार मिश्रा
उप लेखाधिकारी

सम्पादक मण्डल

सम्पादक

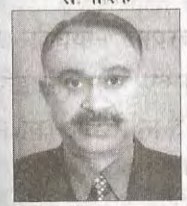

डा० डी० एस० शुक्ला
चिकित्सक, सर्जन

सह-सम्पादक

एस० एन० दीक्षित
इंजी० लेसा

सह-सम्पादक

डा० अनुराग दीक्षित
अपोलो अस्पताल, लखनऊ

कान्यकुब्ज वाणी आभा मंडल

संरक्षक : अनुदान रु० १०००० (दस हजार मात्र)

न्यायमूर्ति पं० डी० के० त्रिवेदी (अ.प्रा.)

वाणीपुत्र : अनुदान रु० ५००० (पाँच हजार मात्र)

१- डा० यू०डी० शुक्ल, लखनऊ मो० ६३३५६२६६३७
२- डा० वी० के मिश्रा आई सर्जन, लखनऊ मो० ६४१५०२०४२६
३- ई एस एन मिश्रा, लखनऊ मो. ६४५३६४५४६०
४- ललित कुमार बाजपेयी, रायबरेली

विशिष्ट सदस्य : अनुदान रु.२००० (दो हजार मात्र)

१- श्री सूर्य प्रकाश बाजपेई, लखनऊ मो ६३३५१५६३६३
२- श्री उपेन्द्र मिश्र, लखनऊ मो० ६४१५७८८८५५
३- डा० आर एस बाजपेयी, लखनऊ
४- प्रो० डा० पी०पी० त्रिपाठी, बलरामपुर
५- डा० आर के मिश्रा, लखनऊ मो ६४१५०१२३३३
६- श्री प्रमोद शंकर शुक्ल, रायबरेली
७- श्री विनोद बिहारी दीक्षित, लखनऊ मो० ६३३५६०८०८१
८- स्व० विजय शंकर शुक्ल, लखनऊ
९- श्रीमती रोली तिवारी, राय बरेली
१०. डी०के० बाजपेयी, लखनऊ

आजीवन सदस्य : अनु० रु० १०००/- (एक हजार रु० मात्र)

१- श्री जितेन्द्र कुमार त्रिपाठी, लखनऊ मो. ६३०७२२२०२७
२- स्व० भारतेन्दु त्रिवेदी, सीतापुर
३- श्री रमा रमण त्रिवेदी, सीतापुर फोन ०५८६२२४७६२६
४- श्री के० के० त्रिवेदी, लखनऊ मो० ६४१५०२०५१०
५- श्री आर० सी० त्रिपाठी, लखनऊ मो० ६४१५०१२०४०
६- श्री नवीन कुमार शुक्ल, लखनऊ मो० ६५०६६६७३१
७- श्रीमती मीनू द्विवेदी, कानपुर मो० ६३३६१६६३८०
८- इं० बसंत राम दीक्षित, लखनऊ मो० ६३३५०७५४८२
९- श्री सुधीर कुमार पाण्डे, लखनऊ मो० ६४१५५२१०३१
१०- श्रीमती मनोरमा तिवारी, लखनऊ
११- कु० प्रेम प्रकाशिनी मिश्रा, लखनऊ मो० ६४१५०२६०८७
१२- श्री अनिल कुमार त्रिपाठी, सीतापुर मो० ६४१५५२४८४८
१३- ब्रिगेडियर शीतान्शु मिश्र, लखनऊ मो० ६४५४५६२४११
१४- श्री कृपा शंकर दीक्षित, लखनऊ मो० ६४५५७१३७११
१५- डा. अनुराग तिवारी, कानपुर मो ६४१५७३५६३०
१६- श्री आर के शुक्ल, लखनऊ मो० ६६१६६२३१२१
१७- डा आर सी मिश्र, लखनऊ फोन ०५२२-६५२१३५३
१८- श्री विनोद कुमार मिश्र, फतेहपुर ८४ उन्नाव
१९- राज किशोर अवस्थी, लखनऊ
२०- डा० पी० एन० अवस्थी, लखनऊ

२१- कौशल किशोर शुक्ल, लखनऊ
२२- विनय कुमार शुक्ल, रूरा रमा बाई नगर
२३- मनीकान्त अवस्थी, लखनऊ
२४- श्रीमती अनुराधा शुक्ल, पत्नी पं त्रयम्बकेश्वर प्रसाद शुक्ल, खाली सहाट, रायबरेली
२५- के० बी० शुक्ल, लखनऊ
२६- हेमा दिनेश मिश्रा, लखनऊ
२७- ब्रह्म शक्ति दीक्षित, लखनऊ
२८- श्रीमती सुमन शुक्ला, लखनऊ मो० ८००५३६६६०७
२९- शम्भु प्रसाद पाण्डे, मलिहाबाद, लखनऊ मो० ६४५६७१७७११
३०- इं० एस.एस. शुक्ला, लखनऊ मो० ६४५०७६१४०३
३१- प्रवीण कुमार द्विवेदी, लखनऊ
३२- ज्ञान सिन्धु पाण्डेय, लखनऊ मो० ८७६५५३१२८१
३३- डी.एन. दुबे, लखनऊ मो० ६४१५४०८०१८
३४- श्रीकान्त दीक्षित, लखनऊ मो० ०६४१५७६६६०१
३५- उमेश चन्द्र मिश्रा, लखनऊ मो० ६३०५२४५५६६
३६- ओंकारनाथ मिश्रा, लखनऊ मो० ६४१५०२२६५७
३७- राम जी मिश्रा, खैराबाद मो० ६४५०३७६०५४
३८- डा० प्रांजल त्रिपाठी, बलरामपुर
३९- डा० निधी त्रिपाठी, बलरामपुर
४०- अश्विनी कुमार शुक्ल, फतेहपुर
४१- राघवेन्द्र मिश्रा, लखनऊ
४२- प्रफुल्ल कुमार पाठक, बछरावाँ, रायबरेली
४३- भीरू शिवेन्दु शुक्ला, कानपुर
४४- आत्म प्रकाश मिश्र, लखनऊ
४५- समीर बाजपेयी, नैनी, इलाहाबाद

बाहरी प्रान्तों के सदस्य

१- डा० आर० के० त्रिपाठी, देहरादून, उ०ख० मो० ६६३५४७८८१५
२- श्री यतीन्द्र कुमार दीक्षित, दिल्ली मो० ०६८१८४३४३७७
३- श्री राम चन्द्र अवस्थी, ट्राम्बे, मुम्बई मो ०६८२००२६६१४
४- नीरज त्रिपाठी, हरिद्वार, उत्तराखंड
५- अशोक कुमार तिवारी, जबलपुर मो० ०६४०७२६०६३६
६- अशोक कुमार पाठक, होशंगाबाद, म०प्र०
७- वैज्ञानिक अलका दीक्षित, दिल्ली मो० ०११३२३२०२६८
८- श्रीमती सविता दुबे, धारवाड़, कर्नाटक
९- देवेन्द्र कुमार शुक्ला, जयपुर मो० ०६४१४०७५१७४
१०- पं० शिवशंकर तिवारी, सिकन्दराबाद, आन्ध्र प्रदेश मो० ०६४६०११६६४७
११- शिशिर कुमार बाजपेयी, फरीदाबाद, हरियाणा

दूरस्थ देश के सदस्य

डा० विजय शुक्ल सिडनी, आस्ट्रेलिया

मंच पर दी जाने वाली पारितोषिक/छात्रवृत्ति

१. कु० दिव्या पुत्री श्री संजय कक्षा बी०ए० (तृतीय वर्ष) रु० ३०००/-
स्व० श्री उमाशंकर बाजपेई जी
परितोषिक प्रदत्त श्री आशुतोष बाजपेई

२. कु० शिखा पुत्री श्री शैलेन्द्र कक्षा एम०ए० (तृतीय वर्ष) रु० ३०००/-
स्व० रायबहादुर श्री उदित नारायण पाठक जी
परितोषिक प्रदत्त श्रीमती दिव्या बाजपेई

३. कु० लक्ष्मी पुत्री श्री वीरेन्द्र कक्षा VI रु० ३०००/-
स्व० श्री ज्ञानेन्द्र प्रसाद शुक्ल आफ सरकुटिया स्टेट
पारितोषिक प्रदत्त श्रीमती दिव्या बाजपेई

४. कु० श्रद्धा पुत्री श्री राजेन्द्र कक्षा XI रु० ३०००/-
स्व० कु० सोनल मिश्र
पारितोषिक प्रदत्त आर्थो सर्जन आर०के०मिश्र

५. कु० रोली पुत्री श्री रविशंकर कक्षा XI रु० १५००/-
स्व० पं० आर०के० मिश्र "मान भाई"
पारितोषिक प्रदत्त ब्रिगेडियर सीतांशु मिश्र (अ.प्रा०)

६. कु० निहारिका पुत्री श्री दीपक कक्षा XI रु० ११००/-
स्व० श्रीमती आशा त्रिवेदी
पारितोषिक द्वितीय प्रदत्त स्व० न्यायमूर्ति पं० जयशंकर त्रिवेदी जी

७. कु० आकांक्षा पुत्री श्री प्रवीन कक्षा VIII, रु० १०००/-
स्व० श्री बाँके बिहारी मिश्र (पितामह)
पारितोषिक प्रथम डा० एल०पी० मिश्र,
सीनियर एडवोकेट-हाईकोर्ट

८. कु० आकांक्षा पुत्री श्री पुनीत, कक्षा IX रु० १०००/-
स्व० श्री बाँके बिहारी मिश्र (पितामह)
पारितोषिक द्वितीय प्रदत्त डा० एल०पी० मिश्र,
सीनियर एडवोकेट, हाईकोर्ट

९. कु० आकांक्षा पुत्री श्रीमती स्वर्णलता, कक्षा IX, रु० १०००/-
स्व० श्री बाँके बिहारी मिश्र (पितामह) पारितोषिक प्रदत्त
डा० एल० पी० मिश्र, सीनियर एडवोकेट, हाईकोर्ट

१०. कु० प्रीति पुत्री श्री रामगोपाल, कक्षा XI, रु० १०००/-
स्व० श्रीमती विभा बाजपेई
पारितोषिक प्रदत्त स्व० न्यायमूर्ति पं० जयशंकर त्रिवेदी जी

११. कु० आकांक्षा पुत्री श्री राजेश, कक्षा VII, रु० १०००/-
स्व० श्रीमती रामा देवी

पारितोषिक प्रदत्त श्री हरेन्द्र कुमार मिश्र

१२. कु० रोशनी पुत्री श्री मोहनलाल, कक्षा IX, रु० १०००/-
स्व० श्रीमती आशा त्रिवेदी
पारितोषिक प्रदत्त स्व० न्यायमूर्ति पं० जयशंकर त्रिवेदी जी

१३. कु० सोनिया पुत्री श्री शत्रोहन, कक्षा XI,
रु० १०००/-
स्व० श्रीमती दुर्गावती त्रिवेदी
पारितोषिक प्रदत्त स्व० न्यायमूर्ति पं० जयशंकर त्रिवेदी जी

१४. कु० वैष्णवी पुत्री श्री संतोष, कक्षा IX,
रु० ५००/-
स्व० श्रीमती विभा बाजपेई
पारितोषिक प्रदत्त श्री ज्ञान बाजपेई

१५. कु० दिव्या पुत्री श्री गणेशदत्त, कक्षा IX, रु० ५००/-
स्व० श्री जयशंकर मिश्र
पारितोषिक प्रदत्त सुश्री प्रेम प्रकाशिनी मिश्रा, एडवोकेट हाईकोर्ट

१६. ईशान पुत्र विवेक कक्षा IX, माता पिता की स्मृति में द्वारा रु० ५०००/-
श्री गंगा प्रसाद तिवारी भारत मेडिकल कम्पनी

सहयोग के लिये जिनके हम आभारी हैं

श्री राजेंद्र पाण्डेय, एडवोकेट हाईकोर्ट (सिविल एवं सर्विस मैटर्स) रु० ४०००/-
प्रेक्षागृह के किराये हेतु अपने पितामह की स्मृति में
श्री गंगा प्रसाद तिवारी अपने माता पिता की स्मृति में छात्र-वृत्ति रु० ३०००/-
श्रीमती कुमुदिनी मिश्रा, उपचारिका, भवन, बलरामपुर रु० १५००/-
अस्पताल ने छात्रवृत्ति हेतु
श्री विनोद बिहारी जी दीक्षित- समारोह हेतु रु० ५००/-

साइकिल छात्र-वृत्ति प्रदाता

श्री अखिलेश पाठक, पाठकगंज मलिहाबाद लखनऊ रु० २०००/-
श्री गोविन्द सरन निगम एडवोकेट, लखनऊ रु० ५०००/-
श्रीमती शैल मिश्रा रु० ३०००/-
श्री विजय कुमार पांडे, एडवोकेट रु० ३०००/-
गंगा प्रसाद तिवारी, भारत मेडिकल कम्पनी रु० ३०००/-

श्रद्धांजली

श्री संदीप जेतली-स्मृति में पिता स्व० शिव नारायण जेतली रु० २०००/-
डा० परेश शुक्ल-स्मृति में पिता डा० यू०डी०शुक्ला रु० २०००/-
श्रीमती नीरज शुक्ला-स्मृति में पिता श्री राम मिश्र रु० २०००/-

मेरे घर का प्रजातन्त्र

वैभव शुक्ल

भारत एक प्रजातांत्रिक देश है। प्रजातांत्रिक देश की भौगोलिक और राजनीतिक सीमाओं की सुरक्षा के अलावा सामाजिक विचार धारा और वैयक्तिक अभिव्यक्ति भी देश की सेहत के लिए बहुत आवश्यक है। हमारे देश में प्रजातन्त्र मात्र एलेक्शन के समय ही परिलक्षित होता है। चुनाव के बाद सभी राजनीतिक पार्टियों में हाई कमान ही सर्वोपरि हो जाता है। राजनैतिक दल अपने आंतरिक चुनाव के समय एकमत और एकता के नाम पर हाईकमान की चाबुक द्वारा तय होते हैं। इसी तरह ज़्यादातर परिवारों में माँ या पिता भी कमो-बेश डिक्टेटर की भांति अपने परिवार को चलाते हैं। बच्चों के बड़े व स्वतंत्र होने पर इस डिक्टेटरशिप का विरोध होता है और परिवार में एनार्की और विग्रह की स्थिति आ जाती है।

परिवार समाज की सबसे छोटी इकाई है। यदि परिवार में प्रजातन्त्र है तो सामाजिक ढांचा भी प्रजातन्त्र द्वारा सुदृढ़ होगा। ऐसा ही प्रजातन्त्र मेरे परिवार में है। मेरे परिवार में हम दो भाई, उनकी पत्नियाँ, दो बच्चे और हमारे माता-पिता कुल मिला कर आठ सदस्य हैं। बच्चे अबोध हैं उनको छोड़ कर बाकी छः सदस्यों के परिवार में एक-एक वोट है। इस वोट का प्रयोग परिवार के महत्वपूर्ण निर्णयों में परिवार के सभी सदस्यों के वोट के द्वारा होता है। मैं, मेरी पत्नी और बेटे के साथ अपने माता-पिता के साथ लखनऊ में रहते थे। बड़ा भाई, भाभी और पांच वर्षीय भतीजी दूर रांची में यूनिट फेमिली के रूप में रहते थे। इस प्रकार मेरे परिवार में संयुक्त और न्यूक्लियर परिवार का समावेश है। मेरे पिता का मानना है की यदि इंग्लैण्ड ने सुदूर स्थित अमेरिका को वोट का अधिकार दिया होता तो संभवतः अमेरिका इंग्लैण्ड से अलग न होता। इसीलिए पारिवारिक निर्णयों में भाई और भाभी का वोट दूरभाषा पर लिया जाता है।

हमारे घर की डाइनिंग टेबल परिवार की संसद है। इसके स्पीकर मेरे पिता हैं। परिवार का सबसे महत्वपूर्ण नियम जिसका सभी को पालन करना है कि सुबह के नाश्ते और रात के खाने पर सभी सदस्यों का उपस्थित रहना आवश्यक है। यदि किसी की खाने की इच्छा नहीं है तो भी टेबल पर उसकी उपस्थिति अनिवार्य है। इस प्रकार प्रत्येक सदस्य दिन में दो बार साथ मिल बैठ कर परिवार को समय देते हैं। इस दौरान दूरदर्शन का पूर्ण निषेध है। इससे सदस्यों के बीच संवादहीनता की स्थिति नहीं बनने पाती। विचारों के आदान-प्रदान के साथ मनोरंजक वार्ता भी होती रहती है, और समय-समय पर ठहाके भी लगते रहते हैं। परिवार में होने वाले कार्यक्रमों की योजना भी वहीं तय होती है। यदि कोई संशय है तो यहीं निपटाया जाता है। बहस की स्थिति उत्पन्न होने पर स्पीकर महोदय हाउज़ एडजर्न कर देते हैं। कुछ अंतराल के बाद वही मामला ठंडे दिमाग से सुलझा लिया जाता है।

मेरे भाई की अरजेंड मैरिज, मेरी शादी मेरी पसंद की, जन्म लेने वाले शिशुओं के नाम से लेकर कौन सी कार खरीदनी है- यह सारे निर्णय इसी पारिवारिक संसद में ही लिए गये।

डाक्टर कहते है शिशु को छः महीने तक ऊपर का आहार नहीं देना चाहिए। हम सभी इसी सलाह पर दृढ़ थे, परंतु परिवार के सबसे छोटे सदस्य जन्म के पांचवें महीने ही खाने की लालसा करने लगा। मेरी माँ ने व्यवस्था दी कि जिन परिवारों में स्वास्थ्य और सफाई का ध्यान रखा जाता है वहाँ छः महीने की बंदिश बेमानी है। चार महीने के बाद यदि बच्चा मांगता है तो ऊपर का आहार दिया जा सकता है। डाक्टर की राय या माँ का अनुभव? किसको वरीयता दी जाय? संसद में प्रस्ताव रखा गया। भईया और भाभी ने रांची से वोट किया। माँ के अनुभव को मान देते हुए हम सभी ने उनकी तरफ वोट किया। पिता डाक्टर होते हुए भी ५ के मुक़ाबले १ वोट से हार गये। बच्चे को आहार दिया गया जो उसे स्वास्थ्यकर साबित हुआ।

***

गत होली मिलन समारोह का कवरेज

ब्राह्मण बालिकाओं को प्रोत्साहन के लिए दी गयी आर्थिक सहायता

शिविर में पहुंचे 100 से ज्यादा मरीज

NBT

■ संवाददाता, लखनऊ

किसी को डायबिटीज थी तो किसी के कूल्हे का दर्द। अस्पताल जाने की फुर्सत नहीं लिहाजा मर्ज बढ़ता गया। रविवार को ऐसे करीब 100 से ज्यादा मरीज टाइम्स ऑफ इंडिया की फैजाबाद रोड स्थित प्रेस में आए और हार्ट, हड्डी, न्यूरो, पेट और बाल रोग समेत कई गंभीर बीमारियों के लिए रविवार को आयोजित मुफ्त परामर्श शिविर में चेकअप कराया।

बलरामपुर अस्पताल के विशेषज्ञ डॉक्टरों के सहयोग से लगे शिविर में सबसे ज्यादा हार्ट और डायबिटीज के मरीज आए। इस दौरान मरीजों की ईसीजी, शुगर टेस्ट और ब्लड प्रेशर की मुफ्त जांचें भी हुईं। सुबह दस बजे से एक बजे तक चले शिविर में कार्डियोलॉजिस्ट, ईएनटी, चेस्ट, ऑर्थोपेडिक, गैस्ट्रोलॉजिस्ट और बाल रोग विशेषज्ञों ने मरीजों को परामर्श दिया।

टाइम्स फाउंडेशन की तरफ से आयोजित चिकित्सा शिविर में पहुंचे लोग

अखिल भारतीय कान्यकुब्ज समाज का होली मिलन समारोह राय उमानाथ बली प्रेक्षागृह में हुआ, जहां सभा की ... का भी विमोचन किया गया। इस मौके पर शहर के कलाकार रवि सारस्वत ने पुराने फिल्मी गानों पर सभी का दिल

होली मिलन समारोह की धूम

अखिल भारतीय कान्यकुब्ज प्रतिनिधि सभा के होली मिलन समारोह में सम्मानित छात्राएं मुख्य अतिथियों के साथ।

कैसरबाग स्थित रायउमानाथ बली प्रेक्षागृह में अखिल भारतीय श्री कान्यकुब्ज प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में आयोजित होली मिलन समारोह का उद्घाटन आईपीएस अधिकारी उमाशंकर ने सरदार भगत सिंह के चित्र पर माल्यार्पण व दीप जलाकर किया। इसके बाद छात्राओं ने स्वागत गीत व सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये। इस मौके पर मुख्य अतिथि ने दो दर्जन छात्राओं को साइकिल व आगे की शिक्षा जारी रखने के लिए सहायता राशि वितरित की। इस मौके पर कान्यकुब्ज वाणी पत्रिका, शिल्पी खंड काव्य का विमोचन भी किया गया। इस मौके पर न्यायमूर्ति दिनेश कुमार त्रिवेदी, उपेन्द्र मिश्र, कृपाशंकर दीक्षित, गिरिजा शंकर मिश्र, अमरेन्द्र कुमार त्रिपाठी, कु. प्रेम प्रकाशिनी मिश्र, जितेन्द्र कुमार त्रिपाठी, प्रेमनरायण मिश्र, डा. आरके मिश्र, डा. डीएस शुक्ल, हरेन्द्र कुमार मिश्र, अभिनव त्रिवेदी ... गणमान्य लोग मौजूद थे।

इण्डिया पयामे इन्सानियत फोरम द्वारा आयोजित बाढ़ पीड़ित क्षेत्र सीतापुर में आयोजित चिकित्सा शिविर

दंत चिकित्सक

महिला रोग विशेषज्ञ

शल्य चिकित्सक

न्यूरो व हृदय रोग विशेषज्ञ

रजिस्ट्रेशन

समुचित निःशुल्क औषधियाँ

ईश्वर की खोज

परा शुक्ला शर्मा

इक दिन सोचा दुनिया से पूछें,
यह ईश्वर कहाँ पर रहता है।
जीवन देने-लेने वाला, दिखने में कैसा लगता है।
दुनिया वालों ने मुझसे पूछा- धर्म तेरा क्या है।
इंसानियत धर्म है मेरा, मैंने जब उनको बतलाया।
इस पर उन्होंने हँसते हुए मुझे समझाया-
तू यदि हिन्दू है तो, भगवान तेरा है मंदिर में।
तू यदि है मुस्लिम, तो खुदा तेरा है मस्जिद में।

है ईसाई, सिक्ख अगर, तो ढूंढ चर्च, गुरुद्वारे में।
मैं गया हर जगह पर, मुझको ईश्वर नहीं मिला।
खोया मैंने सब-कुछ अपना, गिरते-पड़ते खाते ठोकर।
मैं था तो इंसान, पर अब तो कुछ भी नहीं रहा।
धर्म-कर्म के चक्कर में पड़कर, ये भी भूल गया कि-
मैं हूँ इंसान और मैं ही हूँ भगवान।

सब कुछ मैं ही मैं हूँ, पर अब तो मेरा मन,
हिन्दू-मुस्लिम के चक्कर में उलझ गया।
न खुदा का ही बन पाया, न राम का ही रह गया।
मेरे पावन मन-मंदिर में कोई दीपक नहीं जल पाया।
किसी दीन का हुआ नहीं तो दुनिया वालों ने, मुझको
'पागल' ठहराया।

आइसिस: विश्व सभ्यता के लिए नया संकट

के० एन० मिश्रा
बड़ौदा, गुजरात

अमेरिका द्वारा ईराक पर हमले ने पूरे मध्यपूर्व और अब लगता है, पूरे मुस्लिम समाज के पुराने ज़ख्मों को खोल दिया है। दशकों से चले आ रहे, विभिन्न संप्रदायों के बीच का समन्वय टूट गया है और नए अस्थिर माहौल में अपना प्रभुत्व जमाने के लिए, विभिन्न संप्रदाय हर प्रकार का प्रयत्न कर रहे हैं।

आइसिस का उदय, कट्टर वहाबी सुन्नी तत्वों द्वारा, धर्म का राजनैतिक हथियार के तौर पर उपयोग कर, विश्व में शरीयत आधारित, एक राज्य स्थापित करने का प्रयास है। धर्म का राजनैतिक उपयोग मुस्लिम समाज में कोई नई घटना नही हैं। पहले भी राजनैतिक उद्देश्यों से जिहाद का नारा दिया गया है। ऐसा विशेष कर उन परिस्थितियों में किया गया है जब मुस्लिम संप्रदाय का राजनैतिक प्रभाव घटता है और समाज में हताशा की भावना फैल जाती है। इस मानसिकता को समझने के लिए हमें १३वीं शताब्दी में जाना पड़ेगा।

१३वीं शताब्दी में हलाकू खां के नेतृत्व में मंगोल सेना ने बगदाद में तबाही मचा दी थी और खलीफा के साम्राज्य पर अधिकार जमा लिया था। लगभग इसी दौरान, क्रुसेड में फ्रांस और इंग्लैण्ड के नेतृत्व में ईसाईयों ने स्पेन, हेगरी आदि से मुस्लिमों को खदेड़ कर फिर से ईसाई धर्म का शासन स्थापित कर दिया था। अतः मुस्लिम समाज में निराशा और हताशा का माहौल था। ऐसे में मिश्र के एक इस्लामी विचारक, इब्न तामिया ने, एक धार्मिक फतवा, जो मार्गिन फतवा के नाम से जाना गया, जारी किया। मार्गिन फतवा में मुस्लिमों को कहा गया कि उनका धार्मिक कर्तव्य है कि वे मंगोलों को मारें क्योंकि वे मुस्लिम समाज को नुकसान पहुंचा रहे है और क्रूसेडरों को मारें क्योंकि वे काफिर है और उन को मारना मुसलमानों का कर्तव्य है।

मज़े की बात है कि मंगोल भी मुस्लिम ही थे लेकिन क्यूंकि उन्होंने खलीफा शासित साम्राज्य को तहस नहस कर दिया था, उनके खिलाफ फतवा जारी किया गया। इस फतवे के बावजूद मुस्लिम समाज ने इब्न तामिया की बातों पर कोई ध्यान नही दिया। वास्तव में खलीफा के आदेश पर, जिसके लिए यह फतवा जारी किया गया था, इब्न तामिया को गिरफ्तार कर जेल में डाल दिय गया। क्योंकि

एक दूसरा राजनैतिक विचार यह भी था कि यह तो लड़ाई है, इसमें हार जीत दोनों होती है। यदि हम अधिक संगठित हो जाएँगे तो कल फिर अपना प्रभुत्व वापस पा लेंगे।

इब्न तामिया का महत्व इसलिए है कि इसी से प्रभावित हो कर सऊदी अरब में १७०३ में जन्में अब्दुल अल अहद वहाब ने वहाबी विचारधारा को जन्म दिया जो आज सऊदी अरब का शासन द्वारा मान्यता प्राप्त संप्रदाय है। १७३० में अब्दुल अलअहद वहाब की मुलाकात मदीने में भारत से गये एक प्रमुख इस्लामी विचारक वली उल्लाह से हुई, जिससे प्रभावित हो कर वली उल्लाह ने भारत में अंग्रेज़ी शासन और मराठों के सामने जिहाद की अपील की। वली उल्लाह ने भारत में मराठों का प्रभुत्व खत्म करने के लिए, अफगानिस्तान के शासक अहमद शाह अब्दाली को गुप्त रूप से एक पत्र भेजा जिसमें उसने अब्दाली से भारत आ कर मराठों पर आक्रमण करने के लिए अपील की। वली उल्लाह के ही शिष्य मुहम्मद कासिम नवातवी ने देवबंद मदरसे की स्थापना की, जिसका भारत और पाकिस्तान में काफी प्रभाव है।

तालिबान, ओसामा बिन लादेन, अजमान जवाहिरी, अबू बकर अल बगदादी आदि, इन्ही इब्न तामिया के सिद्धांतों को मानते हैं और जिहाद का नारा बुलंद करते है। आइसिस का उदय इसी जिहादी श्रृंखला की एक कड़ी है।

आइसिस की शुरूआत, २००३ में अमेरिका द्वारा ईराक पर कब्ज़े के बाद, शिया समुदाय के बहुमत वाली सरकार के शासन में आने के साथ हुआ। ईराक की आबादी में ६० प्रतिशत शिया मुस्लिम, ३० प्रतिशत सुन्नी अरब और लगभग १० प्रतिशत कुर्द हैं जो हैं तो सुन्नी मुस्लिम ही लेकिन सुन्नी अरबों से अपना अलग अस्तित्व रखते हैं।

शिया बहुल देश होने के बावजूद, ईराक में सद्दाम हुसैन के नेतृत्व में पिछले चार दशकों से सुन्नी मुस्लिमों का शासन रहा। नूर अल मलकी के नेतृत्व में शिया बहुल सरकार चुने जाने के बाद, सनू २००६ में अमेरिकी आधिपत्य का विरोध कर रहे कई सुन्नी विद्रोहियों और सुन्नी अरब कबीलों के प्रतिनिध्यों ने एक पारंपरिक अरब शपथ ''इल्फ अल मुयबिन'' (महकते लोगों की कसम) ली, जिसमें उन्होंने विदेशी ताकतों और शिया शासन से ईराक को मुक्त करने की कसम खाई। शपथ लेने वालों में अबू बकर अल बगदादी समेत आइसिस के कई

नेता मानने की अपील की, और आईसिस द्वारा शासित प्रदेश को ''इस्लामिक साम्राज्य का'' नाम दिया। आइसिस के प्रवक्ता ने इस्लामिक साम्राज्य की स्थापना का वर्णन ''सपना जो हर मुस्लिम के हृदय में बसता है'' और ''सदियों का भुलाया हुआ कर्तव्य'' कह कर दिया और कहा कि अब विश्व के सभी मुसलमानों को खलीफा का वफादार होना चाहिए। कोशिश यह है कि अल कायदा, तालिबान, लश्करे तैयबा, जैशे मुहम्मद जैसे सभी संगठन बगदादी के नेतृत्व वाले आइसिस में शामिल हो जाँए।

आज सीरिया और ईराक के काफी बड़े भूभाग में आइ एस स्थापित हो चुका है। सीरिया में आईसिस, अमेरिका और यूरोप की असद सरकार के विद्रोहियों के मदद के लिए दिए जा रहे सहयोग और हथियारों के जोर पर पनपा। सीरिया के राष्ट्रपति असद अलवायत समुदाय के हैं, जो शिया इस्लाम की एक शाखा है। देश, ६५ प्रतिशत आधिपत्य, पिछले लगभग ५० सालों से, राष्ट्रपति असद के परिवार का है। असद के पिता हाफिज, सेना, जिसमें अलवायत और शिया लोगों की बहुतायत है, के जोर पर सुन्नी मुस्लिमों के विद्रोह को दबा दिया करते थे, जिसमें भारी संख्या में सुन्नी मुस्लिम मारे भी गए। १९९० में हुए विद्रोह में लगभग १०००० सुन्नी मुस्लिमों के मारे जाने की बात कही जाती है। २०१२ में जब पूरे मध्यपूर्व, टयूनीशिया, लीबिया, मिश्र, यमन आदि में तत्कालीन शासकों के सामने आंदोलन छिड़ा तब सीरिया भी उससे अछूता नही रह सका। कुछ समय तो राष्ट्रपति असद ने संयम से काम लिया परंतु जब विरोध थमने का नाम लेता नही दिखा तब उन्होंने, अपने पिता की तरह ही, सेना द्वारा दमन, का सहारा लिया। मुस्लिम देशों में सेना, चाहे पाकिस्तान की हो या सीरिया, भारतीय सेना की तरह अपने देश और विदेश में कोई फर्क नही करती। अपने ही देश में भी, तोपखानों, टैंकों, बमवर्षक और लड़ाकू विमानों का खुल कर, बिना हिचक, उपयोग होता है। अतः सीरिया की सेना ने भी तोपखानों और विमानों द्वारा आंदोलनकारियों के इलाकों पर भारी बमबारी की। जवाब में आंदोलनकारी, विद्रोहियों में बदल गए। सऊदी अरब और कतार, जहाँ सुन्नीयों का शासन है, ने विद्रोहियों को हथियारों और पैसों से मदद देनी शुरू कर दी। विद्रोहियों ने सीरिया के कई शहरों पर अधिकार जमाने में सफलता पाई। लेकिन राष्ट्रपति असद को सत्ता से हटाया नहीं जा सका। वायु सेना से भारी बमवर्षा कर अमेरिका और नाटो देशों ने सीरिया पर प्रतिबंध और

विद्रोहियों की हथियारों से मदद करनी शरू कर दी। यह देखकर शिया देश ईरान भी चुप नही रहा। उसने राष्ट्रपति असद को तो मदद दी ही , लेबनान से ईरान समर्थित संगठन हिजबोल्ला को सीरिया मदद के लिए भेज दिया। इस प्रकार, सीरिया, सभी प्रकार के जिहादियों के लिए कुरूक्षेत्र का मैदान बन गया। ईराक, अफगानिस्तान, पाकिस्तान, यूरोप और अमेरिका तक से जिहादी आकर सीरिया में जमा होने लगे। इसी जमावड़े में से अल कायदा के पूर्व जिहादी अबु बकर अल बगदादी ने आइसिस की नींव डाली।

जल्द ही आइसिस का उत्तरी सीरिया के एक बड़े इलाके पर अधिकार हो गया। अब बगदादी ने ईराक की ओर रूख किया। ईराक के अनबार, मोसुल आदि प्रांत सुन्नी बहुल इलाके हैं। अमेरिकी सेना ने सुन्नी कबीला सरदारों से सहयोग कर, अलकायदा, जिसने इन क्षेत्रों में अपनी पैठ बना ली थी, को इलाके से भगा दिया था और इस प्रकार ईराक में कुछ हद तक शांति व्यवस्था कायम की जा सकी थी। परंतु २०१० में हुए चुनावों में चुनें गए राष्ट्रपति श्री नूरी अल मलकी ने सुन्नी संप्रदाय के साथ सहयोग करने के बजाय उन्हें निशाना बनाना शुरू कर दिया। पहले तो उन्होंने अमेरिकी सेना की टुकड़ी, जो अमेरिका ईराकी सेना की सहायता के लिए ईराक में तैनात रखने के लिए तैयार था, के लिए अमेरिका के साथ संधि पर हस्ताक्षर करने से मना कर दिया, लिहाजा अमेरिका ने अपनी पूरी सेना ईराक से वापस बुला ली। फिर उन्होंने सेना और प्रशासन में सुन्नी अधिकारियों को निशाना बनाना शुरू कर दिया।

नतीजे में पूरे सुन्नी बहुल इलाकों में विरोध प्रदर्शन होने लगे, जिनमें कभी कभी दो चार आइसिस के भी झंडे दिखाई देते थे।

इस प्रकार आइसिस के लड़ाकों ने जब इराक की ओर रूख किया तो ज़मीन उनके अनुकूल तैयार थी। स्थानीय सुन्नी कबीलों ने लड़ाकों का साथ दिया और ईराकी सेना, जिसके बल पर अमेरिका ने ईराक में शांति व्यवस्था बनाए रखने का सपना देखा था, ने लड़ने के बजाए पलायन में अपनी अधिक कुशलता दिखाई। पहले फलुजा फिर मोसल का पतन हुआ। तैनात ईराकी सेना ने अपने हथियार भी ले जाने की ज़हमत नही उठाई। आइसिस के हाथ बेशुमार अमेरिकी अत्याधुनिक हथियार और ईराक के प्रमुख तेल क्षेत्र लगे।

आज आइसिस की निगाह में विश्व का पूरा मुस्लिम समाज है और पूरे विश्व में जिहादी शासन लागू करने का लक्ष्य। सऊदी अरब, जिसने आइसिस के

जिहादियों को पैसे और हथियार से सीरिया में असद की शिया बहुल सरकार को गिराने के लिए भरपूर सहायता दी, आज खुद बगदादी के निशाने पर है। हाल में ही स्वयंभू खलीफा अबू बकर अल बगदादी ने, सऊदी राजपरिवार और शासन के खिलाफ हमले की घोषणा की। सऊदी अरब ने आइसिस को एक आतंकवादी संगठन घोषित किया हुआ है और अमेरिका के नेतृत्व में किए जा रहे हवाई हमलों में, सऊदी वायुसेना शामिल है। इसके ही पहले, सन २००३ के बाद पहली बार, सऊदी अरब में शिया नागरिकों पर हमले करने की घटनाएँ हुई। सऊदी गृह मंत्रालय के प्रवक्ता मेजर जनरल मंसूर तुर्की ने रायटर से अपने एक वक्तव्य में कहा आइएस और अलकायदा दोनों ही सऊदी अरब में आतंकवादी कारवाइयों को अंजाम देने की भरपूर कोशिश कर रहे हैं। वे हमारे समाज में भेद फेलाने और शिया सुन्नी समुदाय में संघर्ष फेलाने की कोशिश कर रहे हैं।"

बगदादी ने, भारतीय उपमहाद्वीप के मुस्लिमों को भी अपने संगठन में शामिल होने और जिहाद में साथ देने की अपील की थी। वास्तव में मध्यपूर्व के बाद आए एस का सबसे ज्यादा खतरा पाकिस्तान और अफगानिस्तान को ही है। दोनों ही देशों में जिहादी संगठनों की मरमार है और उनमें से कई ने आइ एस को अपना समर्थन घोषित भी किया है। अफगानिस्तान में नूरिस्तान प्रांत के अब्दुल रहीम मुस्लिम दोस्त और कुनार के मौलवी अब्दुल कहार प्रमुख है। पाकिस्तान में भी तहरीके तालिबान पाकिस्तान के शाहिदुल्ला शाहिद और ६ दूसरे कमांडरों ने आइ एस को अपना जिहादी संगठन हिजबुल तहरीर ने भी आइ एस को समर्थन देने की घोषणा की है।

आइ एस का शासन कैसा होगा यह जेम्स फोले और स्टीवेन सोटलोफ, दो अमेरिकी पत्रकार, जिन्हे टी.वी. कैमरे के सामने जिबह किया गया था, से पता चलता है। आइ एस कब्जा किए गए इलाकें के लोगों के साथ कैसा बर्ताव किया जायगा इसका उदाहरण है- उत्तरी ईराक के सिंजार के इलाके पर जब आइ एस के लड़ाकों ने कब्जा किया तब सभी पकड़े गए पुरूषों को मार दिया गया और लगभग २००० स्त्रियों और बच्चों में, २० प्रतिशत (पांचवा हिस्सा) को खलीफा के पास भेज दिया गया, और बाकियों को लड़कों ने आपस में बांट लिया।

आइ एस का उदय, शायद आज, विश्व सभ्यता के लिए सबसे बड़ी चुनौती है।

✦✦✦

बीट कांस्टेबल

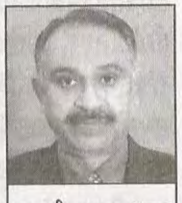

डा० डी० एस० शुक्ला

मुंबई का २६/११, गुजरात सीरियल ब्लास्ट, मुज़फ्फरनगर, सहारनपुर दंगा। सभी जगह इटेलिजेंस-फेल्योर। आज इतनी आधुनिक टेक्नालाजी के बावजूद इटेलिजेंस-फेल्योर? ५० के अंतिम दशक (अपनी किशोरावस्था) की एक सुनी कहानी याद आ गई। यह किस्सा (*Gossip*) मेरे रेलवे कालोनी की सहपाठी मित्र-मंडली बड़ा रस लेकर सुनाती थी। आज यह इंटेलिजेन्स-फेल्योर की गाथा सुनकर महसूस होता है कि उस समय की पुलिस अपराध अन्वेषण मे कितनी कारगर थी।

पुराने समय मे एल आई यू (***local intelligence unit***) का एक कर्मचारी जिसे 'बीट-कांस्टेबल' कहते थे, होता था। वह थाने से सम्बद्ध तो रहता था पर हफ्ते में दो बार जिले के पुलिस कप्तान उससे अकेले में अवश्य मिलते थे। बीट कांस्टेबल के इनपुट्स पर कप्तान साहब निर्णय लेते थे और जिला-मजिस्ट्रेट की सलाह से कार्यवाही करते थे। देश-विभाजन के बाद दंगे होना मामूली बात मानी जाती थी पर बीट कांस्टेबल की सूचनाओं से ज़्यादातर दंगे शुरू होने से पहले ही दबा दिये जाते थे। किस मोहल्ले में कितने आदमी रहते हैं, परिवार के कितने सदस्य हैं, किसके यहाँ कितने मेहमान आए, कहाँ से आए यह सब बीट कांस्टेबल को ज्ञात होता था। किसी भी संदिग्ध व्यक्ति का आगमन कप्तान साहब को पता चल जाता था। जो किस्सा मेरे सहपाठियों ने सुनाया वह परिवार की इतनी अंतरंग घटना से संबन्धित है जिससे कि उस परिवार के पुरुष सदस्य भी अनभिज्ञ थे।

वह दौर था जब गर्भ-पात अपराध माना जाता था। थाने में सूचना मिली कि एक ५-६ महीने का नर भ्रूण कचरे के डब्बे में पाया गया। जाहिर था कि अवैध गर्भ-पात हुआ था। विवेचनाधिकारी ने पोस्ट-मार्टम कराया उसमें भी गर्भ-पात पुष्ट हुआ। डाक्टरी रिपोर्ट का एक वाक्य का विवेचक ने विशेष संज्ञान लिया- भ्रूण का रंग काफी गोरा था। इस तथ्य से विवेचक ने निष्कर्ष निकाला कि

भ्रूण यूरोपियन रक्त की महिला का हो सकता है। शहर मे कोई यूरोपियन नहीं था। केवल रेलवे-कालोनी मे कुछ एंग्लो-इंडियन परिवार रहते थे। अंग्रेजों के देश छोड़ जाने के बाद भी तब एंग्लो-इंडियन लोगों को सम्मान से देखा जाता था। जाहिर है कि विवेचक को बहुत सावधान रहना होगा। जरा सी बात पर वह लोग सीधे कलक्टर साहब तक पहुँच जाते थे।

विवेचक ने उस कालोनी की महिला सफाई कर्मचारी से संपर्क किया। तब शौचालय की सफाई हेतु कर्मचारी होते थे। इन महिला कर्मचारियों को कालोनी की महिलाओं की नियमित माहवारी के बारे में ज्ञान होता था। विवेचक के पूछने पर महिला कर्मचारी ने बताया कि अमुक परिवार में किसी महिला की माहवारी कुछ महीने बंद थी। पूछने पर पुरुष सदस्यों को इसकी जानकारी नहीं थी। पर सख्ती करने पर महिलाओं ने स्वीकार किया कि उनकी पुत्री के कदम बहक गए थे। लड़की के मेडिकल मे भी गर्भ-पात की पुष्टि हुई। लड़की जो कि बालिग थी तथा वह मिडवाइफ जिसने गर्भ-पात कराया था दोनों को सजा हुई।

आजकल बीट-कांस्टेबल का चलन शायद खत्म हो गया। पुलिस अधिकारी माननीयों की सेवा मे व्यस्त रहते हैं। इंटेलिजेंस हाई टेक हो गई। एलेक्ट्रोनिक सर्वेलेंस का फैशन है। पर मानव बुद्धि अभी भी सबसे ज़्यादा विश्वसनीय है।

***

दृष्टिकोण-

न रख उम्मीद-ए-वफा किसी परिंदे से जब पर निकाल आते हैं
तो अपने भी आशियाना भूल जाते हैं।

"इकबाल"

सकारात्मक भाव-

उड़ने दे इन परिंदों को आजाद फिज़ा मे गालिब
जो तेरे अपने होंगे लौट आएंगे।

"मिर्ज़ा गालिब"

शिखंडी– महाभारत का उपहास्य परंतु संवेदनशील पात्र

डा० डी० एस० शुक्ला

हरिवंश राय 'बच्चन' ने अपनी जीवनी में लिखा कि प्रत्येक मानव में स्त्री और पुरुष दोनों के गुण होते हैं। प्रत्येक नर में स्त्री और प्रत्येक स्त्री में पुरुष भाव व तत्व होते हैं। इन्हीं पुरुष और स्त्री भाव के सम्मिश्रण के विभिन्न अनुपात से पुरुष या स्त्री के स्वभाव का निर्माण होता है। पुरुष भाव में दृढ़ता, कठोरता, अधिक व्यावहारिक (प्रैक्टिकल) होते हैं वहीं स्त्री भाव कोमल, भावुक, करुणा से पूरित, व दिमाग से ज़्यादा दिल से कार्य करने वाले होते हैं। बच्चन जी के अनुसार खुद उनमें और अमिताभ में स्त्री गुणों की प्रचुरता थी वहीं तेजी बच्चन में पुरुष गुणों की अधिकता थी। यही कारण 'बच्चन जी' और अमिताभ ने कला और साहित्य में स्थान बनाया वहीं कोयले से लेकर कौनसी कार खरीदनी है तेजी ही तय करती थीं।

चिकित्सा-शास्त्र का विद्यार्थी होने के कारण मैं इसे अधिक स्पष्टता से समझ सकता हूँ। मनुष्य के स्वभाव को निश्चित करने में दो हार्मोन्स- टेस्टोस्ट्रान (पुरुष), और ईस्ट्रोजेन (स्त्री) हारमोन की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। पुरुषों में टेस्टोस्ट्रान हारमोन वृषण (टेस्टिस), व ईस्ट्रोजेन स्त्री के अंडाशय (ओवरी) में बनता है, लिंग-भेद के लक्षणों का कारण हैं। परंतु मानव की एड्रीनल ग्रंथि (यह गुर्दे के ऊपरी हिस्से पर स्थित) में स्त्री और पुरुष दोनों प्रकार के हारमोन का स्राव करती है। जिससे प्रतीक स्त्री और पुरुष में उभय-लिंगी हारमोन वातावरण (हार्मोनल मिलियु, hormonal milieu) सृजित करते हैं। प्रत्येक स्त्री में पुरुष एवं प्रत्येक पुरुष में स्त्री तत्व होने की वजह से ही संभवतः, हमारे शास्त्रों में 'अर्ध-नारीश्वर' की परिकल्पना की गई है। शायद बच्चन जी इशारा भी इसी तथ्य की ओर होगा।

आधुनिक विज्ञान में जिसे मस्तिष्क का अवचेतन कहते हैं, संभवतः भारतीय दर्शन में इसको ही 'मन' कहते है। इसी अवचेतन या मन के सहारे क्षण भर में अरबों मील की दूरी तय कर सकता है। उसकी यह 'मानस यात्रा' उसे भूत और भविष्य में अबाध आने-जाने की क्षमता प्रदान करती है। यह किसी काल या देश में जाकर अपनी कल्पना के सहारे ऐसा वातावरण रच सकता है जैसे वह घटना चल-चित्र की भांति आँखों के सामने घट रही हो।

मुझे आश्चर्य नहीं हुआ जब मेरा मन मुझे पाँच सहस्राब्दी पीछे त्रेतायुग के अंतिम चरण महाभारत काल में जा पहुंचा......

द्रुपद का ज्येष्ठ पुत्र पंचाल देश का युवराज आज अन्यमनस्क था। आज उसका राज्यसभा में जाने का मन नहीं किया, उपवन में आ गया। उसका भावुक

मन विचार कर रहा था-

मैं सम्राट द्रुपद का ज्येष्ठ पुत्र जिसके जन्म लेते ही उसका मुंडन संस्कार कर दिया गया। परंतु पूरा मुंडन नहीं किया गया। उसके 'गर्भ-केशों' की 'शिखा' इस प्रतिज्ञा के साथ छोड़ दी गई थी की एक दिन यह पंचाल कुमार अपने शत्रु राज्य हस्तिनापुर के शीर्ष-पुरुष भीष्म का वध करेगा। हस्तिनापुर द्वारा किए गए अपमान का प्रतिशोध लेगा। तभी से उसका नाम 'शिखंड' (मुंडन संस्कार में छोड़ी गई चोट) धारी इति 'शिखंडी' प्रचलित हुआ। उसके बारे में प्रचलित किया गया कि शाल्व राज की पुत्री 'अम्बा' है जिसने भीष्म के वध हेतु हवनाग्नि में शरीर त्यागा था। वह जैसे-जैसे बड़ा हुआ उसका शरीर भी बलिष्ठ होता गया हाँ अपने भाई धृष्टद्युम्न और भीम जैसी उसकी देह-यष्टि नहीं थी। पर इन दोनों के बराबर शरीर तो पंचाल में किसी का नहीं था। फिर उसे ही क्यों ही क्यों कम आँका जाता था? उसे केवल युद्ध व्यूह में 'रथी' का स्थान मिलता था, जबकि यज्ञ-पुत्र 'धृष्टद्युम्न' को व्यूह के मुख्यभाग पर 'महारथी' का स्थान मिलता था। हाँ यह बात भी सत्य है कि उसकी रुचि आखेट, अखाड़े, गदा में न होकर चित्रकारी, गायन व नटराज की आराधना में अधिक थी। अस्त्रों में उसे धनुष-बाण अच्छे लगते क्योंकि शत्रु पर दूर से ही संधान किया जा सकता था। आहत की पीड़ा और कष्ट से परिचित होने का अवसर कम था। परंतु फिर भी इससे उसे अपने कथित भ्राता धृष्टद्युम्न से ईर्ष्या नहीं होती थी। होगी भी क्यों। उसकी कोमल प्रवृत्तियों के कारण ही द्रुपद ने यज्ञ द्वारा द्रोणाचार्य की मृत्यु हेतु धृष्टद्युम्न, व हस्तिनापुर से प्रतिशोध हेतु योग्यसेना नाम की कन्या प्राप्त की जो 'द्रौपदी' के नाम से कौरवों और उनके राज्य के विनाश का कारण बनीं। उन दोनों के जन्म के बारे में उसने यही बातें जानी। वह जब गुरुकुल से पढ़ कर लौटा तभी उसे द्रौपदी व धृष्टद्युम्न के बारे में पता चला। भाई धृष्टद्युम्न के अंदर मानो हमेशा ज्वालामुखी धधकता रहता। उसका वर्ण भी निरंतर प्रतिशोध में जलने से धूसर हो गया था। उसे किसी ने मुस्कराते हुए नहीं देखा। और द्रौपदी- शायद उसे भी जन्म से ही प्रतिशोध का विष घुट्टी में पिलाया गया। वह अत्यंत आकर्षक और सुंदर होते हुए भी श्याम वर्ण कि थी। आज शिखंडी के दिल में यही विचार आ रहे थे कि किस प्रकार बच्चों के जन्मदाता स्वयं ही अपने द्वेष के कारण अपने बच्चों से उनका बचपना छीन कर प्रतिशोध कि भट्टी में झोंक देते हैं।

एकाएक उसका ध्यान फिर राजसभा की ओर गया जहां पांडवों के पक्ष में कौरवों से युद्ध की तैयारी चल रही थी। परंतु वहाँ वीर-रस कि जगह रौद्र और वीभस्तता का वातावरण हो गया था। भीष्म दुःशासन का सीने को फाड़ कर रक्त पीने की प्रतिज्ञा दुहरा रहा था। सभा विचार रही थी कि सशास्त्र द्रोणाचार्य का वध असंभव है तो क्यों न उस पर धृष्टद्युम्न तब प्रहार करे जब वह निहत्था हो। शिखंडी इससे ज़्यादा न सुन सका और उपवन में आ बैठा। पर सभा छोड़ते समय सभी के

चेहरे पर उपेक्षा की मुस्कान उससे छिप न सकी। वह आहत हो गया। पता नहीं लोग उसका अपमान क्यों करते हैं? पीठ पीछे उसका उपहास करते हैं। पर उसे उन पर क्रोध नहीं आता। व्यक्ति निरंतर मिलने वाली पीड़ा का अभ्यस्त हो जाता हाँ उसे यदि क्रोध आता था केवल भीष्म पर। भीष्म का नाम सुनते ही उसके शरीर में दावानल धधक उठता। हाथ बार बार धनुष पर चला जाता क्योंकि उसकी पीड़ा का कारण भी तो भीष्म ही था- कहते हैं जब भीष्म को गुप्तचरों ने बताया कि उनके मारने के लिए पंचाल में एक बालक ने जन्म लिया है तो वह हंस कर बोला ''क्या द्रुपद के यहाँ साक्षात अम्बा ने जन्म लिया है? और यदि ऐसा है तो वह पुरुष न होकर 'किंवा-पुरुष' (हिजड़ा) ही होगा। यह कह कर भीष्म ठठा कर हंस पड़ा''। उसी दिन से उसे अर्ध-पुरुष माना जाने लगा। और 'शिखंडी' नाम 'किंवा-पुरुषो' का पर्याय बन गया। यहाँ तक कि स्वयं उसके श्वसुर हिरणयवर्मा को उसके पौरुष के बारे में संदेह हो गया। किस प्रकार उसकी पत्नी ने अपने पिता को आश्वस्त किया! यह सोच कर उसे बड़ी ग्लानि होती। भीष्म का यह हल्का विनोद उसके जीवन को अभिशप्त कर गया। संभव है कि यदि कभी भीष्म का उससे सामना हो तो वह बगैर किसी उकसावे के उस पर प्रहार कर देगा। परिणाम चाहे कुछ भी हो।

यह सत्य है कि उसमें कोमल भावों की अधिकता थी। ऐसा नहीं कि वह वीर नहीं था। हाँ पर वह क्रूर भी नहीं था। दूसरे के उत्पीड़न या पर-पीड़ा में उसे आनंद नहीं आता था। वह भीम की भांति उद्दंड और झगड़ालू नहीं था। भीम तो एकदम बिगड़ैल पशु था, न अपने भाई जैसा हमेशा धधकता नहीं रहता। पर यही कोमलता का भाव तो हमेशा अर्जुन के चेहरे पर भी रहता। किसी ने अर्जुन को झगड़ते या कटु वचन भाषण करते नहीं देखा। केवल कर्ण का जिक्र आते ही वह भी उसी प्रकार आक्रामक हो उठता था जैसे कि मैं स्वयं भीष्म के नाम से। और कृष्ण! वह तो हमेशा मुसकुराता ही रहता है। कितनी आकर्षक हैं कृष्ण की मुस्कान! वह बालक, वृद्ध, युवा सभी का प्रिय था। पर द्रुपद ऐसे वृद्ध भी खड़े होकर उसका स्वागत करते हैं। ऐसा लगता है कि वह क्रोध कर ही नहीं सकता। पर जिन्होंने धर्मराज के अश्वमेध यज्ञ में उसका रुद्र रूप देखा हो वही जान सकता है। किस प्रकार मुसकुराता कृष्ण अकस्मात क्रोधित हो उठा। साक्षात काल का स्वरूप लग रहा था। एका एक उसका आकार कितना विशाल लगने लगा, आँखों से ज्वाला निकाल रही थी होंठ तनाव से खिंच गए। सभी की आँखें भय से बंद हो गई, जो देख रहे थे वह भी नहीं समझ पाये कि किस लाघव से उसके हाथ में चक्र आया और कब शिशुपाल का गला कट गया। ऐसा था कृष्ण का स्वरूप। कोमल और कठोर भावों का अद्भुत मिश्रण, होने से ही उसका व्यक्तित्व सम्पूर्ण माना जाता था और लोग उसे ईश्वर या अवतारी पुरुष मानते थे।

हाँ, वह यज्ञ के समय द्रुपद की तरफ से भेंट लेकर इंद्रप्रस्थ गया था। उसे स्वयं

आश्चर्य हो रहा था कि आजीवन हस्तिनापुर से बैर पालते हुए भी उसी के एक हिस्से इंद्रप्रस्थ का आधिपत्य पिता क्यों स्वीकार कर रहे हैं। बाद में पता चला कि कृष्ण ने समझाया कि, इंद्रप्रस्थ हस्तिनापुर का हिस्सा न होकर उसका प्रतिद्वंदी राज्य है। देर सबेर दुर्योधन की अति-महत्वाकांक्षा दोनों राज्यों के बीच युद्ध का कारण बनेगी। तब आपको अपने जामाता अर्जुन का ही साथ देना होगा, तो क्यों न अभी से उसके पक्ष में खड़े हों। पर उसी यज्ञ में द्रौपदी की वाणी ने आने वाले जघन्य कृत्यों की नींव रख दी।

द्रौपदी का स्मरण आते ही उसका हृदय दरक सा गया। क्या द्रौपदी की तरह कोई और भी अभागन होगी? बचपन से ही नफरत और प्रतिशोध उसके रक्त में घोला गया। वही विष यज्ञ में उसकी जिहव्या से फूट पड़ा।

हस्तिनापुर को परास्त करने के लिए उसे कृष्ण से विवाह प्रस्ताव करने को कहा गया, जैसे वह पुत्री न होकर मात्र राजनीति का मोहरा हो। द्रौपदी कितनी लज्जित, कितनी अपमानित हुई होगी जब कृष्ण ने उसका विवाह प्रस्ताव ठुकराया। कृष्ण द्रौपदी को समझाया कि हस्तिनापुर को परास्त करने के लिए उसे विश्व के सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर से विवाह करना होगा, और वह स्वयं इसे पूर्ण करने की व्यवस्था करेगा।

पर क्या मात्र इस आश्वासन से उस समय की अप्रतिम सुंदरियों में एक द्रौपदी, जिसकी हाँ के लिए बड़े-बड़े सम्राट सब न्योछावर करने के प्रस्तुत थे ने इस अस्वीकृति का दाह कैसे झेला होगा?

फिर उसका स्वयंवर! मतलब उसकी अपनी कोई इच्छा नहीं? कोई भी अपने पराक्रम से उसे विजित कर सकता था। वह घोषित 'वीर्य-शुल्का' हो गई। स्वयंवर-सभा में जब कर्ण अपना शौर्य प्रकट करने उठा तो शिखंडी का सिर लज्जा, अपराध-बोध से झुक गया। परंतु पांचाली ने सिंह गर्जना के साथ कर्ण को प्रतियोगिता के लिए वर्जित कर दिया। सब भयभीत हुए कि दुर्योधन अब कुछ वितंडा खड़ा कर सकता है। परंतु कृष्ण की वर्जना ने सभी को रोक दिया। और फिर.... एक भिक्षु ब्राह्मण ने प्रतियोगिता में द्रौपदी को जीत कर उसका वरण कर लिया। यह सत्य है कि उस भिक्षु व उसके परिवार ने उपस्थित सभी नरेशों को भागने पर मजबूर कर दिया। परंतु महलों की रानी कुटिया में कैसे रहेगी, सोंच कर शिखंडी व्यग्र था। पर उसके भाई और पिता शूर-वीर दामाद पा कर उत्साहित थे। उन्हें अपने प्रतिशोध के लिये एक 'ब्रह्मास्त्र' मिल गया था। स्वार्थ के लालच में लोग कैसे पाषाण-हृदय हो जाते हैं।

गुप्तचरों ने बताया कि द्रौपदी जिस कुटी में गई वहीं श्री कृष्ण का भी रथ गया। अवश्य जामाता परिवार से कृष्ण का कोई सूत्र होगा। धृष्टद्युम्न के साथ वह भी उस कुटिया में पहुंचा। सबकी खुशी का ठिकाना न रहा जब पता चला कि उनका जामाता स्वयं अर्जुन है। पर अगले ही क्षण उसकी खुशी आक्रोश में बदल गई,

पंच-सरित प्रदेश की राजकुमारी पांचाली के अब पाँच पति होंगें!

कैसी अनहोनी! स्त्री पर कैसा अत्याचार? बाकी पांडव क्या अलग से विवाह करने को सक्षम नहीं हैं? भीम तो पहले से ही राक्षसी से ब्याह कर चुका है। तो क्या उसकी बहन भीम कि उप-पत्नी होगी? फिर भी, कृष्ण ने सबको समझा लिया। पर शिखंडी के चेहरे का क्रोध शांत नहीं हुआ। वह बहन का सुख क्षुद्र राजनीति के ऊपर मानता था। ऐसे में कृष्ण ने द्रौपदी के कान में कहा "शिखंडी को स्वयं तुम ही समझाओ वरना हमेशा शांत रहने वाला तुम्हारा अग्रज कुछ अनहोनी न कर डाले।"

पिता के प्रतिशोध से बद्ध, सब कुछ सहन करने को प्रस्तुत द्रौपदी ने उसे अलग बुला कर समझाया- "भाई युधिष्ठिर को वरण किए बिना मैं साम्राज्ञी नहीं बन सकती। केवल छोटे भाई कि भार्या बन कर मैं अपना लक्ष्य नहीं पा सकती। कुंती माँ की बात मान कर मैं पांचों पांडवों को एक सूत्र में बांध सकूँगी।"

"पर बहना इस प्रकार तुम मात्र पांचों कि संपत्ति रहोगी, विधिवत ब्याहता का दर्जा तुम न पाओगी।" शिखंडी ने पीड़ित स्वर में समझने का प्रयास किया। पर द्रौपदी आँख के इशारे से अपना मंतव्य जता कर अपनी सास के पार्श्व में नमित नयन खड़ी हो गई।

शिखंडी किसी अनहोनी आपदा से चिंतित वापस आ गया।

शिखंडी कि यह चिंता एक दिन सत्य साबित हो गई। संदेश वाहक ने बताया कि धर्मराज ने द्यूत में सारा राज पाठ, अपने चारों भाइयों समेत स्वयं को हार गये। सभा स्तब्ध थी। द्रुपद ने देखा कि दूत कुछ और कहना चाहता है सो उसे निर्भय हो कर आगे बताने को कहा।

"और फिर वह हुआ स्वामी, जो कल्पना से परे था। युधिष्ठिर ने द्रुपद सुता को दांव पर लगाया और हार गए"

धृस्टद्युम्न आपे से बाहर होता हुआ बोला "युधिष्ठिर ने अपनी पत्नी को दांव पर क्यों नहीं लगाया? द्रौपदी ही क्यों?"

"क्योंकि द्रौपदी पांचों भाइयों कि संपत्ति थी पत्नी नहीं"। लोगों ने देखा यह गर्जना शिखंडी की थी, जो हमेशा शांत रहने के लिये कुख्यात था।

उपवन में बैठे बैठे कुमार शिखंडी एक एक करके द्रौपदी की वेदना से गुजर रहा था। कैसे दुःशासन ने एक वस्त्र में लिपटी रजस्वला पांचाली को केश से पकड़ कर घसीटा होगा। उसने कैसे अपने वस्त्र सम्भाले होंगें, कैसे स्वयं का संतुलन संभाला और किस प्रकार अपने मान को समेटने का प्रयास किया होगा। भरे राजमार्ग में जन साधरण ने तो इंद्रप्रस्थ की साम्राज्ञी को अपमानित होते देख आँखें मूँद लीं पर भरी राजसभा में जहां सभी उसके परिचित थे। देवर, जेठ, गुरु, राजगुरु, महामंत्री

और श्वसुर.....श्वसुर तो शायद अंधे थे वह कुलवधू के दहयष्टि-दर्शन की लालसा पूरी न कर सके पर पितामह...वह केवल आँख मूँद कर रह गए। परंतु उसे सबसे अधिक चुभ रहीं थीं सूत-पुत्र कर्ण की आँखें जिनमें विद्रूप मुस्कान के साथ क्रूर संतुष्टि थी।

और उसके बाद..... आह शिखंडी सिर पकड़ कर बैठ गया। दुर्योधन का साध्वी को निर्वस्त्र कर जंघा पर बैठने का आदेश!.... वह तो कृष्ण की कृपा, चमत्कार या माया जो भी हो, पर द्रौपदी की लाज बच गई। ईश्वर उसे ऐसा भोगने को क्यों बार-बार विवश करते हैं। संत इसे पाप का घड़ा भरने की प्रक्रिया कहेंगे पर यह मात्र उसकी बहन के अपमान से ही भरना है?

इस क्षण उसने अनुभव किया भीम की रक्त पीने और जंघा तोड़ने की प्रतिज्ञा अनुचित नहीं थी। वह उठ कर वापस युद्ध चर्चा करती सभा में पहुँच गया। युद्ध की रणनीति तय हो चुकी थी अगले दिन उसके अनुज धृष्टद्युम्न सेनापति बनाने के निर्णय के साथ युद्ध सभा समाप्त हो गई।

अगले दिन कब अर्जुन को विषाद हुआ कब गीता प्रवचन हुआ यह तो उसे मालूम नहीं। हाँ, भीष्म ने पांडवों की विजय की सभी आषायें धूल-धूसरित कर दीं। नवें रोज की समाप्ति पर सुना सूर्यास्त के बाद पांडव कृष्ण को आगे कर कुरु-शिविर में पितामह से मिलने गये....क्यों? भीष्म पांडवों को न मारने का आश्वासन भी दे चुके थे.... फिर इस गुप्त मंत्रणा का क्या मंतव्य था। कुछ भी हो कृष्ण ने अवश्य कोई मोहिनी चलाई होगी।

दसवें दिन सुबह एका-एक शिखंडी को सेनापति बनाया गया। अर्जुन स्वयं उसके अंग-रक्षक होंगें और सेना पति का एक लक्ष्य था- देववृत भीष्म!

शिखंडी यदि कायर होता तो सेनापति का पद कभी स्वीकार न करता। वह क्षत्रिय था, उसने यह भार सहर्ष स्वीकार कर लिया। शिखंडी कई बार भीष्म के सामने आया, उसने उनपर आक्रमण भी किया। हर बार उसके वार को बचा कर भीष्म दूसरी ओर चल देते। शिखंडी के वार का कोई उत्तर देना तो दूर, उसकी तरफ दृष्टिपात भी नहीं करते। उसे अब क्रोध आने लगा था। उसी क्रोध में उसने पार्थ की ओर देखा। कृष्ण ने मुस्करा कर उसकी ओर देखा और आश्वस्त किया। अगले ही क्षण कृष्ण ने अर्जुन के रथ को कुछ ऐसे संचालित किया की अर्जुन अपने बाणों से अपने और शिखंडी की सारी बाधायें चीर कर कुछ क्षणों में शिखंडी और भीष्म आमने सामने थे। भीष्म को देखते ही शिखंडी के क्रोध को मानो हवा मिल गई। उसे याद आया की भीष्म के कारण ही उसे आज भी किंवा पुरुष कहा जाता था। उसने कान तक खींच कर वाण भीष्म को मारा। उसे ज्ञात था की भीष्म उसे काट सकते थे। पर यह क्या भीष्म ने कोई प्रतिकार नहीं किया। कृष्ण ने उनका मार्ग अवरुद्ध कर रखा था। वह बाण भीष्म के सीने पर लगा। आश्चर्य भीष्म को तनिक

भी पीड़ा नहीं हुई। वह मात्र शिखंडी की तरफ रथ पर पीठ कर बैठ गये। शिखंडी उनके इस व्यवहार का औचित्य पर विचार कर ही रहा था कि पीछे के रथ से एक भयानक बाण भीष्म की पीठ को भेद गया। शिखंडी ने मुड़ कर देखा, अर्जुन लगातार पितामह की पीठ पर बाण पर बाण झोंक रहा था। कृष्ण की मुद्रा प्रसन्न थी। शिखंडी स्तब्ध रह गया थोड़ी देर में भीष्म बाणों से आहत हो रथ के नीचे गिर पड़े। शिखंडी तत्काल रथ से पितामह को सहारा देने के लिए कूदा- पर यह क्या... भीष्म धरती पर नहीं गिरे। वह पीठ में लगे बाणों के बल गिरे, और शर-शैय्या पर लेट गये। शिखंडी उन्हें प्रणाम कर पैर की तरफ खड़ा हो गया। भीष्म से उसका सारा वैर भाव आंसुओं से बह चुका था। घृणा की जगह आदर ने ले ली थी। युद्ध समाप्त हो चुका था अर्जुन पितामह के चरणों मे झुका था। कृष्ण भी प्रणाम कर आदर से खड़े थे। धीरे-धीरे दोनों पक्षों के योद्धा वैर भूल कर पितामह को प्रणाम कर रहे। सभी की आँखों में अश्रु थे।

भीष्म-पर्व समाप्त हो गया। युद्ध की परिस्थिति तय हो गई थी।

भीष्म के पराभव की शोक ज्वार से उबरने के बाद अपने शिविर जा कर युद्ध वेषभूषा में ही शय्या पर गिर गया। धीरे-धीरे शिखंडी को कल की गुप्त मंत्रणा और स्वयं को मुख्य सेनापति बनाने का भेद भान हो सका। संभवतः भीष्म ने ही कहा हो कि शिखंडी को सेनापति बना कर मेरे सामने कर दो। मैं अम्बा का अवतार होने के कारण उसे पुरुष रूप में अर्ध-नारी मानता हूँ। उसके सामने मैं शस्त्र त्याग दूँगा। पर गाँडीव से अशक्त धनुष मुझ निहत्थे को पराभूत नहीं कर पाएंगे अतः अर्जुन को शिखंडी के पीछे से वार करना होगा। सशस्त्र रहते मुझे कोई परास्त करे, ऐसी सामर्थ्य किसी में नहीं है। पर मस्तिष्क में बच्चन जी का अर्ध-नारीश्वर वाला विचार मन में घूम रहा था। क्या शिखंडी जैसा कि उसे निरूपित किया गया वैसा न होकर हम सब जैसा साधारण पुरूष हो जो स्त्री भाव प्रधान हो। बलिष्ठ काया होते हुए भी कोमल भावों की अधिकता से उन उद्ध-उन्मादी क्षत्रियों के बीच उसे स्त्रैण माना जाता हो। यदि शिखंडी कवि होता तो शायद उसे भी 'पन्त' जी कि तरह 'सुकुमार भावों का कवि' कहा जाता। पर क्षत्रिय कुल में उत्पन्न होना उसके लिए अभिशाप बन गया।

प्राचीन काल से ही 'नर' होने का मतलब बलिष्ठ, वज्रादपि कठोर, कोमल भावनाओं से रहित माना जाता है। कोमल भावों से युक्त पुरूष नायक नहीं हो सकता। वह तो केवल कवि, संगीतज्ञ, चित्रकार ही हो सकते है। पर अर्जुन जिसे साक्षात 'नर' माना जाता है, कोमल भावों की वजह से रचनाकारों ने उस पर भी चाहे एक वर्ष ही सही पर 'ब्रहन्नला' के रूप में क्लैवता थोप दी। रूद्र होते हुये भी आशुतोष होने के कारण शिव को देवी पार्वती के साथ और कोमल भाव नृत्य, गायन वाद्य-प्रवीण कृष्ण को राधा के साथ 'अर्ध-नारीश्वर' बनना पड़ा ?

जब गांधी जी पहली बार लोकमान्य तिलक जी से मिले तो तिलक जी को वह संकोची स्वभाव वाले और थोड़े से 'जनाने' लगे थे। इतिहास गवाह है कि उनका जैसा 'मर्द' सदियों में नहीं हुआ। उनमें भी संभवतः 'स्त्री-भाव' की अधिकता होगी जिससे वह वह अपने समय के सबसे बड़े मानवतावादी बने, अहिंसा उनका अस्त्र था जिससे उन्होंने उस महाशक्ति को परास्त किया जिसके साम्राज्य में कभी 'सूरज नहीं डूबता था'।

सम्पूर्ण मानव होने के लिए स्त्री और पुरूष दोनों भावों का उचित सम्मिश्रण होना परम आवश्यक है। प्रकृति ने इसीलिए प्रत्येक स्त्री और पुरूष को 'अर्ध-नारीश्वर' भाव में ही सृजित किया। इन्हीं विचारों में डूबा मैं कब घर पहुंचा गया कुछ भान ही नहीं रहा। तत्परता से पत्नी ने चाय बना कर पेश की। फिर भी मुझे अन्यमनस्क देख कर "जाड़े की शाम घर आते ही पत्नी के हाथ की गरम चाय मिलने पर एक धन्यवाद की मुस्कान तो बनती है?" पत्नी ने कहा।

पर मैं अपने ख्याल में ही डूबा था। प्रत्येक मनुष्य में स्त्री और पुरूष हारमोन होनें का तथ्य और बच्चन जी की बात की बात सत्यता परखने के उद्देश्य से बगैर किसी भूमिका के मैंने पत्नी से पूछा "क्या मुझमें भी कुछ स्त्री गुण तुम्हें दिखते हैं?"

पत्नी ने मेरी मूछों को देखा फिर सीने की और देखते हुए विनोद से बोली 'फिलहाल अभी तक तो नहीं'।

मुसकुराते हुए मैं चाय का आनंद लेने लगा।

यज्ञ न करना भी अब यज्ञ है

श्री श्री रवि शंकर जी जंगल में यदि पगडंडी बुहार कर घास के बीजों को न हटाया जाय तो कुछ समय बाद पड़ोस कि घास उस पर अधिकार कर लेगी और पगडंडी लुप्त हो जाएगी। मानव और वन के बीच यह संग्राम आदिम काल से चला आ रहा है। मानव वन काट कर अपने लिए बस्तियाँ बनाता और कभी वह बस्तियाँ वन के द्वारा निगलीं जातीं। कृष्णार्जुन द्वारा खांडव-दाह भी इंद्रप्रस्थ को निरापद रखने के लिए ही किया गया होगा।

ऋषियों द्वारा प्रतिदिन यज्ञ का विधान, और वृहद यज्ञों के आयोजन के पीछे भी शायद यही प्रयोजन रहा होगा। वनों में स्थित आश्रमों में सदैव यज्ञ-अग्नि के प्रज्ज्वलित रहने के निर्देश के पीछे हिंसक जंतुओं से सुरक्षा के अलावा सूक्ष्म खांडव-दाह करते रहना ही रहा होगा। यह मानव और वन के निरंतर संग्राम में मनुष्यों कि बढ़ती आबादी से वन हारने लगे और अब विलुप्त होने के कगार पर हैं। अतएव अपनी उत्तरजीविता (survival) के लिए वनों का संरक्षण करना प्रारम्भ कर दिया।

हरे पेड़ों के काटने को अपराध घोषित किया, विद्युत शव-दाह आदि को प्रोत्साहित किया जा रहा है। ऐसे में नित्य यज्ञ करने का विधान कहाँ तक उचित है? वैसे वेदों में शुभ कर्मों को ही उतम यज्ञ बताया गया है। लकड़ी जलाना नहीं, अब पेड़ बचाना ही यज्ञ है।

हुदहुद

संपादक

अरबी में हुद हुद एक चिड़िया का नाम है। इस भोली चिड़िया के नाम के एक चक्रवाती तूफान ने भारत के पूर्वी तट पर आंध्र प्रदेश और ओडिशा में बड़ा कहर ढाया। यह नाम इसे ओम्मान देश ने दिया जो कि दक्षिण एशिया के आठ देशों, जिनको इन चक्रवातों का नाम करण करने को चयनित किया गया है। ओम्मान के अलावा बाकी सात देश हैं- भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश, मालदीव, श्रीलन्का, और थायलैंड। इन ८ देशों ने मिलकर ८-८ (कुल ६४ नाम) नाम सुझाए जो क्रमश उस क्षेत्र में आने वाले तूफानों के नाम होंगें। गुजरात में आए तूफान का नाम नीलोफर पाकिस्तान का दिया गया है। भारतीय मौसम वैज्ञानिकों के अनुसार 'लहर' नाम का चक्रवात २८ नवम्बर' को दक्षिणी-पूर्वी तट से टकराएगा। इसको भारत ने 'लहर' का नाम दिया है।

चक्रवात का जन्म

बचपन में हम सभी ने गर्मी के मौसम में मैदानों में ८-१० फिट के क्षेत्र में हवा को तेजाई से भंवराकार ऊपर उठे अवश्य देखा होगा। बहुत सी धूल, पत्ते और कागज तेजाई से ऊपर जाते दिखते थे। इसे हम बवंडर कहते थे। यह बवंडर मात्र कुछ सेकेंड के ही लिए उठते थे। कभी-कभी सुनाई पड़ता था कि फलां साल एक बुढ़िया ऐसे ही बड़े भवंडर में फंस कर एक खेत से उड़ कर दूसरे खेत में जा गिरी थी। इसमें कितनी सच्चाई थी- ईश्वर जाने, पर भवन्डरों का आना उन दिनों आम बात थी। यह सामान्य ज्ञान का विषय है कि सतह का तापमान बढ़ने से वायु गरम होकर ऊपर उठती है जिससे वहाँ का वायु दाब कम हो जाता है, जिसकी वजह से आस-पड़ोस की वायु कम दबाव के क्षेत्र की ओर आकर्षित होती है। गरम हवा में नमी (वाष्प) होती है जो ऊपर पहुँच कर पानी की बूंदों में बदल जाती हैं। वाष्प के संघनन से निकली गुप्त ऊष्मा तापमान को और बढ़ा देती है जिससे दबाव में और कमी आती है। यह दबाव में कमी जब अत्यधिक हो जाती है तो निम्न दाब क्षेत्र में आने वाली हवा की रफ्तार बहुत तेज़ हो जाती है और एक वृत्ताकार रूप में घूमने लगती है। हवाओं का यह घुमाव दक्षिणी गोलार्ध में घड़ी की दिशा में (दक्षिणावर्त)

और उत्तरी गोलार्ध में उत्तरावर्त (एंटी क्लक वाइज) होती है। वायु के घूमने की गति ३० मील से २०० मील प्रति घंटा हो सकती है तथा भारी वर्षा और तेज आँधी-तूफान का कारण बनती है जिससे जान-माल का काफी नुकसान होता है।

कैटरीना चक्रवात का सैटेलाइट चित्र

यह चक्रवाती हवाएँ समुद्र में चक्रवात और भू-क्षेत्र में tornado या तूफान कहलाते हैं। एटलांटिक और उत्तर-पूर्व में आने वाले इन चक्रवातों हरीकेन (hurricane) कहते हैं। यह नाम इसे मध्य अमरीका के वायु के देवता हुरकन (hurricane) के नाम पर पड़ा है। पश्चिमोत्तर प्रशान्त सागर में इसे टाइफून (Typhoon) कहते हैं। बाकी सारे विश्व में इसे चक्रवात के नाम से जाना जाता है। यह चक्रवात पृथ्वी के अलावा अन्य ग्रह जैसे मंगल और नेपच्यून पर भी आते रहते है। वहीं पर भू-भाग में आने वाले जिन्हें tornado कहा जाता है वह ज्यादातर उत्तरी अमरीका में आते हैं और रास्ते में पड़ने वाली हर वस्तु को तहस नहस कर देते है। इसमें वायु की सर्पिल गति (स्पीड अ स स्पीनिंग) इतनी तीव्र होती है कि यह हर चीज़ को तोड़ मरोड़ देते हैं। बिजली के खंभे को कई जगह से ऐंठ देते हैं। इसी कारण से इसे स्थानीय भाषा में इन्हें Twister कहते हैं।

भारत का तटीय क्षेत्र बहुत विशाल है। इसकी लंबाई ७५१६ कि०मी० होने के कारण दुनियाँ के लगभग १०% Tropical cyclone इसी क्षेत्र में आते हैं। भारत के १३ तटीय राज्य और ८४ जिले इन आपदाओं से प्रभावित होते हैं। पूर्वी तट के राज्य- तमिलनाडु, आंध्रा, ओडिशा, पश्चिमी-बंगाल, पांडिचेरी तथा पश्चिमी तट पर गुजरात ज़्यादा prone है। इन राज्यों की ४०% जनसंख्या तटीय इलाके के १०० km दायरे के भीतर बसती है। इस प्रकार भारत की ३७ करोड़ आबादी प्रति वर्ष इन चक्रवातों से प्रभावित होते रहने का अनुमान है। १९९१-२००० तक भारत में पूर्वी तट पर कुल ३०८ तूफान आए जबकि पश्चिमी तट पर मात्र ४८ तूफान ही आए। चक्रवात की वजह से भूस्खलन, बाढ़ आदि प्रेतिक आपदाओं भी इसी क्षेत्र में आती रहतीं हैं। इनकी वजह से भारत की जी०डी०पी० का २% जो की केन्द्रीय सरकार के कुल राजस्व का १२% के बराबर है, का नुकसान देश को हर वर्ष उठाना पड़ता

है। कर्क (cancer) और मकर (Capricorn) राशियों के बीच आए उष्ण-कटिबन्ध के चक्रवातों को उष्ण-कटिबंधीय चक्रवात कहते हैं। इन चक्रवातों को वायु-तीव्रता के आधार पर इनका वर्गीकरण किया गया है जिस पर इनकी विनाशक क्षमता निर्भर करती है।

चक्रवात से विनाश

१- तेज हवाएँ घरों, संचार माध्यमों, बिल्डिंग, पेड़ों के उखड़ने से जान माल का

Type of Disturbances	Associated Wind Speed in the Circulation
Low pressure Area	Less than17 knots (<31 kmph)
Depression	17 to 27 knots (31 to 49 kmph)
Deep Depression	28 to 33 knots (50 to 61 kmph)
Cyclonic Storm	34 to 47 knots (62 to 88 kmph)
Severe Cyclonic Storm	48 to 63 knots (89 to 118 kmph)
Very Severe Cyclonic Storm	64 to 119 knots (119 to 221 kmph)
Super Cyclonic Storm	120 knots and above (222 kmph and above)

नुकसान होता है।

२- मूसलाधार वर्षा- चक्रवात तेज हवाओं के साथ तेज वर्षा भी लाता है जो कि ३० इंच/घंटा से अधिक भी हो सकती है। इस भयंकर वर्षा कि वजह से जलप्लावन व बाढ़ कि स्थिति आ जाती है जिससे आदमी और पशु कि मृत्यु तथा फसल का नाश होता है। soil erosion, मकान गिरने से भी काफी नुकसान होता है।

३- चक्रवात की वजह समुद्र की ऊंची लहरों से समुद्र का पानी भू-भाग में आ जाता है जिससे पीने का पानी, मृदा (soil) प्रदूषित हो जाती है। घनघोर बारिश और समुद्र के पानी के भू-भाग में अंदर घुस आने के कारण बाढ़ और जल प्लावन की स्थिति और भी गंभीर और घातक हो जाता है।

चक्रवात से लाभ

चक्रवात की वजह से समुद्र-तट से सैकड़ों मील दूर तक व्यापक वर्षा हो जाती

है जिससे सूखे से निजात, भयानक गर्मी से निजात तथा यह वैश्विक गर्मी को भी कम करने में मदद करते हैं। इस वर्ष अल-नीनों प्रभाव की वजह से वर्षा काफी कम हुई, पर हुद हुद चक्रवात की वजह से आंध्र से लखनऊ तक हुई वर्षा ने सूखे के दंश को काफी कम कर दिया है।

चक्रवात से बचाव

पूर्व सूचना- मौसम विभाग की भविष्य वाणियाँ अब सैटेलाइट की वजह से बहुत सटीक होती हैं। इन पूर्वानुमानों से जनता को आगाह कर दिया जाता है, मछुवारों को समुद्र न जाने को कह दिया जाता है। विनाश क्षेत्र से लोगों को हटा दिया जाता है, ऊंची होर्डिंग उतार दी जातीं है।

आपदा नियंत्रण- cyclone का हम कुछ नहीं कर सकते पर उसके द्वारा आई विभीषिका को आपदा नियंत्रण द्वारा काफी कम कर सकते हैं।

बचाव स्थल का निर्माण, चक्रवात-रोधी इमारत डिजाइन, पुलिया, नहर, पानी वापस ले जाने के लिए ड्रेन्स, पीने के पानी का प्रबंध, सुरक्षित पशु शालाएं, पूर्व चेतावनी तथा जनसाधारण को आपदा प्रबंधन से aware करने आदि से नुकसान को काफी कम किया जा सकता है।

बेहतर प्रबन्धन से इस बार हुद हुद से लगभग ५० मौत हुईं जबकि पहले यह संख्या हजारों तक जाती थी।

यह लेख ७ नवम्बर २०१४ को लिखा गया, उस समय २८ नवंबर के लहर तूफान की मौसम विभाग ने भविष्य-वाणी की थी। पाठकों को यह लेख मार्च २०१५ के करीब प्राप्त होगा, तब वह ही तय करेंगे कि यह पूर्वनुमान कितनी सही निकलता है।

◈◈◈

अभिमान

लोहे को कोई नष्ट नहीं कर सकता बस उसका जंग ही उसे नष्ट करता है। इसी प्रकार आदमी को भी कोई और नहीं, केवल उसका अभिमान और उसकी निम्न सोंच ही उसे नष्ट कर सकती है।

विचारार्थ

डी० एन० दुबे
(आई.ए.एस)

सबसे पहले तो यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि जो कुछ भी मैं लिखने जा रहा हूँ उसका उद्‌देश्य न तो किसी की आलोचना करना है और न ही किसी की भावनाओं को ठेस पहुँचाना है। यह भी स्पष्ट करना चाहूँगा कि मैं यह भी नहीं सोचता हूँ कि ज्यादातर व्यक्ति कम समझदार हैं या सोचते नहीं हैं। किसी भी प्रकार की लेखक की मंशा यह नहीं है कि यह माना जाए कि उसकी सोच औरों से बेहतर है। यद्यपि यह अवश्य है कि औरों से भिन्न सोच रखने और उसे कहने का अधिकार मैं सुरक्षित रखता हूँ। अतः इस क्षमा–प्रार्थना के साथ कि यह बिन्दु केवल विचार के लिए है, किसी को नीचा दिखाने, किसी की भावनाओं को आहत करने अथवा किसी की सोच को गलत सिद्ध करने के लिए नहीं है यह लिखा जा रहा है।

मैंने अपने एक पूर्व लेख में लिखा था कि आज के जमाने में पैसा बोलता है और इतनी जोर से बोलता है कि उसकी खनखनाहट में नैतिकता, सद्‌आचरण तथा पास्परिक स्नेह और विश्वास की आवाजें दब चुकी हैं। बहुत आसानी से हम सब इन समस्त दोषों का कारण राजनीतिक व्यक्तियों और राज्य व्यवस्था पर डाल देते हैं। यद्यपि यह सही है कि "महाजनों येन गतेन स पन्थ" परन्तु इसमें दो बिन्दु विचारणीय है। पहला तो यह है कि महाजन का अर्थ है महान व्यक्ति और यह आवश्यक नहीं कि सत्ता के शीर्ष पर बैठा व्यक्ति महान ही हो। वास्तविकता यह है कि सत्ता के शीर्ष पर पहुँचने के लिए जो गुण किसी व्यक्ति में होने चाहिए उनकी परिभाषा ऐसी है कि वह उस व्यक्ति को उन अर्थों में महान नहीं बना सकते जिन अर्थों में उपरोक्त सूक्ति में इस शब्द का प्रयोग किया गया है। महानता केवल सत्तासीन व्यक्ति का एकाधिकार नहीं है। यह भी एक कठोर वास्तविकता है कि इस देश की पावन पवन में महानता की जो परिभाषा थी तथा इस देश के पावन धरती ने जिन महान व्यक्तियों को जन्म दिया वह न तो सत्ता लोलुप थे और न ही सत्ता ने उन्हें इतना आकर्षित किया कि वे उसे प्राप्त करने के लिए महानता के अपने गुणों को खो देते हैं परन्तु यह दुर्भाग्य है कि राम, बुद्ध, नानक, हवलदार अब्दुल हमीद, गांधी के देश में हजारों साल पुरानी संस्कृति की परम्पराओं को रौंदता हुआ उपभोक्तावाद इस देश को फतेह कर रहा है और आयातित, भ्रष्ट, सत्यानाशी, पाश्चात्य संस्कृति के अन्धानुकरण में हमने महाजन की परिभाषा बदल दी है। और दूसरा बिन्दु इसी प्रथम बिन्दु की तार्किक परिणिति है कि जो महाजन है ही नहीं उनका अनुसरण करने का कोई अर्थ ही नहीं है।

प्रत्येक दोष के लिए राजनीतिक व्यवस्था और राजनीतिज्ञ को दोष देते समय हम बहुत आसानी से भूल जाते हैं कि ब्रहमांड के इस छोटे से ग्रह पृथ्वी के असंख्य जीवधारियों में से मानव द्वारा समाज की रचना पहले हुयी तथा राज्य एवं शासन व्यवस्था की परिकल्पना एवं उसके मूर्तिमंत स्वरुप शासन व्यवस्था इसके बहुत बाद की कड़ी है। अर्थ यह है कि समाज से ही शासन, राज्य, सरकार, राजनीतिज्ञ, राजनीति, सत्ता, सत्ता–लोलुपता, गद्‌दारी, देश–भक्ति, देश के प्रति विद्रोह आदि शब्दों और विचारों का जन्म हुआ है न कि राज्य से समाज का। इस लिए, जैसा कि कहा जाता है, कि गंगा को शुद्धि करना है तो गंगोत्री को शुद्ध करना होगा उसी प्रकार यदि राजनीति को शुद्ध करना तो समाज को शुद्ध करना होगा। इस देश में जो कुछ भी उचित या अनुचित हो रहा है उसके लिए इस देश का प्रत्येक नागरिक दोषी है। यह अवश्य है कि देश को चलाने की जिम्मेदारी लेने वाले व्यक्ति या व्यक्तियों के समूह का दायित्व उस सीमा तक अधिक हो जाता है जिस सीमा तक उसके अधिकार अधिक हैं। कोई राजनीतिज्ञ हवा में नहीं पैदा होता। वह भी इसी समाज में पैदा होता है, पलता है और बड़ा होता है। यदि समाज शुद्ध रहेगा तो उसमें पैदा होने वाले, पहले वाले और बढ़ने वाले व्यक्ति भी शुद्ध रहेंगे चाहे वे राजनीति में जाये, चाहे सरकारी सेवक बने, चाहे व्यापारी बने या जीवन के किसी भी क्षेत्र में कार्य करें।

परन्तु समाज शुद्ध करने का तरीका वह नहीं है जो तरीका आजकल अपनाया जा रहा है। कुछ तेज तर्रार, चतुर व्यक्ति अकेले, या मिलकर के, कोई समाज सेवी संस्था बना ले और उसकी आड़ में जनता की खून पसीने की कमाई से प्राप्त राजकीय कर में से कुछ हिस्सा समाज सेवा के नाम पर वसूल ले और अपना व्यक्तिगत हित सिद्ध करें यह समाज सेवा नहीं है। समाज सेवा कोई मुखौटा नहीं है और न कोई व्यापार तथा न ही अपने कैरियर को बनाने का कोई रास्ता। वस्तुतः समाज सेवा शब्द ही गलत है उसी प्रकार जिस प्रकार की समाज का सुधार शब्द सही नहीं है। समाज की सेवा नहीं होती है वरन् समाज का ऋण चुकाया जाता है। भारतीय परम्परा में इस बिन्दु पर बहुत जोर दिया गया है कि प्रत्येक व्यक्ति पर मातृऋण, पितृऋण और गुरु–ऋण होता है जिसको उसे उतारना पड़ता है और उतारण चाहिए। यदि इस परिकल्पना पर गहराई से विचार करें तो हम पायेंगे कि ये तीनों ऋण मिलकर वास्तक में समाज का ऋण बनाते हैं और एक अच्छे व्यक्ति होने के नाते हमारा प्रथम कर्तव्य है कि हम उस ऋण को उतारें और उस ऋण को उतारने के लिए जरुरी नहीं कि हम कोई मुखौटा लगाये या कोई ऐसी व्यवस्था करें कि हमारे काम की चर्चा चतुर्दिश हो।

यदि हम समाज का ऋण उतारने के लिए कटिबद्ध हो जाय तो हमें कुछ नहीं करना होगा सिवाय इसके कि जीवन में ईश्वर ने हमको जिस स्थान पर रखा है उस स्थान के जो दायित्व और कर्तव्य हो उनका निर्वहन हम पूरी क्षमता और निष्ठा के साथ करें। यदि ऐसा प्रत्येक व्यक्ति करने लगे, या यदि यह सम्भव न हो, तो अधिसंख्य व्यक्ति करने लगें तो किसी तरह की सेवा या समाज सेवा की आवश्यकता ही नहीं क्योंकि सेवा असमर्थों की जाती है, काहिलों की जाती है, मन्द बुद्धियों की जाती है और सुधार उसका किया जाता है जिसका दोष हो। यहाँ तो असत्य और दोष का कारण ही नहीं है यदि ऐसा निश्चय कर लें। ऐसा निश्चय करने में कोई बहुत बड़ी बाधा नहीं है सिवाय इसके कि हमको अपनी कथनी और करनी के अन्तर को मिटाना होगा। विस्तार में जाने की आवश्यकता नहीं है परन्तु हम क्या कहते हैं और करते क्या हैं इसके बीच की खाई लगातार बढ़ती जा रही है और समस्याएं भी उसी अनुपात में बढ़ती जा रही हैं।

एक उदाहरण ही पर्याप्त होगा। जिस व्यक्ति के एक लड़की और एक लड़का दोनों हों तो वह लड़की की शादी करता है तब वह दहेज प्रथा और फिजूलखर्ची को लगातार कोसता है और उसको बुरा कहता है परन्तु वही व्यक्ति जब अपने पुत्र की शादी करता है तो उन परिस्थितियों को बड़ी आसानी से भूल जाता है जिन परिस्थितियों से उसको गुजरना पड़ा था जब उसने अपनी लड़की का विवाह किया था।

ऊपर मैंने कहा है कि हम लोग अपनी सामाजिक मर्यादाओं और कल्पनाओं के साथ-साथ अपने पास्परिक स्नेह को भूलते जा रहे हैं और पाश्चात्य उपभोक्तावाद हम पर हावी होता जा रहा है। मुझे शादी के या अन्य सामाजिक और धार्मिक अनुष्ठानों के बहुत से निमंत्रण पत्र प्राप्त होते हैं। इन निमंत्रण पत्रों के प्राप्त होने और यदि मैं उनमें भाग लूँ तो जो द्वन्द और उथल-पुथल मेरे मनोभावों में होता है वह मैं यहाँ अवश्य कहना चाहता हूँ। बहुत पुरानी बात नहीं है जब भारतीय परम्परा के अनुसार किसी व्यक्ति के जीवन के जो विभिन्न संस्कार हैं यथा नामकरण, मुण्डन, यज्ञोपवीत, विवाह उसमें व्यक्ति अपने उन सगे संबंधियों और शुभेच्छुओं को बुलाता था जिससे उसका, लम्बे समय से चला आने वाला प्रेम व्यवहार और इस प्रकार का सामाजिक व्यवहार होता थां इस आमंत्रण के पीछे दिखावे की भावना अत्यन्त न्यून और अपनी प्रसन्नता में दूसरे को सम्मिलित करने की भावना अत्यधिक प्रबल होती थी। ऐसे आमंत्रण पर आने वाले व्यक्ति भी प्रेम और उत्साह की भावनाओं से ओत-प्रोत होते थे और उसी भावना के साथ सम्मिलित होते थे। सारी तैयारियां मिलजुल करके सामूहिक प्रयास से की जाती थी। अब ऐसे अनुष्ठानों का मूल महत्व तो समाप्त हो चुका है और यह अनुष्ठान न होकर केवल एक बहाना मात्र रह गए हैं अपनी काली कमाई के भोड़े प्रदर्शन का।

महत्व इस बात का हो गया है कि महत्वपूर्ण (?) गणमान्य (?), व्यक्ति कितनी अधिक संख्या में आते हैं, कितना बड़ा पण्डाल कितनी भव्य साज-सज्जा के साथ लगाया गया है, भोजन में कितने प्रकार के खाद्य पदार्थ बनवाए गए हैं आदि आदि। इस पूरे प्रदर्शन में उन मेहमानों के वास्तविक स्वागत सत्कार के लिए न तो मेजबान के पास समय है और ही इच्छा। ये अनुष्ठान हमारे संस्कार हैं जिनका व्यक्ति के पूरे जीवन पर प्रभाव पड़ता है। परन्तु प्रदर्शन संस्कार की मूल भावना को पूर्ण रुपेण दबा देता है और मंत्रोच्चार को कोई सुनता भी नहीं है। इस पूरे प्रदर्शन में परिवार के और स्नेहीजनों में से वे व्यक्ति उपेक्षित हो जाते हैं जिनके मन में वास्तव में स्नेह और प्रेम है परन्तु वह भौतिक सुख-साधन से यथेष्ठ रुप से सम्पन्न नहीं हैं। यही मानसिकता धीरे-धीरे पनपती और विकसित होती है और फल यह हुआ है कि श्रवण कुमार के इस देश में अब पुत्र भी उन माँ-बाप को, श्रद्धा और सम्मान की बात तो दूर, सामान्य शिष्टाचारका भी अधिकारी नहीं मानते, जिसके पास धन नहीं है।

जब व्यक्ति और समाज इस प्रकार के विचारों को प्रश्रय देंगे तब कैसे यह आशा की जा सकती है कि ऐसे समाज में पले बढ़े व्यक्ति अपनी व्यक्तिगत सुख-सुविधा के आगे जाकर अपने मोहल्ले, नगर, प्रदेश या देश के संबंध में कुछ सोच पाएंगे। जब सोच ही सीमित हैं तो परिणाम असुन्दर ही होंगे। पहले दूरदर्शन अपने कार्यकम "सत्यम् शिवम् सुन्दरम्" की उदघोषणा के साथ प्रारम्भ करता था क्योंकि इन शब्दों पर और उनके अर्थों पर शायद तब भी थोड़ी बहुत आस्था बची हुयी थी। परंतु अब ऐसा नहीं है। शायद अब सत्य बोलने और सुनने और स्वीकार करने की क्षमता हमारे समाज में नहीं बची और न ही समाज समग्र कल्याण के संबंध में कोई विचार रखता है और जब समग्र कल्याण की बात ही नहीं है तो सुन्दर होना कल्पनातीत है। भयावह होना है और वही हो रहा है।

जब हम छोटे थे तो हमें पढ़ाया जाता था सिखाया जाता था और कहा जाता था कि गाँधी बनो, सरोजनी नायडू बनो, तिलक बनो, सुभाष बनो, जवाहर बनो और न जाने कितने अनुकरणीय "रोल मॉडल" हमारे सामने थे। आज हम अपने बच्चों को क्या बताएं किसी का नाम ले लो तो विरला ही कोई निकलेगा जिसका अनुकरण करने के लिए हम अपने बच्चों को कह सकते हैं। समाज ने जिन विचार-धाराओं और व्यक्तियों को प्रश्रय दिया, पुष्पित किया वहीं विचार धाराएं और व्यक्ति अब हमको नियंत्रित कर रहे हैं तो हमें कष्ट और दुख क्यों होता है। हम हर काम करने की अपेक्षा सरकार से करते हें पर सरकार कहीं स्वर्ग से टपक कर नहीं आयी है, हम लोगों ने ही बनायी है, यह हम भूल जाते हैं।

अन्त मे जैसा दुष्यन्त कुमार ने लिखा है–

"जब बौने इन्सानों के साये-मीलों लम्बे होते जाएं

समझो सूरज डूब रहा है।"

अद्भुत

डा० ए०के० अग्रवाल

शल्य-चिकित्सा विभाग में कभी-कभी ऐसे आश्चर्य जनक केसेज आ जाते हैं जिनको देख कर सबसे पहली प्रतिक्रिया होती है। "हे ईश्वर (ओ माई गाड)"। जिनसे रूबरू होने पर अनुभवी सर्जन भी सोंच में पड़ जाता है कि इसे कैसे डील करें? परंतु विस्मय की स्थिति से बाहर निकालने पर, ट्रेनिंग, इमेर्जेंसी डील करने का अनुभव, स्वयं का आत्मविश्वास उसे उस मरीज़ का भी सफलतापूर्वक इलाज करने में मदद करता है।

ऐसा ही एक केस एक आँधी-तूफान की रात बलरामपुर अस्पताल की इमरजेंसी में आया।

दो ट्रकों में आमने-सामने से भिडंत हो गई। एक ट्रक ड्राइवर के एक इंच बाई आधा इंच की दो मीटर की एक लकड़ी कि पटिया बाएँ कान के पीछे से घुसकर तालू फोड़ते हुए दाहिने गाल की हड्डी तोड़ कर बाहर निकल आई थी। ड्राइवर भाग्यशाली था कि उसकी आँख बच गई। काल लेकर आए वार्ड ब्वाय ने कहा "साहब वह मरीज़ गणेश जी की तरह सिर हिला रहा है।"

यह सुनकर मैं अविश्वास से हंसा पर जाकर देखा तो, वास्तव में चेहरे के आगे और पीछे दोनों ओर लकड़ी डेढ़ फीट निकली हुई थी। मरीज़ दर्द के मारे सिर इधर-उधर हिला रहा था।

मरीज़ को दर्द दूर करने की स्ट्रांग दवा नहीं दी जा सकती थी क्योंकि उससे मरीज़ सो सकता था और सांस लेने की क्रिया कम होने से दम घुटने का अंदेशा काफी था। बेहोशी के डाक्टर, नाक, कान, गले के विशेषज्ञों को भी बुलवा लिया गया। जब तक पेशेंट आपरेशन-रूम में शिफ्ट करें तब तक यह विशेषज्ञ भी आ गए। लकड़ी की पटिया को निकालने पर गले में एकाएक तेज़ रक्त-स्राव होने की संभावना थी, इससे फेफड़े में रक्त जाने से मरीज़ की सांस रुक सकती थी (मरीज़ सफोकेट हो सकता था) अतएव पहले उसका सांस लेने का वैकल्पिक रास्ता गले में बनाने का निश्चय लिया गया। मरीज़ को लिटाने पर वह ठीक से सांस नहीं ले पाता था। बगैर लिटाये गले में सांस का रास्ता बनाना भी मुश्किल था। परंतु अनुभवी विशेषज्ञ ने मात्र ढेड़ मिनट में सर्जरी कर सांस का रास्ता (ट्रेकिओस्टमी) कर दी। उस वक्त हम सबकी सांसें भी रुक गई थीं क्योंकि मरीज़ के रक्त का आक्सीजन कन्सेंट्रेशन ३०% तक हो

गया था। पर मानव मस्तिष्क इतने कम समय की आक्सीजन कि कमी को झेल लेता है।

अब अगली समस्या थी कि एक तरफ से लकड़ी काट कर इतनी छोटी कर दी जाय कि लकड़ी निकालने में ज़्यादा चोट (ट्रामा) न पहुंचे। हम यदि बिजली कि आरी से विशेषज्ञ को बुलाया गया- और वह विशेषज्ञ था अस्पताल का चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी बढ़ई! उसने एक हाथ से निकला हुआ लकड़ी का हिस्सा पकड़ा और बगैर किसी झटके के लकड़ी ३० सेकेंड में काट दी। हम सर्जन बढ़ई के हस्त-लघाव पर विस्मित थे- "जहां काम आवे सुई, कहा करे तलवार"।

आगे की कथा बड़ी सरल है लकड़ी निकाल दी गई। जिससे हम भयभीत थे। रक्त स्राव नहीं हुआ। संभवतः लकड़ी के इतने देर के दबाव से रक्त-वाहिनियाँ स्वयं 'सील' हो गई थी।

हमने प्रसन्नता से एक दूसरे को बधाई दी। सक्षात 'विश्वकर्मा' (बढ़ई जी) को धन्यवाद ज्ञापन कर हम सभी स्फूर्ति से भरे घर लौटे, बची खुची रात्रि-निद्रा के आगोश में खो गये।

जैसे उसके दिन बीते वैसे सबके दिन बीतें..... आमीन

पूर्व वरिष्ठ सर्जन,
बलरामपुर अस्पताल, लखनऊ

◆ ◆ ◆

काम वाली बाई

खुद की माँ मम्मी हुई, वह माई कहलाई ।
शहरों मे अति विशिष्ट है काम वाली बाई।।
रानी यदि सेविकाश्रित न होती, तो मंथरा की दाल न गलती।
श्री राम का वनवास न होता, ना ही स्वर्णिम लंका जलती।।
काम की बाई पर आज आश्रित समाज है,
अवध मे रहा सदा से दासियों का राज है।
सेविकाएं हैं अब इतनी दुर्लभ हुई, कि
भरत करता अब मंथरा का काज है।

असुरक्षित खज़ाना

श्रीमती नीरज शुक्ल "रानी"

पढ़ने और सुनने में अश्लील लग सकता है परन्तु वास्तविकता है कि एक अर्धविक्षिप्त युवती जो गलियों में लावारिस भटक रही हो, वह आज के समाज की दृष्टि में चलता फिरता खजाना ही दिखती है, जिसका कोई रक्षक नहीं है। वह वास्तव में चलती फिरती और जीवित है। असन्तुलित मस्तिष्क के अलावा उसमें वह सब संवेदनायें हैं जो कि एक "कुलीन नारी" में होती हैं। पर केवल विक्षिप्त होने की वजह से कामुक नर पिशाच रूपी गिद्धों के लिये वह मात्र मरे हुए एक ढ़ोर की तरह है, जिसकी गंध इन परजीवियों को खींच लाती है। मौका मिलते ही वह अपनी हवस पूरी करके एकान्त में छुप जाते हैं। ढ़ोर डंगर खाये जाने के बाद अपेक्षाकृत शुद्ध हो जाता है। परन्तु यह नारी कलुषित ही फिर उठकर चल देती है। उसे अपने कलुष का भान भी नहीं होता। समाज मानव, कोई सोसाइटी या एन जी ओ कर्मचारी की कृपा दृष्टि हो गई तो यह महिला मैटर्निटी होम पहुँचा दी जायेगी। सुरक्षित प्रसव होगा। माँ शिशु के पास कुछ दिन रहेगी फिर वात्सल्य बंधन से मुक्त वह अस्पताल से गायब हो जायेगी और यही चक्र एक बार फिर "सभ्य समाज" में फिर दुहराया जायेगा।

हमलोग एक रोज़ सपरिवार बाहर जाने वाले थे। एकाएक निगाह पड़ी कि घर के सामने पार्क में नीम के पेड़ के नीचे एक युवती छुपी सिमटी बैठी थी। पहले तो उस पर ज्यादा ध्यान नहीं गया परन्तु कुछ घंटे बाद भी उस युवती को वहीं देख कर जिज्ञासा बढ़ी। वह सुन्दर तो नहीं कही जा सकती। विक्षिप्तता और विपन्नता ने शायद सुन्दरता छुपा रखी थी फिर भी आने जाने वालों को मुड़-मुड़ कर देखने भर को काफी था। कुछ साहसी निर्लज्ज खड़े होकर तमाशा देख रहे थे। पार्क के चारों ओर के लोग जानकर भी अनजान बने थे। मैंने हिम्मत की और अपनी बालकनी से ही उन लोगों से सख्ती से पूंछा... 'तुम लोग कौन हो... क्या तमाशा देख रहे हो... महिला की विवशता का आनन्द ले रहो हो'। सभी लोग सिर झुका कर चले गये। मुझे याद आया कि अपराध बोध मनुष्य को भीरू बना देता है। पर अधिकांश लोग अनाचार को टोकने का साहस नहीं कर पाते। मैंने चौकीदार के हाथ कुछ खाने को और पीने को पानी भेजा। युवती में शायद इतनी समझ थी कि उसने अनजाने पुरूष के हाथ से खाना स्वीकार नहीं किया। मैं नीचे उतरी। उसको सांत्वना देते हुए कहा 'यह खाना मैंने भेजा है। भूख लगी होगी खा लो"। बिना बोले उसने खाना शुरू कर दिया। मैंने पूछा... तुम कहाँ से आई हो? वह खाती रही। फिर पूछा... कहाँ जाओगी? वह खाती रही। मेरी बात शायद उसकी भूख से ज्यादा असरदार नहीं

थी।

२ घंटे बाद मैंने पुनः देखा कि वह चीथड़ों में अपने को समेटे हुए नीम के तने से लगकर सो गई थी। पड़ोस के मकानों से जिज्ञासु निगाहें अभी भी उसे देख रही थीं। क्या किया जाये? मैं स्वयं अंतर्मन में किसी भय की वह से अपने घर में पनाह नहीं दे पा रही थी। सोचा १०० नंबर पर सीनीय पुलिस को सूचित किया जाये। फिर याद आया कि यह तो मेमने को भेड़िये के बाड़े में छोड़ने के समान होगा। महिला थाने का नम्बर मेरी जानकारी में नहीं था। शायद उनसे भी मानवता पूर्ण कार्यवाही की अपेक्षा नहीं थी।

हम लोगों का सामान कार में रखा जा रहा था। हम लोग ३ दिन के लिये बाहर जा रहे थे। इस युवती के कारण जाना निरस्त नहीं किया जा सकता था। पर इसकी चिंता जाने के उत्साह को धूमिल कर रही थी। हम चल पड़े मगर दिल बार-बार उसी पर लगा रहा। लखनऊ के बाहर निकलते एकाएक याद आया मेरी छोटी भाभी महिला आयोग की उपाध्यक्ष थी। उसका नम्बर भी मेरे पास था। मैंने तत्काल उसे सूचित किया। उसके स्वर में प्रशंसा का पुट था। उसने कहा "दीदी आयोग तभी क्रियाशील होता है जब उसके सामने कोई वाद लाया जाये, परन्तु मानवता स्वयं में सबसे बड़ा वाद है। मैं अभी प्रशासनिक अधिकारियों से सम्पर्क करती हूँ"।

मैं आश्वस्त हो गई और ३ दिन के प्रवास के दौरान उस युवती की याद भी नहीं आई। लखनऊ आने पर घर पर गाड़ी रुकते हुए ही पार्क वाली युवती की याद फिर से परेशान करने लगी। पड़ोसियों ने बताया कि शाम होते-होते एक वर्दी वाला आया और महिला को रिक्शे में बैठा कर अपने साथ ले गया। मेरे दिमाग को फिर झटका लगा... रात... खाकी वर्दी... ईश्वर उसकी रक्षा करें!

रात भर बहुत बेचैन रही। सुबह उठकर महिला आयोग की उपाध्यक्ष को फोन लगाया वह हंसती हुई बोली 'दीदी आप उसके लिये अभी भी चिन्तित हैं। वह युवती उसी रात ८ बजे सुधारगृह में भर्ती करा दी गई। दूसरे दिन चिकित्सकीय परीक्षण के बाद उसे उपचार और स्वच्छ कपड़े मिल गये। वहाँ की अधीक्षक का कहना है कि अब आप उसे देखें तो पहचान नही सकती। आप उसकी तरफ से निश्चिंत हो जायें'।

मैंने उसे धन्यवाद दिया और आराम की सांस लेकर फोन रख दिया।

मुझे ऐसा लगा... द्रौपदी एक बार फिर सुरक्षित थी।

◆◆◆

महिला सहायता	पुलिस नं०	एम्बुलेन्स
नं० १०९०	नं० १००	नं० १०२, १०८

बाबा की चौपाल

बूढ़ा बरगद देख रहा युग की अंधी चाल।
बरसों से सूनी लगती है बाबा की चौपाल।
पाँवों की एड़ियाँ फट गई,
बँटवारे में नीम कट गई,
कोई खड़ा है मुँह लटकाए, कोई फुलाए गाल।
बरसों से सूनी लगती है बाबा की चौपाल।
बाँट दी गई माँ की लोरी,
मुन्ने की बँट गई कटोरी,
भेंट चढ़ गया बटवारे की पूजावाला थाल।
बरसों से सूनी लगती है बाबा की चौपाल।
आँगन से रूठा उजियारा,
खामोशी ने पाँव पसारा,
चहल-पहल अब नहीं रही,सूखी सपनों की डाल।
बरसों से सूनी लगती है बाबा की चौपाल।

बलवन्त, विभागाध्यक्ष हिंदी
कमला कालेज आफ मैनेजमेंट एण्ड साईस
450, ओ.टी.सी.रेड, कॉटनपेट, बैंगलौर-53
मो. 91+9844558064
Email: balwant-acharya@gmail.com

श्रृद्धांजलि

स्व० डॉ० उमादत्त शुक्ल

हमारे पिता श्री उमादत्त शुक्ल जी का जन्म ६ अगस्त १६४२ को लखीमपुर खीरी में हुआ था, उस समय हमारे पितामाह स्व० श्री द्वारिका प्रसाद शुक्ला जिला जज के पद पर वहीं तैनात थे। ६ भाइयों व एक बहन में सबसे छोटे होने की वजह से दुलार में उनका नाम "नान भइया" पड़ा, रिश्तेदारों में वे इसी नाम से जाने जाते थे।

सन् १६६४ में पी०एम०टी० की परीक्षा पास करके उन्होने इलाहाबाद मेडिकल कालेज से एम०बी०बी०एस० किया तत्पश्चात् उ०प्र० चिकित्सा सेवा में वर्ष १६७१ में चिकित्साधिकारी के रूप में नियुक्ति हुई एवं कानपुर में प्रथम पदस्थापना हुई। इसी वर्ष हमारी मां श्रीमती ऊषा शुक्ला से उनका विवाह सम्पन्न हुआ।

पिताजी मूलरूप से स्वच्छन्द विचारों वाले थे तथा उसी कार्य को करने में विश्वास रखते थे जो उन्हे उचित लगता था, तथा इस बारे में कदापि नही सोचते थे कि कोई उनके बारे मे क्या विचार रखेगा।

साहित्य मे उनकी विशेष अभिरुचि थी। १६८० के दशक में उनके विचारों ने कविताओं का रूप लेना शुरू कर दिया तथा उस समय वो काव्य गोष्ठियों का सम्पादन व भाग लेने में सक्रिय रहने लगे। पूजा पाठ व धर्म कर्म उन्हे पारिवारिक विरासत में मिली थी, दुर्गा जी में उनकी विशेष आस्था थी, तथा १६८६ मे उन्होने दुर्गा स्तुति का सृजन किया जो कि जिला आजमगढ़, जहां वो पदस्थापित थे, के प्रतिष्ठित चड़ेश्वर मंदिर में जाकर दुर्गा जी को अर्पित किया।

पिताजी की विशेष रूचि नई पीढ़ी को समझाने व जोश भरने में थी चाहे वो पढ़ाई हो या खेलकूद हो, कि किस प्रकार नई पीढ़ी के बच्चों को समझाकर उनके अन्दर ऊर्जा का संचार लाया जा सके जो कि उनके उज्ज्वल भविष्य में सहायक हो। यह कार्य निःस्वार्थ भाव से जीवन के अन्तिम समय तक उन्होने जारी रखा।

अति० मुख्य चिकित्साधिकारी, लखनऊ के पद से वर्ष २००४ मे सेवानिवृत्त होने के बाद उन्होने पठन-पाठन कार्य में ज्यादा समय व्यतीत करना शुरू किया, जिसमें विवेकानन्द साहित्य, रामायण व गीता प्रमुख थे। गीता व रामायण की वर्तमान

में प्रासंगिकता तथा व्याख्या में उनकी विशेष रुचि थी। जिसके व्याख्यान एवं चर्चा हेतु सहज रूप से उनके हम उम्र लोगो का एक समूह बन गया था जिसकी प्रातः बेला रोज एक गोष्ठी हुआ करती थी। वर्ष २०१४ में हो रहे राजनीतिक परिवर्तन में उनकी पैनी नजर थी एवं इस परिवर्तन का व्याख्यान भी वो गीता साहित्य से जोड़कर किया करते थे। दिनांक ३०-०४-२०१४, लखनऊ में आम चुनाव के दिन सबसे महत्वपूर्ण संवैधानिक कार्य मत डालने के उपरान्त परिवार की मौजूदगी में अचानक हृदयाघात होने की वजह से सांसारिक बंधनों से मुक्ति पा गये।

डा० परेश शुक्ल

इं० देवेश शुक्ल

यस्य कीर्ति सजीवति

जन्म
७ मई १६३५

जन्म
७ मई १६३५

परम पूज्य पिता स्व० शिव नारायण जैतली
की स्मृति में सादर समर्पित

आपके प्रेम, ज्ञान व संस्कार की ज्योति सदैव हमारे हृदय में स्मृति सदैव हमारे हृदय में स्मृति के रूप में प्रज्ज्वलित रहेगी"

आपके स्वर्गारोहण पर हम सपरिवार श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं। आपके प्रेम व ज्ञान की ज्योति आज भी हम सबके हृदय में आपकी स्मृति स्वरूप अमर है।

-: श्रद्धावनतः-

विमला जैतली	(पत्नी)	प्रीती सारस्वत	(पुत्री)
संजय जैतली	(पुत्र)	मंगला जैतली	(पुत्र वधु)
संदीप जैतली	(पुत्र)	नीलू जैतली	(पुत्र वधु)
गौरव जैतली	(पौत्र)	प्रज्ञा जैतली	(पौत्री)
दीपक सारस्वत	(दामाद)	पावनी जैतली	(पौत्री)
मनु सारस्वत	(नाती)		
नैना सारस्वत	(नातिन)		

श्रद्धांजली

पं श्री राम मिश्र, 'वकील'

सन् १६५२ में जब सारे जमींदारों के यहाँ 'जमींदारी-उन्मूलन' की वजह से मातम पसरा था, तब फ़तेहपुर ८४ जिला उन्नाव के जमींदार पं श्रीराम मिश्र अपने गाँव में सबको मिठाई बाँट रहे थे। मिठाई के साथ उनका संदेश था "अब मालिक और रिआया की समान्ती व्यवस्था का अंत हो गया। हम सब मात्र किसान रह गए।"

मिश्र जी एक बड़े जमींदारी परिवार से थे। दुर्भाग्य से 'प्लेग' की महामारी में उनका पूरा परिवार समाप्त हो गया। घर की संपत्ति लुटेरे ले गए। नन्हें श्री राम को कोई बताने वाला ही न बचा कि वह इतने सम्पन्न परिवार का है। अनाथों के भांति वह पले। बड़े होने पर मल्लावाँ में प्राथमिक शिक्षा हुई। मेधावी थे सो वजीफे से पढ़ते गए। हाई-स्कूल, इंटर हरदोई से किया। हाई-स्कूल में कुछ हितैषियों द्वारा इन्हें अपनी जमींदारी का पता चला तो धीरे-धीरे उस पर अधिकार किया। पढ़ाई और जमींदारी दोनों को संभालते कानुपर से बी.ए. तथा एल.एल.बी. कर तहसील सफीपुर में वकालत प्रारम्भ की।

इंटर के बाद ही मल्लावाँ के स्वतन्त्रता-सेनानी व प्रसिद्ध वैद्य पं सूबेदार पाठक के बड़ी बेटी से इनका विवाह हो गया। परंतु पत्नी को घर तभी लाये जब यह वकील हो कर पूरी तरह से सेटल हो गये। पत्नी के गृह-आगमन के बाद इन्हें तीन सुंदर पुत्री-रत्न प्राप्त हुये। घर में सुख और वैभव बढ़ रहा था। बच्चियों कि उचित शिक्षा के लिये यह उन्नाव शिफ्ट होना चाहते थे पर हाँ-कमल को खिलने के पहले ही, काल-गज ने उसे समूल उखाड़ दिया, टाइफाइड से असमय ही मिश्रजी की मृत्यु हो गई। परिवार एक बार फिर उसी दशा में पहुँच गया जहाँ प्लेग के बाद मिश्र जी के शैशवकाल में था। पर अबकी ईश्वर कुछ

दयालु था। बच्चियों कि देखभाल के लिये माँ थी और फलती हुई कृषि का सहारा तो था ही। पर बच्चों का असली सहारा पिता नहीं था। परंतु इनकी पत्नी ने बहुत समझदारी से सब कुछ संभाला, बच्चियों को उच्च शिक्षा दिलाई और संभ्रांत परिवार में ब्याह।

इनकी पत्नी श्रीमती प्रमिला मिश्रा ने अपना पैत्रक मकान गाँव के राजकीय बालिका विद्यालय को दान दे दिया और उसी साल अपने प्रयास से उसे इंटर विद्यालय में उच्चीकृत करा दिया। आज इस विद्यालय को 'पं श्री राम मिश्रा राजकीय बालिका इंटर कालेज' फतेहपुर ८४, उन्नाव नाम चल रहा है और इसमें लगभग १००० कन्याएँ शिक्षा पा रहीं हैं।

मिश्र जी अपने गाँव ही नहीं बल्कि जवार के सबसे पहले हाईस्कूल और ग्रेजुएट थे। इनकी एक विशेषता जो इन्हें सबसे अलग करती थी वह था इनका गौर वर्ण। एक वकील जो बाद में हाईकोर्ट के जज भी हुए, ने १९५२ में गाँव के कालेज का (जिसके कि यह संस्थापक मैनेजर थे) मुकदमा किया था। सन् १९९५ में भी इनके व्यक्तित्व को याद करके बोले कि मिश्रा जी जैसा गौर वर्ण उन्हें किसी महिला का भी नहीं देखा। पूरे जीवन भर यह बच्चे और बच्चियों की शिक्षा के लिए प्रयत्न करते रहे। जवार के जो बच्चे अंग्रेज़ी पढ़ने इनके पास आते थे।

श्रीमती नीरज 'रानी' (पुत्री)
एवं डा० डी०एस० शुक्ल (जामाता)
१८/३७८ इन्दिरा नगर, लखनऊ

श्रम कभी व्यर्थ नहीं जाता

डुबकियाँ सिंधु में गोता-खोर लगता है, जा जाकर खाली हाथ लौट कर आता है।
मिलते न सहज में मोती गहरे पानी में, बढ़ता दूना उत्साह इसी हैरानी में।
मुट्ठी उसकी खाली हर बार नहीं होती, कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।
असफलता एक चुनौती है, स्वीकार करो, क्या कमी रह गई देखो और सुधार करो
जब तक न सफल हो, नींद चैन को त्यागो तुम, संघर्षों का मैदान छोड़ कर मत भागो तुम
कुछ किए बिन ही जय-जय-कार नहीं होती कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।

हरिवंश राय 'बच्चन'

Akhil Bhartiya Sri Kanyakubja Pratinidhi Sabha, Lucknow

Form for life membership of Kanyakubja Sabha/ Kanyakunj Vaani magazine

1. Name of Member : ....
2. Age : ....
3. Gotra : ....
4. Father's/Husband's Name : ....
5. Address : ....
....
6. Landline/Mobile No.: ....
7. Email : ....
8. Name of spouse / Father's Name : ....
9 Education : ....
10. Occupation (Post / Designation):

Unmarried Children	Name	Age	Education	Job
a)	....			
b)	....			
c)	....			

11. Any other information :

I want to become life member of **Akhil Bhartiya Sri Kanyakubja Pratinidhi Sabha, Lucknow/Kanyakubja Vaani** and willing to pay Rs. ....in Cash/Cheque No. .... Name of Bank .... favouring *"Akhil Bhartiya Sri Kanyakubja Pratinidhi Sabha, Lucknow" payable at Lucknow.*

12. Name of person introducing : ....

Date :

(Signature)

........✂..✂..✂........

Reciept

Received with thanks Rs. .... in Cash / Cheque No. .... Name of Bank .... from .... who wants to become life member of **Akhil Bhartiya Sri Kanyakubja Pratinidhi Sabha, Lucknow / Kanyakubja Vaani.**

(Signature)

Note :
1. Contribution for life member of **Kanyakubja Sabha** is **Rs. 500/-**
2. Contribution for life membership of **Kanaykubja Vaani** is **Rs. 1100/-**
3. Contribution for one issue of **Kanyakubja Vaani** is **Rs. 25/- + postage charges.**

नर्सरी से इण्टर तक पंजीकरण/प्रवेश सभी कक्षाओं हेतु प्रारम्भ

सा विद्या या विमुक्तये

माध्यमिक शिक्षा परिषद उ०प्र० द्वारा मान्यता प्राप्त

गौरव शाली तीस वर्ष

दयानन्द इण्टर कालेज, इन्दिरा नगर, लखनऊ

विद्यालय वैशिष्ट्य

- नर्सरी से इण्टरमीडिएट तक मानविकी, वैज्ञानिक, वाणिज्य वर्गों में सह शिक्षण की उत्तम व्यवस्था
- शत प्रतिशत परीक्षा, फेल अनुशासन एवं भारतीय संस्कारों का अभिनव केन्द्र।
- सानार्जन हेतु समृद्ध पुस्तकालय की व्यवस्था।
- गृह विज्ञान, भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, जीव विज्ञान, कम्प्यूटर की सुसज्जित व स्तरीय प्रयोगशालाएँ।
- खेल कूद, रेडक्रास, स्काउट-गाइड, राष्ट्रीय सेवा योजना के माध्यम से बालक-बालिकाओं के सर्वांगीण विकास की पूरी व्यवस्था।
- नैतिक मूल्यों के संवर्धन की पूर्ण व्यवस्था के साथ Spoken English की पूर्ण व्यवस्था।
- स्वास्थ्य, आवागमन/यातायात की समुचित व्यवस्था।
- योग्य अनुभवी कर्मठ शिक्षक/शिक्षकाओं द्वारा ही सभी कार्य समपन्न किये जाते है।

रामउजागिर शुक्ल
प्राधानाचार्य

अन्य संस्थाएँ

१. श्रीमती उमा शुक्ला कन्या विद्यालय, जियामऊ लखनऊ
२. अगपती शीतला प्रसाद ट्रेनिग कालेज, (बी.टी.सी.) सुल्तानपुर।
३. रामखेलावन मेमोरियल, डिग्री कालेज, सुल्तानपुर।
४. रामखेलावन मेमोरियल पब्लिक स्कूल, सुल्तानपुर।

सुभाष श्रीवास्तव
अध्यक्ष

प्रवेश फार्म उपलब्ध यथा शीघ्र सम्पर्क करें

अद्भुत

देखें पृष्ठ संख्या **78** पर

प्रकाशक एवं सम्पादक : डा. डी.एस. शुक्ला, 18/378, इन्दिरा नगर, लखनऊ-226016

Printed by : Printco Printers, 22, Jagat Narain Road, Lucknow. Ph.: 0522-4105512